مركز أصول
Osoul Center
www.osoulcenter.com
Rabwah

02

इस्लाम को समझने की कुंजी

Hindi

अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल करीम अश्-शीहा

इस्लाम को समझने की कुंजी

अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल करीम अश्-शीहा

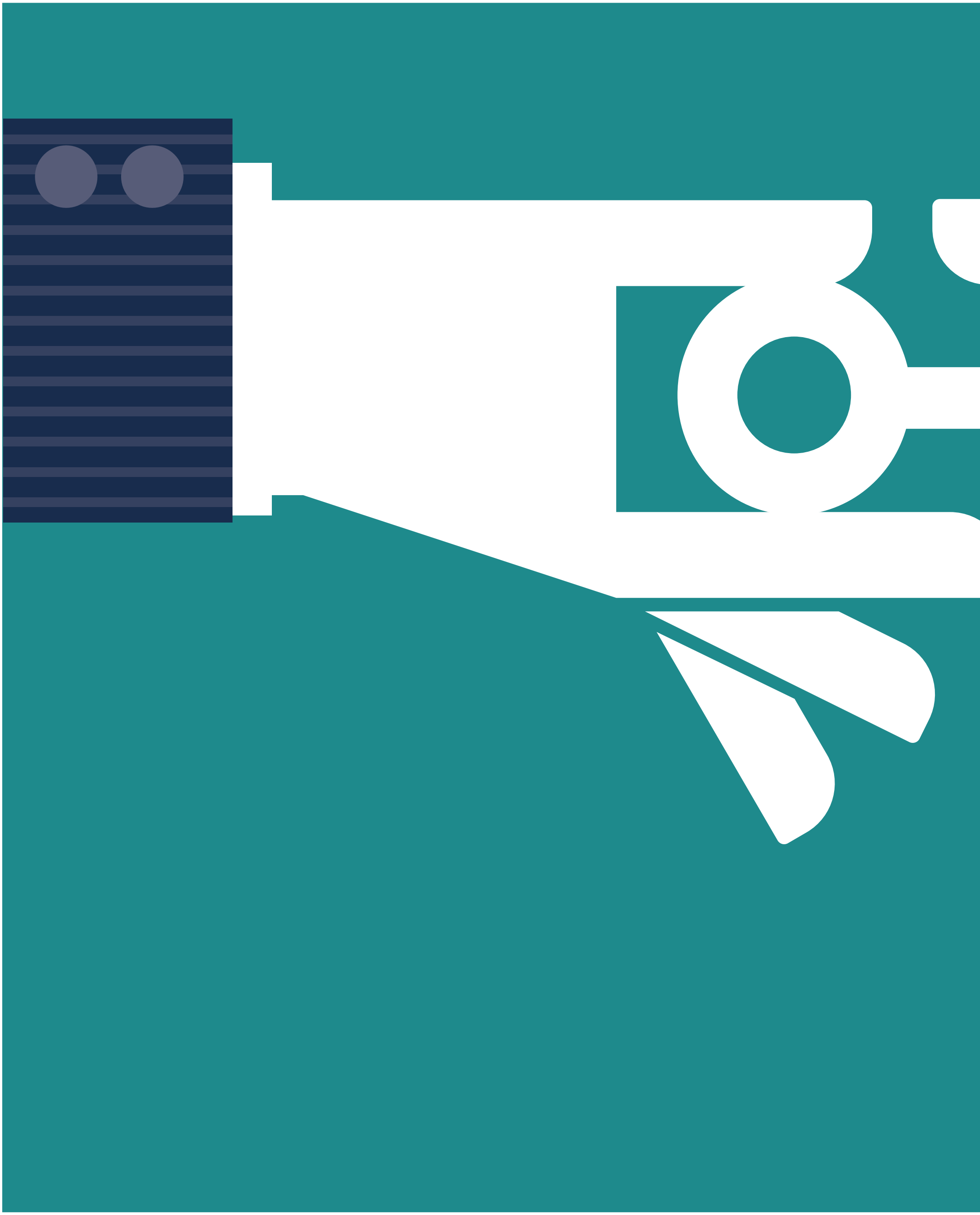

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, असीम कृपालु है।

प्रिय पाठक,

इस्लाम एक पूर्ण एवं आधारभूत ईश्वरीय धर्म तथा जीवन-पद्धति है। इसमें एक सुखमय जीवन-यापन के लिए नैतिक आचार-संहिता का पूर्ण संग्रह है, साथ ही, मरणोपरांत एक शांतिपूर्ण एवं सुखदायी जीवन का मार्गदर्शन भी है। इस्लाम समस्त अपूर्णताओं एवं दोषों से सर्वथा मुक्त है।

किसी मुसलमान में दिखने वाला कोई भी भटका हुआ या असामान्य आचरण, इस्लाम पर किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं डालता — बिल्कुल भी नहीं। ऐसे भटके हुए आचरण का कारण, प्रायः धर्म की अपूर्ण समझ और कुछ मामलों में अपूर्ण ईमान होता है जो व्यक्ति को उचित और सम्मानजनक मार्ग से विचलित कर देता है।

यह सर्वथा अनुचित एवं अविवेकपूर्ण है कि इस्लाम का मूल्यांकन, समस्त मानवजाति के लिए आदर्श, सर्वश्रेष्ठ और अनुकरणीय स्तंभ के रूप में स्थापित पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ को छोड़कर किसी अन्य व्यक्ति के आचरण अथवा दृष्टिकोण के आधार पर किया जाए।

विषय-सूची

प्रस्तावना	9
इस्लाम क्या है?	18
इस्लाम के बारे में लोग क्या कहते हैं?	19
इस्लाम के स्तंभ	20
इस्लाम के पैग़ंबर कौन हैं?	21
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ के बारे में लोग क्या कहते हैं?	22
ईमान के स्तंभ	26
क़ुरआन क्या है?	28
क़ुरआन के बारे में लोग क्या कहते हैं?	28
इस्लाम के मूलभूत लक्ष्य	31
इस्लाम में शिष्टाचार, आचरण और नैतिकता	32
इस्लाम में अधिकार	33
आप इस्लाम के बारे में क्या जानते हैं?	35
इस्लाम और धन-संपत्ति	41
इस्लाम और महिलाएँ	43
यौनाचार के प्रति इस्लामी दृष्टिकोण	45
इस्लाम और गैर-मुस्लिम	46
इस्लाम और अन्य ईश्वरीय धर्म	46
मुसलमान हज़रत ईसा और उनकी माता से प्रेम करते हैं	49
इस्लाम और जिहाद	51
इस्लाम — शांति का धर्म है	54
इस्लाम और समाज	58
इस्लाम और पवित्रता	59
इस्लाम और ज्ञान	61
आधुनिक विज्ञान पर इस्लामी सभ्यता का प्रभाव	63
इस्लामी संस्कृति की विशेषताएँ और गुण	67
क़ुरआन की कुछ आयतों में निहित वैज्ञानिक तथ्य	68
क़ुरआन और सृष्टि की उत्पत्ति	69
ब्रह्मांड के विस्तार पर क़ुरआन	72
आकाशीय पिंडों पर क़ुरआन	73
वायु दाब पर क़ुरआन	77
बाह्य अंतरिक्ष पर क़ुरआन	77
परमाणु पर क़ुरआन	78
मानव भ्रूण के विकास-चरणों पर क़ुरआन	79
महासागरों के विषय में क़ुरआन में क्या उल्लेख है	87
दो समुद्रों के बीच के अवरोध पर क़ुरआन	87
समुद्रों के भीतर के अंधकार पर क़ुरआन	87
आंतरिक तरंगों पर क़ुरआन	88
बादलों और वर्षा के निर्माण पर क़ुरआन	90
पशु-पक्षियों पर क़ुरआन	93
पर्वतों पर क़ुरआन	95
जल और जीवन	96
इस्लाम से शत्रुता रखने वाले कौन हैं?	97
इस्लाम की विशिष्ट विशेषताएँ और श्रेष्ठताएँ	101
उपसंहार	104
मुसलमान कैसे बना जाता है?	105

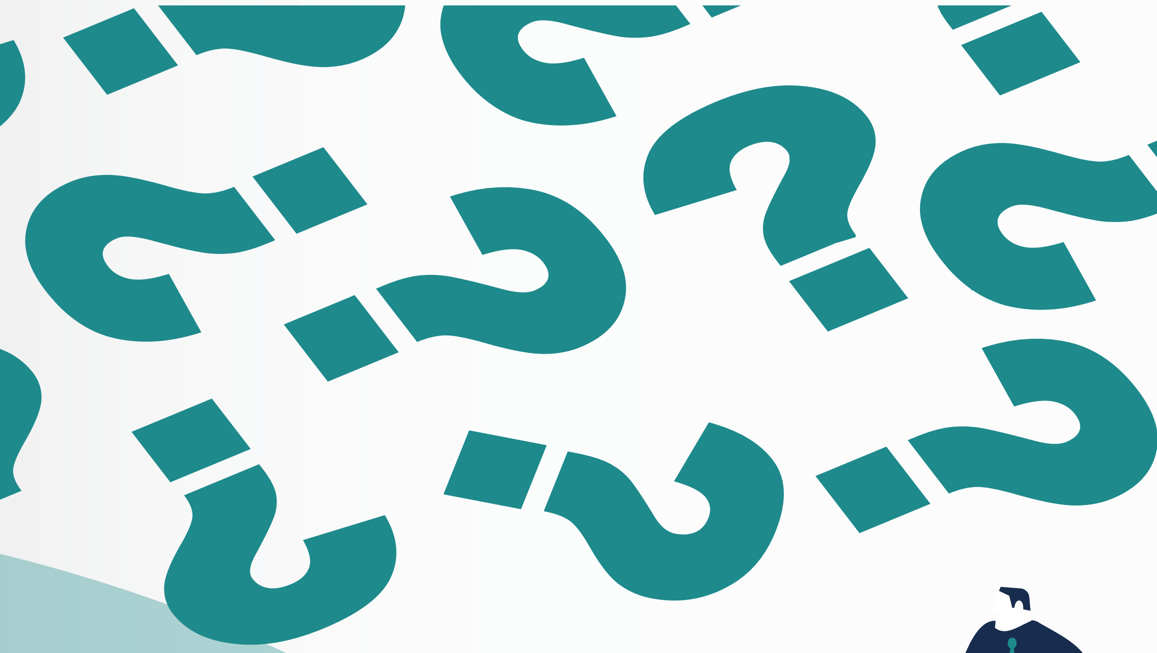

Osoul Center

इस पुस्तक की संकल्पना, तैयारी और डिज़ाइन 'ओसूल सेंटर' (Osoul Centre) द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में उपयोग किए गए सभी चित्र 'ओसूल सेंटर' की संपत्ति हैं। यह केंद्र एतद्द्वारा सभी सुन्नी मुसलमानों को किसी भी विधि और प्रारूप में इस पुस्तक को पुनः मुद्रित (छापने) और प्रकाशित करने की अनुमति देता है, बशर्ते कि: 1) सभी संस्करणों में 'ओसूल सेंटर' का स्पष्ट रूप से आभार (श्रेय) व्यक्त किया गया हो; और 2) 'ओसूल सेंटर' से परामर्श किए बिना मूल पाठ में कोई भी परिवर्तन या संशोधन न किया जाए। इस पुस्तक के पुनः मुद्रण की स्थिति में, केंद्र उच्च गुणवत्ता बनाए रखने की दृढ़ता से अनुशंसा करता है।

+966 11 445 4900

+966 11 497 0126

P.O.BOX 29465 Riyadh 11457

osoul@rabwah.sa

www.osoulcenter.com

सम्पूर्ण प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो समस्त संसारों का पालनहार है, आकाश, धरती तथा उनमें बसे समस्त प्राणियों का सृजनकर्ता है। अल्लाह के पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ पर अपनी शांति और कृपा बनाए रखे जो अल्लाह के अंतिम दूत हैं और जिनका संदेश समस्त मानवजाति के लिए अनुग्रह एवं करुणा बनकर आया। अल्लाह उन समस्त पैगंबरों और दूतों पर भी अपनी कृपा बनाए रखे, जिन्हें उसने मानवजाति को अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाने के लिए भेजा।

हम, ओसूल इंटरनेशनल सेंटर फॉर इस्लामिक एडवोकेसी में, जब भी कोई नई प्रकाशन सामग्री तैयार करते हैं तो हमें अपने पाठकों के साथ जुड़ने का एक बेहतरीन अवसर मिलता है। हमारी सभी प्रकाशन सामग्रियों का एक समान और मूल उद्देश्य है — इस्लाम को मानवजाति के सामने, उसके वास्तविक और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जाए। हम चाहते हैं कि लोग इस्लाम के उत्कृष्ट पहलुओं और उसकी गहन शिक्षाओं से भलीभाँति परिचित हों। हम यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि इस्लाम ही वह एकमात्र धर्म है जो मानवता के समक्ष आने वाली सभी समस्याओं का व्यावहारिक और प्रभावशाली समाधान प्रस्तुत करता है। यह उन सभी प्रश्नों का स्पष्ट और ठोस उत्तर देता है जो युग-युगों से मनुष्य को उद्वेलित करते आए हैं — जैसे कि: हमारा अस्तित्व कैसे हुआ और हम यहाँ क्यों हैं? और इस जीवन के बाद हमारी मंजिल क्या है? इससे भी बढ़कर, इस्लाम ही वह एकमात्र धर्म है जो अपने अनुयायियों से यह अपेक्षा करता है कि वे अल्लाह द्वारा भेजे गए सभी पैगंबरों विशेषतः मूसा और ईसा (उन दोनों पर शांति हो) के प्रति सम्मान एवं प्रेम भाव प्रकट करें।

हमारी प्रकाशन सामग्रियाँ इस्लाम पर लगाए जाने वाले आरोपों का खंडन भी करती हैं और इस्लामी शिक्षाओं के संबंध में लोगों के मन में व्याप्त भ्रांतियों को भी दूर करती हैं।

हम अपने सभी प्रकाशनों में इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि अपने तर्कों के समर्थन में ठोस और तर्कसंगत प्रमाण प्रस्तुत किए जाएँ ताकि हमारे पाठकों को वह संतुष्टि और आश्वासन मिल सके जिसकी उन्हें आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य इस महान ईश्वरीय धर्म को लोगों तक पहुँचाना है। यह धर्म, अल्लाह की कृपा से, हमारे समय में, सबसे तेज़ी से फैलने वाला धर्म है, जैसा कि वर्ष 2015 में प्रकाशित, प्यू रिसर्च सेंटर द्वारा किए गए एक अध्ययन में पुष्टि की गई है।

यह पुस्तक"इस्लाम को समझने की कुंजी" शुरू में ही यह स्पष्ट कर देती है कि क़ुरआन कोई विज्ञान की पुस्तक नहीं है। तथापि, इस्लाम विज्ञान और वैज्ञानिकों का सम्मान करता है और इस्लामी समाज में उन्हें उच्च स्थान प्रदान करता है। इस्लाम अपने अनुयायियों को यह शिक्षा देता है कि वे वैज्ञानिकों को वह सम्मान दें जिसके वे वास्तव में अधिकारी हैं। लेखक अपने पाठकों को यह बताते हैं कि उनका कोई इरादा क़ुरआन को आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से जोड़ने का नहीं है। वे केवल उन क़ुरआनी आयतों का उल्लेख करते हैं जो उन खोजों की ओर इंगित करती हैं, जिन्हें विज्ञान ने हमारे वर्तमान युग में खोजा है।

यह पुस्तक उल्लेख करती है कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो जीवन का संपूर्ण पथ निर्धारित करता है। इसमें आस्था के ऐसे सिद्धांत समाहित हैं जो वास्तविक नैतिकता की नींव रखते हैं और मानव आत्मा के सर्वोत्तम गुणों को निखारते हैं। इसके साथ ही इसमें वाचिक और व्यावहारिक उपासना का एक संपूर्ण विधि भी शामिल है। ये सभी तत्व मिलकर व्यक्तिगत स्तर पर श्रेष्ठता की खोज को सुनिश्चित करते हैं और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करते हैं। पुस्तक में इसके स्पष्ट और जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार, यह पुस्तक इस्लाम की सही समझ के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है।

बासिल इब्न अब्दुल्लाह अल-फ़ौज़ान
कार्यकारी निदेशक

(1) "वैश्विक मुस्लिम आबादी का भविष्य", प्यू रिसर्च सेंटर, 27 जनवरी 2011, उपलब्ध है- http://goo.gl/uk8y1i

प्रस्तावना

01

प्रस्तावना

भले ही पश्चिमी सांख्यिकीविद्, पश्चिमी देशों में मुस्लिम जनसंख्या को परंपरागत रूप से कम आँकते रहे हों — इस्लाम के नाम से जाना जाने वाला यह जीवन-दर्शन, आज विश्व का सबसे तेज़ी से फैलने वाला धर्म है — वास्तव में, धर्म का पालन करने वाले इस बढ़ते मुसलिम समुदाय और इसमें दिलचस्पी रखने वाले लोगों की आवश्यकताएँ पूरी करने वाली उपयोगी इस्लामी जानकारी की सहज उपलब्धता के साथ तालमेल बिठाना चुनौतीपूर्ण रहा है।

विडंबना यह है कि 9/11 के बाद, जिस उन्माद ने पश्चिमी समाजों को वैश्विक इस्लाम के प्रति अक्सर अतार्किक घृणा में जकड़ लिया था, उन्हीं परिस्थितियों ने कुछ विचारशील एवं जिज्ञासु गैर-मुस्लिम पश्चिमी लोगों की रुचि को भी जगाया। मास मीडिया द्वारा प्रस्तुत हिंसक इस्लामी "चरमपंथियों" और "अमेरिका-विरोधियों" की छवि, उनके अपने उन मुसलमानों के साथ व्यक्तिगत अनुभवों से मेल नहीं खाती थी, जिनसे वे अपने मोहल्लों, कक्षाओं और कार्यस्थलों पर मिलते हैं। इसीलिए वे इस्लाम के बारे में सच्चाई जानने के लिए स्वयं आगे बढ़े और उन सवालों के जवाब ढूँढने लगे जिन्हें मीडिया या तो नज़रअंदाज़ कर दिया करता है या जिनके बारे में भ्रामक जानकारी परोसी जाती है। इसका परिणाम एक ऐसे सूचना-शून्य के रूप में आया, जो एक गंभीर और सार्थक प्रतिक्रिया की माँग करता है।

अब्दुर्रहमान अश्-शीहा ने अपनी अग्रणी और व्यापक कृति "इस्लाम को समझने की कुंजी" में न केवल इस आवश्यकता को पूरा किया है, बल्कि एक ऐसा अनूठा प्रारूप प्रस्तुत किया है जो "उपयोगकर्ता अनुकूल" होने के साथ ही, संपूर्ण और विद्वत्तापूर्ण भी है।

बीसवीं शताब्दी के मध्य, मुसलमानों द्वारा उपनिवेशवाद की बेड़ियाँ तोड़ने के साथ ही इस्लामी पुनरुत्थान का उदय हुआ, तत्पश्चात, उसे एक ऐसी विद्वत्ता से बल मिला जो प्राप्त इन नई आज़ादियों को अल्लाह की किताब और उसके महान पैगंबर की सुन्नत की दिव्य सीमाओं के भीतर सुदृढ़ करने के प्रति प्रयासरत थी। वास्तव में, इन आरंभिक मुस्लिम विद्वानों की प्रतिभा ने उस ढाँचे को पुनर्निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो आज के पुनर्जागृत इस्लामी आंदोलनों को आधार प्रदान करता है। किंतु इन विद्वत्तापूर्ण इस्लामी ग्रंथों में से अधिकांश — सभी नहीं — ऐसी भाषा और शैली में लिखे गए हैं जो पहले से मुस्लिम पाठकों को ही आकर्षित करती है।

अश्-शीहा की यह कृति — इस्लाम को समझने की कुंजी — एक सरल और सुगम भाषा में लिखागया ये ग्रंथ ज्ञान का अमूल्य भंडार है। इससे ऐसे गैर-मुस्लिमों को इस्लाम की स्पष्ट एवं संक्षिप्त समझ प्राप्त होगी जो ये जानना–समझना चाहते हैं कि इस्लाम वास्तव में क्या है और क्या नहीं है। ऐसे लोगों के लिए यह पुस्तक एक प्रकाशस्तंभ की भाँति है। साथ ही, यह धर्मनिष्ठ मुस्लिमों के लिए भी अत्यंत उपयोगी है क्योंकि इसमें आस्था, इबादत और सामाजिक विषयों पर परंपरागत स्रोतों से प्राप्त सारगर्भित विवरण अत्यंत सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। निस्संदेह, इस्लाम

के जीवन-उन्मुख संदेशों पर आधारित यह महत्त्वपूर्ण जानकारी और इसे प्रस्तुत करने का यह तरीका, एक नई और पूर्णतः आमंत्रणकारी पहल है — जो धर्म के मूल और अटल सिद्धांतों को अक्षुण्ण रखते हुए इस्लाम को सहजता से उपस्थापित करती है।

इस पुस्तक में विद्वान की सूक्ष्म और ज्ञानपूर्ण दृष्टि के साथ-साथ सामाजिक रूप से सजग एक शोधकर्ता की संवेदनशीलता का अद्भुत संगम भी है। परिणामस्वरूप, यह पुस्तक एक ऐसे ज्ञानवर्धक और प्रभावशाली आख्यान के रूप में सामने आती है जो इस्लामी इबादत की मूल बातों के साथ-साथ खगोल–भौतिकी की इस्लामी व्याख्या को भी समान स्पष्टता और संतुलन के साथ प्रस्तुत करती है। परंतु शायद सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह पुस्तक इन सभी विषयों को क़ुरआन और पैगंबर की परंपराओं के उचित संदर्भों के माध्यम से एक सूत्र में पिरोती भी है। इसमें समाहित विषयों की व्यापकता और गहराई वास्तव में अतुलनीय है और यह लेखक की दूरदर्शिता एवं विद्वत्ता का जीवंत प्रमाण भी है।

अपनी विषयवस्तु और शैली के आधार पर यह पुस्तक समकालीन जीवन में धर्म पर वैश्विक संवाद में एक विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण योगदान करती है। अश्-शीहा द्वारा रचित यह पुस्तक अपनी विधा की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचनाओं में अपना स्थान सुनिश्चित करती है — यह उक्त परिचर्चा की रूपरेखा को नए सिरे से परिभाषित करती है और यूरोपीय विज्ञान एवं संस्कृति में इस्लाम की आधारभूत भूमिका को उजागर करने के बेहतर तरीके स्थापित करती है। यह एक ऐसी मूलभूत एवं युगांतकारी रचना है जो आशा है कि ऐसे मुस्लिम विद्वानों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करेगी जो इस्लाम के संदेशों को फैलाने की चिंता और समर्पण साझा करते हैं।

हम इस पुस्तक की सार्वभौमिक स्वीकृति के लिए दुआ करते हैं और हम अल्लाह — जो सर्वशक्तिमान है जो एक है जो सर्वोच्च है — से दुआ करते हैं कि वह मुसलमानों को और अधिक समृद्ध करे तथा गैर-मुस्लिमों को अपने वास्तविक रचयिता की पहचान और मार्गदर्शन तथा जीवन के परम उद्देश्य से अवगत कराए।

• अल्लाह कितना पवित्र और महान है।

इस्लाम को समझने की कुंजी

02

- अल्लाह

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿(ऐ मुसलमानो!) तुम कह दो: हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और जो इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब तथा उसकी संतान की ओर उतारा गया और जो मूसा एवं ईसा को दिया गया तथा जो समस्त नबियों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया। हम उनमें से किसी एक के बीच अंतर नहीं करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं। ﴾ (अल्-ब-क़-रा:136)

- उपासकों का एक ऐसा विशाल समूह जो एक अद्वितीय क्रम में परम-महान ईश्वर के समक्ष साष्टांग प्रणाम कर रहा है; यह दृश्य स्पष्ट रूप से उनकी विनम्रता और ईश्वर के प्रति उनके पूर्ण समर्पण को प्रदर्शित करता है।

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है और वही सम्पूर्ण सृष्टि का पालनहार[1] है और वह अपने नबी ﷺ पर अपनी कृपा-दृष्टि बनाए रखे तथा उन्हें और उनके परिवार को समस्त बुराइयों से सुरक्षित रखे।

यह पुस्तिक संक्षेप में अंतिम ईश्वरीय धर्म [2] की व्याख्या करती है, और यह ईश्वरीय धर्म सभी पूर्ववर्ती धर्मों को रद्द करता है। इस प्रकाशन के समय, इस्लाम विश्वभर में डेढ़ अरब से अधिक अनुयायियों का धर्म है। लोग बड़ी संख्या में इसे अपना रहे हैं, इस तथ्य के बावजूद कि इस्लाम का प्रचार करने वालों को पर्याप्त आर्थिक और नैतिक समर्थन नहीं मिलता है। इसके अलावा, अधिकांश अन्य विचारधाराओं की तुलना में यह बहुत कम सुनने को मिलता है कि कोई मुस्लिम इस्लाम को स्वीकार करने के बाद उसे छोड़ दे।

इस्लाम में ज्ञान और विद्वत्ता को अत्यधिक महत्व और सम्मान दिया जाता है। क़ुरआन विज्ञान की कोई पुस्तक नहीं है, फिर भी क़ुरआन वह मूल विधान अवश्य है जो एक मुस्लिम के जीवन के विवरणों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। इसमें हमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है।

- "क़ुरआन" शब्द एक क्रिया संज्ञा है, जिसका अर्थ "क़िरा'अह" के समान है क्योंकि दोनों ही क्रिया "क़रा'अ" से आते हैं, जिसका अर्थ है – "पढ़ना"।

इस पुस्तक में मेरा उद्देश्य मनुष्य द्वारा खोजी गई हर आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धि को क़ुरआन की किसी आयत से जोड़ना नहीं है।

केवल यह स्पष्ट करने के लिए, मैंने इस पुस्तक में कुछ वैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत किए हैं कि क़ुरआन में ऐसी आयतें हैं जिनमें सटीक वैज्ञानिक सूचनाएँ निहित हैं जिनकी खोज आधुनिक विज्ञान ने बहुत ही हाल ही में की है।

मैं सभी को आमंत्रित करता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ें और ईश्वर की निशानियों पर विचार करें तथा ईश्वर के सच्चे धर्म को समझने का प्रयास करें।

1. क़ुरआन में प्रयुक्त वास्तविक शब्द "रब्ब" है। हिंदी भाषा में "रब्ब" के लिए कोई सटीक समतुल्य शब्द नहीं है। इसका अर्थ है — सृष्टिकर्ता, निर्माता, जीविका प्रदान करने वाला वह जिस पर सभी प्राणी अपनी जीविका के लिए निर्भर हैं और वह जो जीवन देता है और मृत्यु का कारण बनता है।

2. जिस शब्द का अनुवाद "धर्म" (Religion) के रूप में किया गया है वह अरबी में "दीन" है। अरबी में यह शब्द सामान्यतः एक ऐसी जीवन-पद्धति को इंगित करता है जिसमें निजी और सार्वजनिक — दोनों आयाम समाहित हैं। यह एक व्यापक शब्द है जिसमें शामिल हैं: पूजा कार्य, राजनीतिक आचरण तथा आचार-संहिता का विस्तृत ढाँचा — जिसमें स्वच्छता और शिष्टाचार से संबंधित विषय भी सम्मिलित हैं।

01 इस्लाम क्या है?

इस्लाम का अर्थ है — अल्लाह की एकता (तौहीद) को स्वीकार करते हुए उसके सामने पूर्णतः समर्पित हो जाना, उसकी आज्ञाकारिता में विनम्रतापूर्वक झुके रहना और उसके साथ किसी को साझीदार, प्रतिद्वंद्वी या सिफ़ारिशी न ठहराना। यह सहिष्णुता और सरलता का धर्म है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, तुम्हारे साथ कठिनाई नहीं चाहता।" (अल्-ब-क़-रा:185)

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसके द्वारा मनुष्य को आत्मिक संतोष प्राप्त होता है और मन को शांति मिलती है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"वे जो ईमान लाए और उनके दिलों को अल्लाह की याद से संतुष्टि मिलती है। सुन लो! अल्लाह की याद ही से दिलों को संतुष्टि मिलती है।" (अर्-रअ़्द:28)

इस्लाम दया और करुणा का धर्म है। अल्लाह के रसूल ﷺ [I] ने फ़रमाया: "रहमान (अल्लाह) उन्हीं पर दया फ़रमाता है जो दूसरों पर दया करते हैं। ज़मीन पर रहने वालों पर दया करो, आसमान वाला तुम पर दया करेगा।" (तिर्मिज़ी)[II]

इस्लाम प्रेम और दूसरों की भलाई चाहने का धर्म है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह को सबसे अधिक प्रिय वह इंसान है जो दूसरों के लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद हो।" (तबरानी)

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसमें कोई उलझन या अस्पष्टता नहीं है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और (ऐ नबी!) हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजे, वे सभी पुरुष थे जिनकी ओर हम वह्य (प्रकाशना) करते थे। अतः यदि तुम (स्वयं) नहीं जानते हो तो ज्ञान वालों से पूछ लो।" (अन्-नह़्ल:43)

I. ﷺ यह चिह्न का अर्थ है: अल्लाह उनका ज़िक्र ऊँचा करे और उन्हें तथा उनके घराने को हर नीच चीज़ से सुरक्षित रखे।

II. पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ के अहादीस (उनके कथनों) के बाद जो सभी नाम उल्लिखित हैं, वे ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने उनके सहाबा (साथियों) से उनके कथनों को एकत्रित किया और उन्हें पुस्तकों के रूप में संकलित किया।

इस्लाम सबके लिए है क्योंकि यह किसी विशेष नस्ल या समुदाय के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवजाति को संबोधित एक सार्वभौमिक निमंत्रण है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"तथा हमने आपको समस्त मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला ही बनाकर भेजा है। किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।" (सबा:28)

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो पिछले सभी पाप मिटा देता है। नबी ﷺ ने फ़रमाया:
"इस्लाम उन सभी (पाप) को मिटा देता है जो उससे पहले किए गए हों।" (मुस्लिम)

इस्लाम एक ऐसा पूर्ण तथा आदर्श धर्म है जो पिछली सभी शरीअतों (धर्मों) को रद्द (मन्सूख़) करता है और यह अंतिम धर्म है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म परिपूर्ण कर दिया तथा तुमपर अपनी अनुग्रह पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म के तौर पर पसंद कर लिया।" (अल्-माइदा:3)

इस्लाम में कई प्रकार की इबादतें शामिल हैं, जिनमें से कुछ ज़बानी (मौखिक), कुछ जिस्मानी (शारीरिक) और कुछ रूहानी (आत्मिक) हैं। ये इबादतें इंसान के अख़लाक़ (चरित्र) को निखारने, उसकी आत्मा को पवित्र करने, उसके व्यक्तित्व को सँवारने तथा मुस्लिम समाज की एकता और अखंडता को बनाए रखने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इस्लाम के बारे में वे क्या कहते हैं?

W. मॉन्टगोमरी वॉट ने अपनी पुस्तक, "इस्लाम क्या है?" में लिखा है:

"इस्लाम का अध्ययन करने वाले यूरोपीय या अमेरिकी विद्यार्थी के सामने पूर्वाग्रह केवल एक ही कठिनाई नहीं है। जैसे ही वह इस्लाम को 'क़ुरआन का धर्म' या 'आज के चार सौ मिलियन मुसलमानों के धर्म' के रूप में वर्णित करने लगता है वह एक ऐसी श्रेणी का प्रयोग करता है जो 'धर्म' की परंपरागत श्रेणी में फिट नहीं बैठती। तो एक पाश्चात्य व्यक्ति के लिए 'धर्म' का अर्थ आखिर क्या है? सामान्य व्यक्ति के लिए, सबसे अच्छी स्थिति में भी, इसका अर्थ है — रविवार को एक-दो घंटे उन अनुष्ठानों में बिताना जो उसे दैनिक जीवन की समस्याओं से निपटने में कुछ सहारा और शक्ति देते हैं और जो उसे दूसरों के प्रति मित्रवत रहने तथा यौन शुचिता के मानकों को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसका व्यापार, अर्थशास्त्र, राजनीति या औद्योगिक संबंधों से बहुत कम या कोई सरोकार नहीं होता। सबसे बुरी स्थिति में यह अधिक संपन्न लोगों में आत्मसंतोष की भावना को बढ़ावा देता है और घमंड का प्रज्वालक बन जाता है।

यूरोपीय व्यक्ति तो धर्म को एक ऐसे नशे के रूप में भी देख सकता है जिसे आम जनता के शोषकों ने उन्हें दासता में जकड़े रखने के लिए विकसित किया हो। परंतु आयत (3:19) — 'अल्लाह के नज़दीक सच्चा दीन इस्लाम ही है!' — के जो निहितार्थ एक मुसलमान के लिए हैं, वे इससे कितने भिन्न हैं!

जिस शब्द का अनुवाद 'धर्म' के रूप में किया गया है वह है दीन — जो अरबी में सामान्यतः जीवन के संपूर्ण तरीके को इंगित करता है। यह व्यक्तियों का कोई निजी मामला नहीं है जो केवल उनके जीवन की परिधि को छुए, बल्कि यह एक साथ निजी भी है और सार्वजनिक भी — यह कुछ ऐसा है जो समाज के समूचे ताने-बाने में उस तरह रच-बस जाता है, जिसका लोगों को भली-भाँति बोध होता है। इसमें एक साथ धार्मिक सिद्धांत, उपासना, राजनीतिक विचारधारा और आचरण की एक विस्तृत संहिता का समावेश है — यहाँ तक कि उन विषयों का भी, जिन्हें एक यूरोपीय व्यक्ति स्वच्छता या शिष्टाचार की श्रेणी में रखता है।"[1]

(1) विलियम मॉन्टगोमरी वॉट — स्कॉटिश प्राच्यविद् (ओरिएंटलिस्ट) और एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में अरबी और इस्लामिक अध्ययन के एमेरिटस प्रोफ़ेसर, वॉट पश्चिम में इस्लाम के सबसे प्रमुख गैर-मुस्लिम व्याख्याताओं में से एक थे।

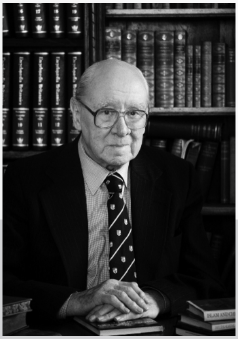

इस्लाम के स्तंभ

शारीरिक और मौखिक रूप से की जाने वाली इबादतों को इस्लाम के स्तंभ कहा जाता है। इनमें से सबसे अनिवार्य स्तंभ "इस्लाम के पाँच स्तंभ" के नाम से जाने जाते हैं। वे इस प्रकार हैं:

01 ईमान की गवाही (शहादतैन):

यह इस बात की गवाही है कि "अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं।" यह गवाही वह कुंजी है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति मुसलमान बनता है। गवाही के पहले भाग — "अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं" — का अर्थ यह भी है कि:

01 अल्लाह ही हर उस चीज़ का सृष्टिकर्ता है जो अस्तित्व में है।

02 अल्लाह ही हर उस चीज़ का बादशाह है जो अस्तित्व में है और वही सभी मामलों का संचालन करने वाला है।

03 अल्लाह ही वह एकमात्र सत्ता है जो अकेले इबादत का हक़दार है।

- अल्लाह
- मुहम्मद

- अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके पैगंबर हैं।

गवाही के दूसरे भाग — "मुहम्मद उसके बंदे और रसूल हैं" — के अर्थ में निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

01 रसूल ﷺ ने जो आदेश दिए हों, उनका पालन करना।

02 उन्होंने जो कुछ भी फ़रमाया हो, उन पर पूर्ण विश्वास रखना।

03 जिन चीज़ों से उन्होंने रोका और मना किया हो, उनसे रुक जाना।

04 और यह कि अल्लाह की इबादत केवल उसी तरीक़े से की जाए जो रसूल ﷺ ने मुक़र्रर फ़रमाया हो।

इस्लाम के पैगंबर कौन हैं?

वे मुहम्मद हैं जो अब्दुल्लाह के पुत्र, अब्दुल-मुत्तलिब के पोते और हाशिम के परपोते हैं। उनकी कुन्यत (उपनाम) अबुल-क़ासिम है। वे अरब के क़ुरैश क़बीले से थे, जिनका वंश 'अदनान तक जाता है जो अल्लाह के पैगंबर इस्माईल (इश्माएल) की संतानों में से एक थे। इस्माईल, इब्राहीम (अब्राहम) के पुत्र थे जो अल्लाह के रसूल थे — अल्लाह इन दोनों की तारीफ़ फ़रमाए।

उनका जन्म सन् 571 ईस्वी में सम्मानित शहर मक्का में हुआ। मक्का अरब प्रायद्वीप का धार्मिक केंद्र था क्योंकि वहाँ पवित्र काबा स्थित था जिसे इब्राहीम और उनके पुत्र इस्माईल ने बनाया था।

वहय (ईश्वरीय प्रकाशना) मिलने से पहले भी, वे अपने लोगों में "अल-अमीन" यानी "विश्वसनीय" के नाम से जाने जाते थे। जब लोग सफ़र पर जाने का इरादा करते तो अपनी अमानतें उन्हीं के पास छोड़ जाते थे। वे "अल-सादिक़" यानी "सत्यवादी" के नाम से भी मशहूर थे। उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला और न ही कभी किसी के साथ विश्वासघात किया। वे सदा दूसरों की भलाई चाहते थे।

उन्हें चालीस वर्ष की आयु में पहली वहय मिली और उन्होंने घबराहट के साथ अपनी पत्नी ख़दीजा — रज़ियल्लाहु अन्हा — को बताया:

"मुझे सच में अपनी जान का डर लग रहा है।"

ख़दीजा ने जवाब दिया: "नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्लाह आपको कभी रुसवा नहीं करेगा। बेशक आप रिश्तेदारों से मेल-जोल रखते हैं, दूसरों के बोझ उठाते हैं, ज़रूरतमंदों को माल देते हैं, मेहमानों की इज़्ज़त करते हैं और उन्हें खाना खिलाते हैं और कठिनाइयों के समय लोगों का सहारा बनते हैं।" (बुख़ारी)

इसके बाद वे तेरह वर्षों तक मक्का में रहे और लोगों को अल्लाह की एकता (तौहीद) पर ईमान लाने का नेवता देते रहे। फिर उन्होंने मदीना शहर की ओर हिजरत (प्रवास) की और वहाँ के निवासियों को इस्लाम का नेवता दिया और उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। वहाँ अल्लाह ने उन पर दीन के बाक़ी अहकाम (विधान) नाज़िल फ़रमाए। वे हिजरत के आठ साल बाद मक्का वापस लौटे और उसे जीत लिया। तिरेसठ वर्ष की आयु में उनका देहांत हुआ — उस समय तक अल्लाह ने उन पर पूरा क़ुरआन नाज़िल कर दिया था, दीन के समस्त विधान मुकम्मल और पूरे हो चुके थे और अरब प्रायद्वीप का बड़ा हिस्सा इस्लाम क़बूल कर चुका था।

वे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ के बारे में क्या कहते हैं?

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने अपनी कृति 'द जेनुइन इस्लाम' (सच्चा इस्लाम) में कहा है:
"मैंने हमेशा मुहम्मद के धर्म को उच्च सम्मान में रखा है क्योंकि इसमें अद्भुत जीवंतता है। यह एकमात्र धर्म है जो अस्तित्व के बदलते हुए चरणों को आत्मसात करने की क्षमता रखता है — जिससे यह हर युग को अपील करता है। मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विश्वास के बारे में भविष्यवाणी की है कि यह कल उतना ही स्वीकार्य होगा जितना आज यूरोप में स्वीकार्य होने लगा है। मध्यकालीन धार्मिक नेताओं ने — चाहे वह अज्ञानता से हो या पूर्वाग्रह से — इस्लाम को सबसे काले रंगों में चित्रित किया। वे दरअसल, मुहम्मद और उनके धर्म — दोनों से घृणा करने के लिए प्रशिक्षित थे। उनकी दृष्टि में मुहम्मद एक दज्जाल (ईसा-विरोधी) थे। मैंने इस अद्भुत व्यक्तित्व का अध्ययन किया है और मेरी राय में, वे दज्जाल होने से कहीं दूर हैं — उन्हें मानवता का उद्धारकर्ता कहा जाना चाहिए।"(1)।

(1) जॉर्ज बर्नार्ड शॉ — एक आयरिश नाटककार और लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स के सह-संस्थापक थे। वह एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्हें ऑस्कर पुरस्कार और साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार — दोनों से सम्मानित किया गया है। 'द जेन्युइन इस्लाम' (सच्चा इस्लाम), खंड. 1, अंक. 81936।

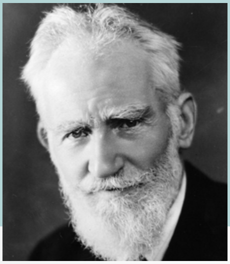

एनी बेसेंट ने द लाइफ़ एंड टीचिंग्स ऑफ़ मुहम्मद में कहा:
"यह किसी के लिए भी असंभव है कि वह अरब के महान पैगंबर के जीवन और चरित्र का अध्ययन करे — यह जाने कि उन्होंने कैसे सिखाया और कैसे जीवन बिताया — और फिर उस शक्तिशाली पैगंबर जो परमेश्वर के महान संदेशवाहकों में से एक हैं, उनके प्रति श्रद्धा के अलावा कुछ और महसूस करे और यद्यपि मैं तुम्हारे सामने जो कुछ रखूँगी, उसमें बहुत–सी बातें ऐसी होंगी जिनसे अनेक लोग परिचित होंगे, फिर भी स्वयं मैं हर बार जब उन्हें दोबारा पढ़ती हूँ, प्रशंसा का एक नया मार्ग, उस महान अरबी शिक्षक के प्रति श्रद्धा की एक नई भावना महसूस करती हूँ।"

02 नमाज़ (सलाह):

नमाज़ एक माध्यम है जिसके ज़रिए अल्लाह का बंदा अपने रब के साथ एक रिश्ता बनाए रखता है। इसमें व्यक्ति अपने रब से एकांत में बातचीत करता है, उससे क्षमा माँगता है और उससे सहायता तथा मार्गदर्शन की प्रार्थना करता है। पाँच नमाज़ें हैं, जिनका प्रतिदिन पालन अनिवार्य है। पुरुष बिना किसी वैध कारण के इन्हें मस्जिद में जमात के साथ अदा करते हैं।

इसके माध्यम से मुसलमान एक-दूसरे को जानते हैं और प्रेम तथा एकता के वे बंधन जो उन्हें आपस में जोड़े रखते हैं, उन्हें बनाए जाते हैं, क़ायम रहते हैं और मज़बूत होते हैं। वे दैनिक आधार पर अपने साथी मुसलमानों की स्थिति से अवगत होते हैं। यदि कोई उपस्थित न हो और संदेह हो कि वह बीमार है तो वे उसकी सुध लेते हैं और यदि ऐसा प्रतीत हो कि वह अपने कुछ कर्तव्यों में कमी कर रहा है तो वे उसे नसीहत करते हैं।

वर्ग, जाति और वंश जैसे सभी सामाजिक भेदभाव को नकार दिया जाता है। मुसलमान एक ही समय में सीधी पंक्तियों में एक-दूसरे के बगल में खड़े होते हैं, सभी एक ही दिशा (मक्का) की ओर मुँह करते हैं। अल्लाह के आगे झुकने के लिए जब वे उसके समक्ष खड़े होते हैं तो सभी को समान माना जाता है।

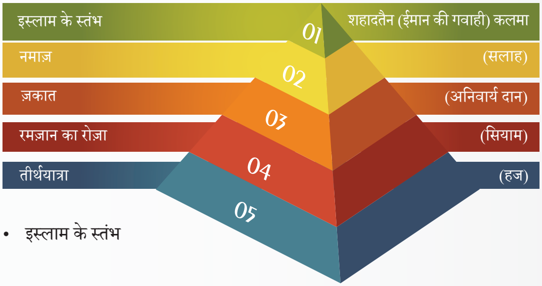

- इस्लाम के स्तंभ

03 ज़कात (अनिवार्य दान)

"ज़कात, धन का एक ऐसा छोटा-सा अंश होता है जिसे एक संपन्न मुसलमान अपने कम भाग्यशाली भाइयों और बहनों को देता है। इसे देने के लिए कुछ निश्चित शर्तें हैं। एक मुसलमान इसे खुशी-खुशी और स्वेच्छा से देता है और इस प्रकार अल्लाह के आदेश का पालन करता है।

इस दान को अनिवार्य बनाए जाने के पीछे का उद्देश्य मुसलमानों के बीच आपसी और सामाजिक समर्थन को पुनर्जीवित करना है, साथ ही गरीबी को मिटाना और उससे उत्पन्न होने वाले खतरों का अंत करना है। इसके माध्यम से, अमीरों के दिल लालच से शुद्ध हो जाते हैं और ग़रीबों के दिल उस नफ़रत और ईर्ष्या से शुद्ध हो जाते हैं जो वे अमीरों के प्रति महसूस कर सकते हैं। वे देखते हैं कि अमीर, अपने उस धन में से जो अल्लाह ने ठहराया है, लगातार उन्हें पैसा दे रहे हैं और उनकी ज़रूरतों का ध्यान रख रहे हैं।

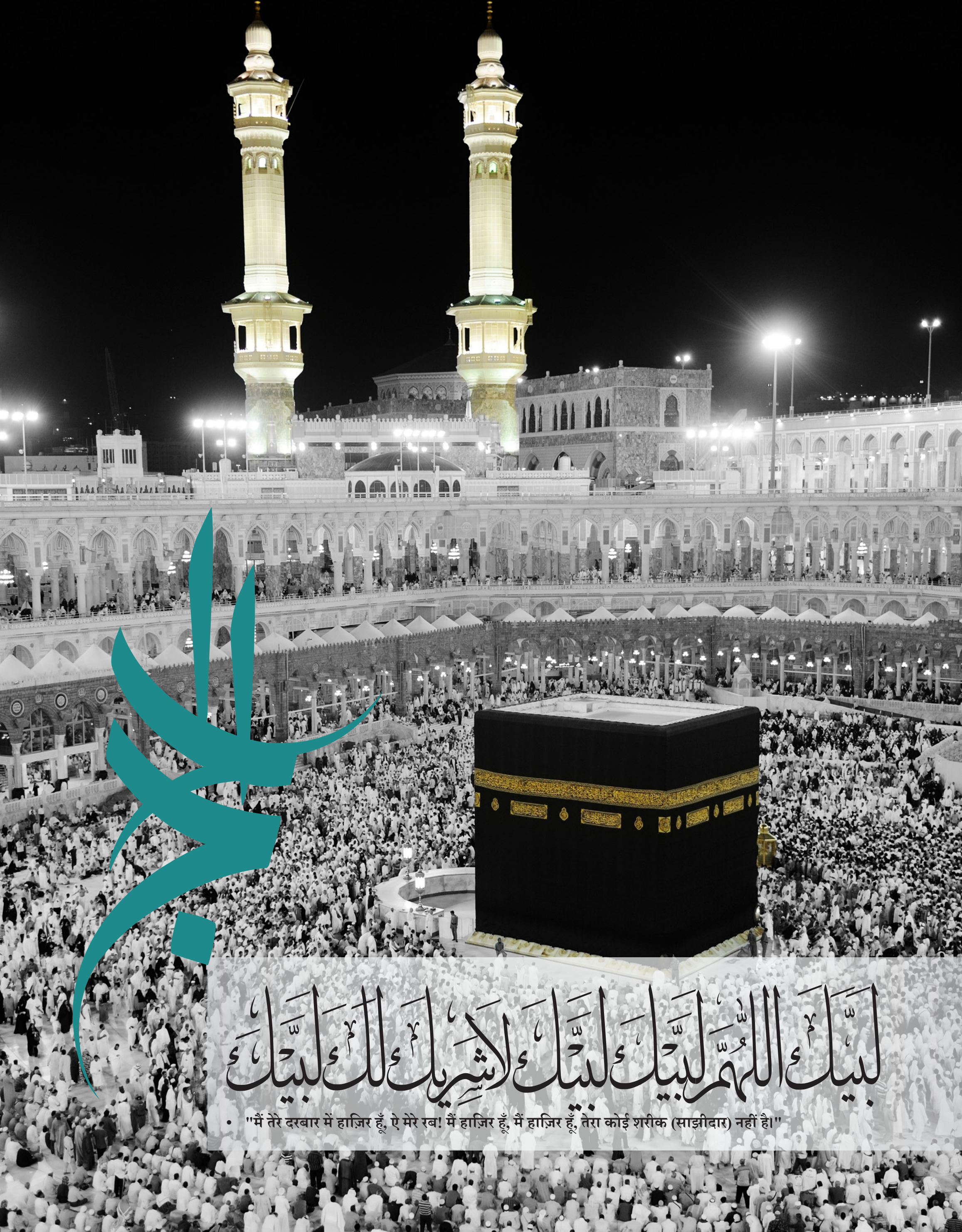

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ
- "मैं तेरे दरबार में हाज़िर हूँ, ऐ मेरे रब! मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक (साझीदार) नहीं है।"

04 रमज़ान का रोज़ा (सियाम):

हर मुसलमान पर साल में एक बार पूरे माहे रमज़ान के रोज़े रखना अनिवार्य है। सुबह सादिक़ (फ़जर) से लेकर सूरज डूबने तक मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वे उन सभी चीज़ों से परहेज़ करें जो रोज़े को तोड़ती हैं — विशेष रूप से: खाना, पीना और संभोग। रोज़ा इस्लाम में एक इबादत है और यह पिछले धर्मों में भी फ़र्ज़ किया गया था।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं, जैसे तुमसे पहले के लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे — ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।" (अल्-ब-क़-रा: 183)

• रमज़ान करीम

05 हज (तीर्थयात्रा):

हज अल्लाह के पवित्र घर (काबा) की वह तीर्थयात्रा है जो विशिष्ट स्थानों और विशिष्ट समय पर कुछ निर्धारित धार्मिक अनुष्ठानों को पूरा करने के लिए की जाती है। इस्लाम का यह स्तंभ हर उस मुस्लिम पुरुष या महिला पर जीवन में एक बार अनिवार्य (फ़र्ज़) है जो मानसिक रूप से स्वस्थ हो और बालिग हो चुका हो, बशर्ते कि उसके पास इसे पूरा करने की शारीरिक और वित्तीय क्षमता हो।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"जो वहाँ तक पहुँचने का सामर्थ्य रखता हो, अल्लाह के लिए उन पर इस घर का हज अनिवार्य है, और जिसने इनकार किया तो निःसंदेह अल्लाह (उससे, बल्कि) समस्त संसार से निस्पृह (बेनियाज़) है।" (आले इम्रान: 3:97)

हज मुसलमानों का सबसे बड़ा जमावड़ा है और दुनिया के सबसे बड़े सम्मेलनों में से एक है। पूरी दुनिया के मुसलमान एक ही समय पर एक ही स्थान पर एकत्रित होते हैं। वे सभी एक ही रब को पुकारते हैं, एक जैसे कपड़े पहनते हैं और एक ही तरह के अनुष्ठान करते हैं। अमीर और गरीब, कुलीन और साधारण, गोरे और काले, अरब और गैर-अरब के बीच कोई भेद नहीं किया जाता; अल्लाह के सामने सभी समान हैं। उनके बीच 'तक़वा' (परहेज़गारी या ईश-परायणता) के सिवा और कोई अंतर नहीं है। हज एक ऐसा आयोजन है जो सभी मुसलमानों के आपसी भाईचारे और उनकी आशाओं व भावनाओं की एकता पर बल देता है।

ईमान (आस्था) के स्तंभ

आध्यात्मिक इबादतों को ईमान (आस्था) का स्तंभ कहा जाता है; और ईमान के छह स्तंभ हैं। वे इस प्रकार हैं:

- यह क़ुरआन का 112वाँ अध्याय (सूरा) है। यह तब अवतरित हुआ था जब बहुदेववादियों ने पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ से संपूर्ण जगत के पालनहार का वर्णन करने के लिए कहा था।

01 अल्लाह पर ईमान लाना:

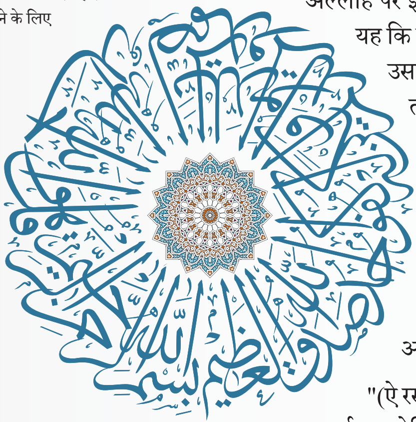

अल्लाह पर ईमान लाने का अर्थ है — उसके अस्तित्व पर यकीन रखना, यह कि वह अकेला ही उपासना (इबादत) का हक़दार है और यह कि उसका प्रभुत्व (रुबूबियत)(1), उसकी एकात्मकता (उलूहियत)(2) तथा उसके सुंदर नामों और गुणों में न तो कोई साझी है(3), न कोई समकक्ष और न ही कोई प्रतिद्वंद्वी है। वही इस संसार का सृष्टिकर्ता है, वही इसका स्वामी है और सारे मामलों का संचालक भी वही है।

केवल वही चीज़ घटित होती है जो वह चाहता है और वह अकेला ही इबादत का हक़दार है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"(ऐ रसूल!) आप कह दीजिए: वह अल्लाह एक है। अल्लाह स्वत: पर्याप्त (बेनियाज़) है। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है। और न कोई उसका समकक्ष है।" (अल-इख़्लास:1-4)

02 अल्लाह के फ़रिश्तों पर विश्वास (ईमान) करना:

इसका अर्थ है – इस बात पर विश्वास करना कि फ़रिश्तों का अस्तित्व है। उनकी वास्तविक संख्या अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। अल्लाह ने उन्हें अपनी इबादत (उपासना) के लिए पैदा किया है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"मसीह़ हरगिज़ इससे तिरस्कार महसूस नहीं करेगा कि वह अल्लाह का बंदा हो और न निकटवर्ती फ़रिश्ते ही ।" (अन्-निसा:172)

फ़रिश्ते अल्लाह के किसी भी विशेष गुण में हिस्सेदार नहीं हैं और न ही वे उसकी संतान हैं। बल्कि, अल्लाह ने उन्हें विशिष्ट कार्यों को संपन्न करने के लिए पैदा किया है।

(1) इसका अर्थ यह प्रमाणित करना है कि अल्लाह का अस्तित्व है और वही इस ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता तथा स्वामी है। वही हर चीज़ को घटित करने वाला है; कोई भी चीज़ तब तक अस्तित्व में नहीं आती जब तक वह न चाहे और कुछ भी तब तक नहीं होता जब तक उसकी इच्छा न हो।

(2) इसका अर्थ यह गवाही देना है कि अल्लाह ही एकमात्र सच्चा ईश्वर है जो इबादत (पूजा) के योग्य है और इबादत के सभी कार्य केवल उसी के लिए समर्पित होने चाहिए।

(3) इसका अर्थ अल्लाह के नामों और गुणों की अद्वितीयता में विश्वास करना है और यह मानना है कि सभी सुंदर नाम और गुण अल्लाह के ही हैं और वह हर प्रकार के दोष या कमी से सर्वथा मुक्त है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और उन (बहुदेववादियों) ने कहा कि 'रहमान' (अत्यंत दयावान्) ने कोई संतान बना रखी है। वह (इससे) पवित्र है। बल्कि वे (फ़रिश्ते) सम्मानित बंदे हैं। वे बात करने में उससे पहल नहीं करते और वे उसके आदेशानुसार ही काम करते हैं। " (अल्-अम्बिया: 26-27)

03 अल्लाह की किताबों पर विश्वास (ईमान) करना:

इसका अर्थ यह विश्वास करना है कि अल्लाह ने अपने रसूलों (संदेशवाहकों) पर ईश्वरीय पुस्तकें अवतरित कीं ताकि उन्हें पूरी मानवजाति तक पहुँचाया जा सके। अवतरण के समय इन पुस्तकों में सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। इन सभी पुस्तकों ने लोगों को अल्लाह की एकता (तौहीद) की ओर बुलाया और यह संदेश दिया कि वही सृष्टिकर्ता, अधिपति और स्वामी है तथा सभी उत्तम नाम और गुण उसी के हैं। इनमें से कुछ पुस्तकें निम्नलिखित हैं:

- सुहुफ़ (इब्राहीम के ग्रंथ): सुहुफ़ वे पवित्र ग्रंथ हैं जो पैगंबर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर उतारे गए।
- तौरात: तौरात वह पवित्र किताब है जो पैगंबर मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारी गई।
- ज़बूर: ज़बूर वह पवित्र किताब है जो पैगंबर दाऊद (अलैहिस्सलाम) पर उतारी गई।
- इंजील: इंजील वह पवित्र किताब है जो पैगंबर ईसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारी गई।
- क़ुरआन करीम: हर मुसलमान का यह विश्वास करना अनिवार्य है कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है जिसे फ़रिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ पर लेकर आए और यह समस्त दिव्य ग्रंथों में अंतिम है जो अपने पहले की सभी किताबों को रद्द (मंसूख़) करता है।

क़ुरआन क्या है?

क़ुरआन मुसलमानों का संविधान है जिससे वे उन शिक्षाओं को ग्रहण करते हैं जो उनके धार्मिक और सांसारिक — दोनों प्रकार के मामलों को व्यवस्थित करती हैं। यह पिछली ईश्वरीय पुस्तकों से निम्नलिखित पहलुओं में भिन्न है:

- यह अंतिम ईश्वरीय पुस्तक है जो अवतरित की गई और इसीलिए अल्लाह तआला ने इसे क़यामत के दिन तक हर प्रकार की तोड़-मरोड़ और विकृति से सुरक्षित रखने का वचन दिया है।
  अल्लाह तआला फ़रमाता है: "नि:संदेह हमने ही यह ज़िक्र (क़ुरआन) उतारा है और नि:संदेह हम ही इसकी अवश्य रक्षा करने वाले हैं।" (अल्-हिज्र:9)
- क़ुरआन में वे तमाम विधान और नियम शामिल हैं जो समाज में सुधार लाते हैं और जिनके पालन में समस्त मानवजाति के लिए सुख एवं खुशहाली की गारंटी है।
- क़ुरआन ने नबियों और रसूलों की कहानियों को — और उनके और उनकी क़ौमों के बीच जो कुछ हुआ — हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ तक, सब को दस्तावेज़ के रूप में सुरक्षित कर दिया है।
- यह (क़ुरआन) समस्त मानवजाति के लिए उतारा गया ताकि वे शांति और सुखमय जीवन व्यतीत करें और ताकि उन्हें अंधकारों से निकालकर प्रकाश की ओर लाया जाए।
- इसका वाचन करना, इसे कंठस्थ करना और इसे सिखाना — ये सब इबादत (पूजा) के कार्य हैं।

क़ुरआन के बारे में लोग क्या कहते हैं?

डॉ. मॉरिस बुकाय [1] ने अपनी पुस्तक "क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान" में लिखा है: "इसका [क़ुरआन का] आधुनिक ज्ञान की रोशनी में पूर्णतः निष्पक्ष परीक्षण हमें बार-बार यह स्वीकार करने पर मजबूर करता है कि दोनों [क़ुरआन और विज्ञान] के बीच पूर्ण सामंजस्य है। यह हमें यह सोचने पर भी विवश करता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ के समय का कोई व्यक्ति ऐसी बातों का लेखक हो ही नहीं सकता क्योंकि उस युग में ज्ञान की जो स्थिति थी वह इसके लिए पर्याप्त नहीं थी। ऐसे विचार ही क़ुरआनी वह्य को उसका अद्वितीय स्थान प्रदान करते हैं और निष्पक्ष वैज्ञानिक को यह स्वीकार करने पर बाध्य करते हैं कि वह ऐसा कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकता जो केवल भौतिकवादी तर्क पर आधारित हो।"

(1) मॉरिस बुकाय फ्रांसीसी शल्यचिकित्सक, वैज्ञानिक, विद्वान और लेखक।

04 अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाना:

अल्लाह के रसूलों पर ईमान, इसका अर्थ है कि अल्लाह ने मानवजाति में से सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों को रसूल बनाकर चुना और उन्हें अपनी सृष्टि की ओर इस उद्देश्य से भेजा कि वे अल्लाह की विशिष्ट शरियत, उसकी इबादत और आज्ञापालन के नियमों को स्थापित करें तथा उसके धर्म और तौहीद (एकत्व) को कायम रखें। अल्लाह ने अपने रसूलों को यह आदेश दिया कि वे उसकी ओर से संदेश लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उनके भेजने के बाद लोगों के पास अल्लाह के खिलाफ कोई बहाना न रहे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और (ऐ नबी!) हमने आपसे पहले पुरुषों ही को रसूल बनाकर भेजे जिनकी ओर हम वह्य (प्रकाशना) करते थे। अतः तुम ज़िक्र (किताब) वालों[6] से पूछ लो यदि तुम (स्वयं) नहीं जानते हो। "(अल्-अम्बिया: 7)

पहले रसूल हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) थे और अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ हैं।

05 ईश्वर के न्याय के दिन पर विश्वास:

यह विश्वास करना है कि इस संसारिक जीवन का अन्त हो जाएगा।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"हर कोई जो इस (धरती) पर है, नष्ट होने वाला है। तथा आपके पालनहार का चेहरा बाक़ी रहेगा जो बड़ी महिमा और सम्मान वाला है।" (अर्-रहमान: 26-27)

इसके बाद अल्लाह समस्त सृष्टि को दोबारा जीवित करेगा, उनका हिसाब लेगा और जो लोग भला कार्य करते थे, उनके सत्कर्मों, ईश्वर पर विश्वास तथा उनके पैगंबरों और रसूलों के अनुपालन स्वरूप उन्हें हमेशा की ज़िन्दगी देने के लिए जन्नत (स्वर्गीय बाग़) में प्रवेश देगा।

वह उन लोगों को जो अल्लाह का इंकार करते थे और उनके रसूलों की अवहेलना करते थे, हमेशा-हमेशा के लिए के लिए जहन्नम डालकर दंडित करेगा।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ
وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

- "हर कोई जो इस (धरती) पर है, नष्ट होने वाला है। तथा आपके पालनहार का चेहरा बाक़ी रहेगा जो बड़ी महिमा और सम्मान वाला है।" (अर्-रहमान: 26-27)

06 कज़ा और क़द्र (पूर्वनिर्धारण/भाग्य) पर विश्वास:

इसका अर्थ यह मानना है कि अल्लाह हर चीज़ के अस्तित्व में आने से पहले ही उसे जानता था और यह भी कि भविष्य में उसके साथ क्या होगा। फिर उसने उन्हें अस्तित्व प्रदान किया और यह सब उसके ज्ञान और मापदंड (तय सीमा) के अनुसार हुआ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "... तथा उसने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की, फिर उसकी उचित समाप्ति निर्धारित की।" (अल्-फ़ुर्क़ान:2)

यह विश्वास इस तथ्य के विपरीत नहीं है कि मनुष्य को चीज़ों को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए। ईश्वरीय निर्धारण (तक़दीर) पर विश्वास करने के निम्नलिखित परिणाम होते हैं:

01 कज़ा और क़द्र पर विश्वास करने से अंतरात्मा को स्पष्टता और मन को शांति मिलती है। जो कुछ घटित हो चुका है या जो प्राप्त नहीं हो सका, उसे लेकर दुखी होने की कोई गुंजाइश नहीं बचती।

02 यह इस ब्रह्मांड में अल्लाह द्वारा बनाई गई चीज़ों के बारे में ज्ञान और अन्वेषण (खोज) को प्रोत्साहित करता है। रोग जैसी मुसीबतें मनुष्य को उपचार खोजने के लिए प्रेरित करती हैं; और यह उन औषधियों के स्रोतों की तलाश करके किया जाता है जिन्हें परम रचयिता अल्लाह तआल ने इस ब्रह्मांड में पैदा किया है।

03 यह अल्लाह पर किसी व्यक्ति की निर्भरता को बढ़ाता है और सृष्टि (मख़लूक़) के डर को ख़त्म करता है। इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा ने कहा: "मैं एक दिन अल्लाह के रसूल ﷺ के पीछे (सवारी पर) था तो उन्होंने ﷺ ने मुझसे फ़रमाया: 'ऐ नौजवान! मैं तुम्हें कुछ कलिमात (बातें) सिखाता हूँ: अल्लाह के आदेशों का पालन करो वह तुम्हारी सुरक्षा करेगा। अल्लाह के आदेशों का पालन करो, तुम उसे अपने सामने पाओगे। जब तुम कुछ माँगो तो अल्लाह से माँगो और जब मदद माँगो तो अल्लाह से मदद माँगो; और ये जान लो कि अगर पूरी दुनिया तुम्हें फ़ायदा पहुँचाने के लिए इकट्ठा हो जाए तो वो तुम्हें उस चीज़ के अलावा कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और अगर पूरी दुनिया तुम्हें नुक़सान पहुँचाने के लिए इकट्ठा हो जाए तो वो तुम्हें उस चीज़ के अलावा कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकती जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। क़लमें उठा ली गई हैं और (तक़दीर के) सहीफ़े सूख गए हैं।'"(तिर्मिज़ी)

- नबी ﷺ ने फ़रमाया:"अल्लाह के सम्मान का एक अंश सफ़ेद बालों वाले मुसलमान का सम्मान करना है।" (अबू दाऊद)।

- नबी ﷺ ने फ़रमाया:"जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसके सारे कर्म समाप्त हो जाते हैं, सिवाय तीन के: सतत दान, लाभकारी ज्ञान (जो उसने पीछे छोड़ा हो) या एक नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे।" (तिर्मिज़ी)

02 इस्लाम के मौलिक उद्देश्य

इस्लाम के मौलिक उद्देश्य हैं:

01 इस्लाम धर्म की रक्षा

02 जान की रक्षा

03 धन-संपत्ति की रक्षा

04 बुद्धि की रक्षा

05 नस्ल की रक्षा

06 इज़्ज़त-आबरू की रक्षा

• इस्लाम

الإسلام

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:"निश्चय ही अल्लाह ने तुम्हारी जानों, तुम्हारी संपत्तियों और तुम्हारी इज़्ज़त को उसी तरह पवित्र ठहराया है, जैसे इस पवित्र महीने में (ज़िलहिज्जा का महीना जो इस्लामी कैलेंडर का 12वाँ महीना है), इस पवित्र नगर में (मक्का और उसके आसपास का क्षेत्र), इस दिन की पवित्रता है (हज के दिन अरफ़ा का दिन) ।" (बुखारी)

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैबह व सल्लम ﷺ यह भी फ़रमाया:

"क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि सच्चा मोमिन कौन है? वह व्यक्ति जिस पर लोग अपने धन और अपनी जानों के मामले में भरोसा कर सकें। मुसलमान वह है जिससे दूसरे उसकी ज़ुबान और हाथ से सुरक्षित रहें। अल्लाह की राह में सच्चा संघर्ष करने वाला वह है जो अल्लाह की आज्ञा का पालन करने के लिए अपने मन की आंतरिक इच्छाओं के विरुद्ध जिहाद करे और सच्चा हिजरत करने वाला वह है जो पापों और ग़लत कामों को छोड़ दे।" (इब्ने हिब्बान)।

• अल्लाह के नबी ﷺ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:"अरफ़ात के दिन से बढ़कर कोई ऐसा दिन नहीं है, जिस दिन अल्लाह तआला अपने बंदों को जहन्नम की आग से सबसे अधिक मदुक्त करता हो।" (मुस्लिम)

03 इस्लाम में शिष्टाचार, तौर-तरीके और नैतिकता

इस्लाम सभी बुराइयों और अनैतिक कार्यों को रोकता है — चाहे वे वचन के रूप में हों या कर्म के रूप में।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"(ऐ नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले एवं छिपे अश्लील कर्मों को तथा पाप एवं नाहक़ अत्याचार को हराम किया है तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ, जिस (के साझी होने) का कोई प्रमाण उसने नहीं उतारा है तथा यह कि तुम अल्लाह पर (के बारे में) ऐसी बात कहो जो तुम नहीं जानते।" (अल्-आराफ़: 33)

इस्लाम सभी अच्छे आचरण और शिष्टाचार का आदेश देता है और उन्हें प्रोत्साहित करता है। अल्लाह के पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"मुझे केवल नेक और सम्मानजनक आचरण को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है।" (हाकिम)

अल्लाह महान एवं सर्वशक्तिमान ने क़ुरआन करीम में फ़रमाया: "आप उनसे कह दें कि आओ, मैं तुम्हें (आयतें) पढ़कर सुना दूँ कि तुम पर, तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम किया है? वह यह है कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी न बनाओ और माता-पिता के साथ उपकार करो तथा निर्धनता के भय से अपनी संतानों की हत्या न करो। हम तुम्हें रोज़ी देते हैं और उन्हें भी देंगे। और निर्लज्जता की बातों के निकट भी न जाओ, खुली हों अथवा छिपी। और किसी प्राणी की हत्य न करो, जिस (की हत्या) को अल्लाह ने हराम ठहराया हो, सिवाय इसके कि उसका कोई उचित कारण हो। ये बातें हैं जिनकी अल्लाह ने तुम्हें निर्देशित किया है ताकि तुम समझो।" (अल्-अन्आम: 151)

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

"तुम में से कोई व्यक्ति (सच्चा) विश्वासी नहीं हो सकता जब तक कि अपने भाई के लिए वही न चाहे जो अपने लिए चाहता है।" (बुख़ारी)

• "मुझे नेक और सम्माननीय आचरण को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए भेजा गया है।"

بُعِثْتُ لِأُتَمِّمَ صَالِحَ الْأَخْلَاقِ

04 इस्लाम में अधिकार

इस्लाम ने अपने अनुयायियों पर यह अनिवार्य किया है कि वे लोगों को उनके उचित अधिकार प्रदान करें। माता-पिता, जीवन-साथी, बच्चे, पड़ोसी — इन सभी को इस दुनिया में उनकी विशेष भूमिका के अनुसार निर्धारित अधिकार दिए गए हैं। इसी आधार पर मुस्लिम समाज के व्यक्तियों के बीच पारस्परिक बंधन और एकजुटता स्थापित होती है और मज़बूती आती है। इससे समाज में प्रेम और एकता का प्रसार होता है और समाज को बिखरने से बचाया जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तथा अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका साझी न बनाओ और माता-पिता, रिश्तेदारों, अनाथों, निर्धनों, नातेदार पड़ोसी, अपरिचित पड़ोसी, साथ रहने वाले साथी, यात्री और अपने दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करो। निःसंदेह अल्लाह उससे प्रेम नहीं करता जो इतराने वाला, डींगें मारने वाला हो।" (अन्-निसा:36)

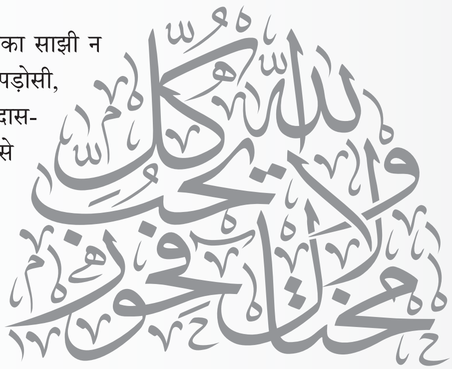

• "अल्लाह उन लोगों से प्रेम नहीं करता जो घमंड और अहंकार से भरे हों।"

नबी ﷺ ने फ़रमाया:

"तुममें से हर एक संरक्षक है और हर एक अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में जवाबदेह है। शासक अपनी प्रजा का संरक्षक है और उनके बारे में जवाबदेह है। पति अपने परिवार का संरक्षक है और उनके बारे में जवाबदेह है। स्त्री अपने पति के घर की संरक्षक है और उसके बारे में जवाबदेह है और सेवक अपने मालिक की संपत्ति का संरक्षक है और उसके बारे में जवाबदेह है।" (बुख़ारी)

इसके अलावा, जिन रास्तों पर लोग चलते हैं, उनके भी कुछ अधिकार हैं जिन्हें पूरा करना ज़रूरी है।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"रास्तों पर बैठने से बचो और उनसे दूर रहो।" सहाबा ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे पास इकट्ठा होने और बातें करने की कोई और जगह नहीं है।" तो आप ﷺ ने फ़रमाया, "अगर मजबूरी हो तो फिर रास्तों का हक़ अदा करो।" उन्होंने पूछा, "रास्तों का हक़ क्या है?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "नज़रें नीची रखना (विपरीत लिंग के लोगों पर नज़र न डालना), किसी को तकलीफ़ न देना, सलाम का जवाब देना और नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना।" (बुख़ारी)

यहाँ तक कि जानवरों के भी अधिकार हैं। उनके साथ दया और भलाई का व्यवहार करना पाप से प्रायश्चित्त का ज़रिया है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"एक बार एक आदमी किसी काम में लगा हुआ था और उसे बहुत ज़ोर की प्यास लगी। उसे एक कुआँ मिला तो वह उसमें उतरा और पानी पिया। जब वह बाहर निकला तो उसने देखा कि एक कुत्ता हाँफ रहा है और प्यास के मारे ज़मीन चाट रहा है। उस आदमी ने कहा, 'यह कुत्ता भी उतना ही प्यासा है जितना मैं था।' तो वह दोबारा कुएँ में उतरा, अपना जूता पानी से भरा और कुत्ते को पिलाया। इस (नेकी) की वजह से अल्लाह ने उसके पाप की माफ़ी से नवाज़ा।" सहाबा ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हमें जानवरों पर दया करने का भी पुण्य मिलेगा?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "हाँ, बिल्कुल। हर जीवित प्राणी के साथ भलाई करने पर पुण्य मिलता है।" (बुख़ारी)

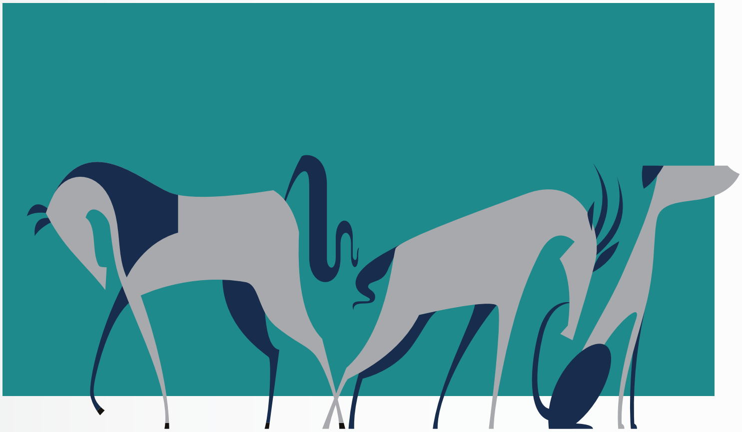

इस्लाम ने जानवरों के साथ बुरा व्यवहार — यानि उन्हें चारा-पानी के बिना बाँधे रखना या उन्हें तकलीफ़ देना — जैसे कार्यों को जहन्नम में जाने का कारण बताया है।

- इस्लाम ने जानवरों के साथ दुर्व्यवहार करना एक गंभीर पाप बताया है।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"एक औरत एक बिल्ली की वजह से जहन्नम में गई जिसे उसने बाँध रखा था — न उसे खाना खिलाया और न ही उसे ज़मीन के कीड़े-मकोड़े खाने के लिए आज़ाद छोड़ा।" (बुख़ारी)

जब इस्लाम जानवरों के प्रति इतनी दया और सहिष्णुता दिखाता है तो इंसानों के साथ — जिन्हें अल्लाह ने तमाम प्राणियों में परम आदृत और इज़्ज़त बख़्शी है — उसकी दया का अंदाज़ा ख़ुद ही लगाया जा सकता है।

05 इस्लाम के बारे में आप क्या जानते हैं?

01 काबा: जब इब्राहीम के पुत्र इस्माईल — जो हाजरा की कोख से जन्मे थे — उनका जन्म हुआ तो इब्राहीम की दूसरी पत्नी सारा को ईर्ष्या हो गई और उन्होंने इब्राहीम से कहा कि वे उन दोनों को अपने से दूर रखें। परम महान अल्लाह ने इब्राहीम को प्रेरित किया कि वे उन्हें मक्का ले जाएँ। वे समय-समय पर उनसे मिलने आते रहते थे।

एक बार वे कुछ समय के लिए उनसे दूर रहे और जब वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि इस्माईल ज़मज़म के कुएँ के पास तीर चला रहे थे। उन्हें देखते ही इब्राहीम ने उन्हें उसी तरह गले लगाया जैसे एक पिता अपने पुत्र को लगाता है और कहा — "ऐ इस्माईल! अल्लाह ने मुझे यहाँ एक घर बनाने का आदेश दिया है।"

तब दोनों ने मिलकर अल्लाह के घर की दीवारें खड़ी कीं। इस्माईल पत्थर इकट्ठा करते और इब्राहीम उन्हें जोड़ते जाते। जैसे-जैसे दीवारें ऊँची होती गईं, इब्राहीम उस पत्थर पर खड़े हो गए जहाँ उन्होंने अपना स्थान लिया था और उन्होंने तथा उनके पुत्र ने अल्लाह से दुआ माँगी —

"हे अल्लाह! हमारी यह मेहनत कबूल फरमा क्योंकि बेशक तू ही सब सुनने वाला और सब जानने वाला है।"

दुनिया–भर के मुसलमान अपनी नमाज़ के दौरान काबा की दिशा में मुँह करते हैं। यह अल्लाह का पहला घर है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"निःसंदेह मानवजाति के लिए पूजा का पहला घर बक्का में स्थापित किया गया था – जो सौभाग्यशाली तथा समस्त संसार के लिए मार्गदर्शन है।" (आले इम्रान : 96)

यह मुसलमानों की एकता का प्रतीक है। मुसलमान काबा की तरफ अपने दिल और जिस्म दोनों से रुख करते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं तो तुम जिस ओर रुख करो, सो वहीं अल्लाह का चेहरा है। निःसंदेह अल्लाह विस्तार वाला, सब कुछ जानने वाला है।" (अल्-ब-क़-रा:115)

जब मुसलमान काबा का तवाफ़ करते हैं — यानी उसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं — तो वे काबे की इबादत नहीं कर रहे होते, बल्कि वे केवल अल्लाह की इबादत करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"अतः उन्हें चाहिए कि इस घर (काबा) के मालिक की इबादत करें। जिसने उन्हें भूख में खिलाया तथा उन्हें भय से सुरक्षित किया। " (क़ुरैश :3-4)

- हज के मौसम में तीर्थयात्री 'काबा' का तवाफ़ (परिक्रमा) करते हैं। मक्का में स्थित पवित्र मस्जिद अल-हराम एक साथ दो मिलियन से अधिक लोगों को समा सकती है।

02 हजर-ए-अस्वद (काला पत्थर):

- हजर-ए-अस्वद काबे का पूर्वी आधारशिला है। मुसलमान इसे एक पवित्र इस्लामी निशानी के रूप में अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और इस्लामी परंपरा के अनुसार इसका संबंध हज़रत आदम और हज़रत हव्वा के युग से है।

जब हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) काबे की तामीर (निर्माण) पूरी करने वाले थे तब एक पत्थर की कमी रह गई। उन्होंने अपने बेटे इस्माईल (अलैहिस्सलाम) से कहा कि वे एक उपयुक्त पत्थर ढूंढकर लाएँ। इस्माईल (अलैहिस्सलाम) पत्थर की तलाश में निकले और जब वापस लौटे तो देखा कि उनके पिता पहले ही एक पत्थर लगा चुके हैं। उन्होंने पूछा, "अब्बाजान, यह पत्थर आपको कहाँ से मिला?" हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया, "यह जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) आसमान से लेकर आए।" और इस तरह काबे की तामीर मुकम्मल हुई।

जब यह पत्थर आसमान से उतारा गया था तो यह दूध से भी अधिक सफ़ेद था।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ﷺ फ़रमाया:

"हजर-ए-अस्वद जन्नत से उतरा था और दूध से भी अधिक सफ़ेद था लेकिन इंसानों के पाप ने इसे काला कर दिया।" (तिर्मिज़ी)।

हजर-ए-अस्वद काबे के दक्षिणी कोने में, उसके दरवाज़े के पास स्थित है। यह ज़मीन से लगभग 1.10 मीटर की ऊँचाई पर काबे की दीवार में जड़ा हुआ है। जो व्यक्ति काबे का तवाफ़ करे, उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हजर-ए-अस्वद उनकी बाईं ओर हो।

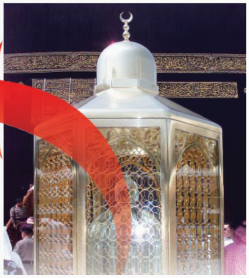

- **मक़ाम-ए-इब्राहीम** के बारे में: "...जन्नत के दो बेशक़ीमती पत्थरों में से एक — और अगर अल्लाह इनकी रोशनी को न ढक लेता तो ये पूरब से पश्चिम तक की सारी दुनिया को रोशन कर देते।" (इब्ने हिब्बान)

03 मक़ाम-ए-इब्राहीम (हज़रत इब्राहीम का स्थान)

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया: "यमनी कोना और मक़ाम-ए-इब्राहीम — ये दोनों जन्नत के दो बेशक़ीमती पत्थर हैं। अगर अल्लाह तआला इनकी रोशनी को न ढक लेता तो ये पूरब से पश्चिम तक की सारी दुनिया को रोशन कर देते।"(इब्ने हिब्बान)

मक़ाम-ए-इब्राहीम वह पत्थर है जिस पर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) काबे के निर्माण के दौरान खड़े होते थे। उनके बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) उन्हें पत्थर थमा-थमाकर निर्माण में मदद करते थे।

जैसे-जैसे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पत्थर रखते जाते थे, उसी पत्थर पर उनके क़दमों के निशान अंकित होते चले गए जिस पर वे खड़े थे। उस वक़्त हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिमुस्सलाम) दोनों अल्लाह से यह दुआ माँग रहे थे:

"ऐ हमारे पालनहार! हमसे स्वीकार कर ले। निःसंदेह तू ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।" (अल्-ब-क़-रा:127)

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के क़दमों के निशान आज भी दृश्यमान हैं। इस समय यह पत्थर एक सुरक्षात्मक आवरण (केस) में सुरक्षित रखा गया है। अल्लाह ने मोमिनों को इस मक़ाम के पीछे नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है। इरशाद होता है:

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "तथा हमने इब्राहीम और इस्माईल को ताकीदी हुक्म दिया कि तुम दोनों मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों तथा एतिकाफ़ करने वालों और रुकू' एवं सजदा करने वालों के लिए पवित्र (साफ़) रखो। " (अल्-ब-क़-रा:125)

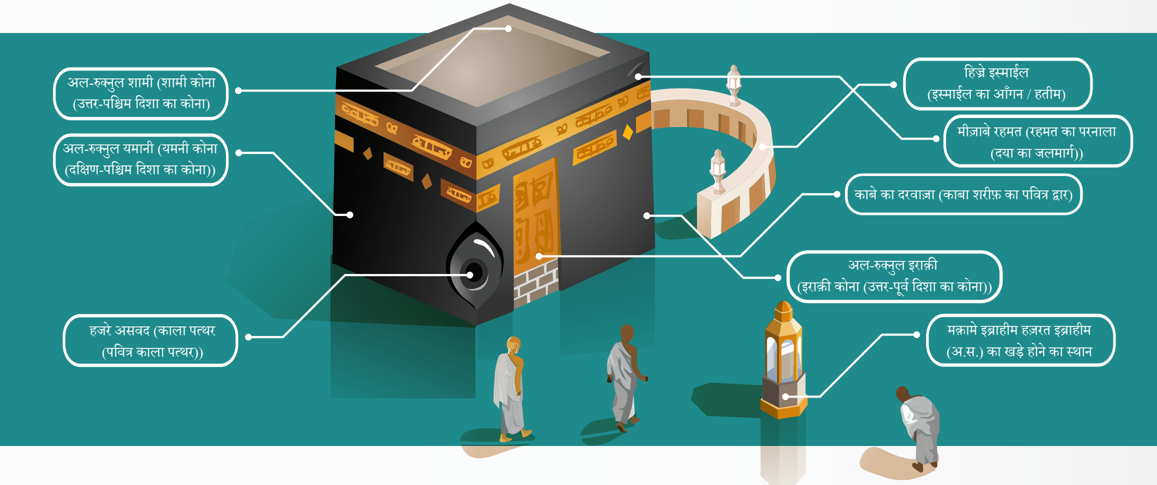

04

ज़मज़म का कुआँ: ज़मज़म का कुआँ: इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हाजरा और उनके पुत्र इस्माईल को काबे के निकट एक स्थान पर ले गए। वहाँ उन्होंने उन दोनों को एक ऐसे वृक्ष के नीचे बैठाया जो आगे चलकर ज़मज़म का स्थान बनने वाला था। उस समय मक्का में कोई भी नहीं रहता था फिर भी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उन्हें वहाँ केवल कुछ खजूरें और एक छोटी-सी मशक पानी देकर छोड़ गए। इसके बाद वे अपने घर की ओर लौट पड़े।
इस्माईल की माँ हाजरा उनके पीछे चलती हुई बोलीं, "ऐ इब्राहीम! आप कहाँ जा रहे हैं? यहाँ न कोई इंसान है जिसका साथ हमें मिले और न ही कोई ऐसी चीज़ है जिससे हमारा दिल बहले।" उन्होंने यह बात बार-बार दोहराई, परंतु इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने पलटकर उनकी ओर नहीं देखा।

तब हाजरा ने उनसे पूछा, "क्या अल्लाह ने आपको ऐसा करने का आदेश दिया है?" तब जाकर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उनकी ओर मुड़कर उत्तर दिया, "हाँ।"

यह सुनते ही हाजरा ने कहा, "तब तो वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा।"

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) आगे बढ़ते गए और जब वे एक ऐसी पहाड़ी पर पहुँचे जहाँ से वे उन्हें दिखाई नहीं देते थे तो उन्होंने काबे की ओर रुख किया और अल्लाह से यों दुआ माँगी:

"ऐ हमारे पालनहार! निःसंदेह मैंने अपनी कुछ संतान को इस घाटी में जो किसी खेती वाली नहीं, तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास, बसाया है। ऐ हमारे पालनहार! ताकि वे नमाज़ क़ायम करें। अतः कुछ लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि उनकी ओर झुके रहें और उन्हें फलों से जीविका प्रदान कर ताकि वे शुक्रिया अदा करें।" (इब्राहीम:37)

हाजरा ने इस्माईल को दूध पिलाया और जो पानी उनके पास था वह पीती रहीं। जब पानी खत्म हो गया तो वे और उनका बच्चा धीरे-धीरे प्यास से व्याकुल होने लगे। आगे क्या करें, यह समझ न आने पर उन्होंने अपने बच्चे को तड़पते और रोते हुए देखा। तब वे दौड़कर सबसे नज़दीकी पहाड़ी की ओर गईं जो सफ़ा की पहाड़ी थी। वे वहाँ खड़ी हुईं और यह उम्मीद लगाए ध्यान से चारों ओर देखने लगीं कि शायद कोई नज़र आ जाए — लेकिन कोई नहीं दिखा। फिर वे नीचे उतरीं और जैसे ही घाटी में पहुँचीं, उन्होंने अपना दामन समेटा और बेचैनी में घाटी को पार करते हुए दौड़ पड़ीं, यहाँ तक कि मरवा की पहाड़ी तक जा पहुँचीं। उन्होंने वहाँ से भी यह आस लगाए गहरी नज़रों से झाँका कि कोई दिख जाए — लेकिन वहाँ भी कोई नहीं था। उन्होंने यह सिलसिला सात बार दोहराया।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़रमाया:

"...वे सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ीं और किसी को देखने की उम्मीद में नज़रें दौड़ाईं, लेकिन सब बेकार रहा। जब वे घाटी में उतरीं तो दौड़ती हुई मरवा की पहाड़ी तक पहुँचीं। उन्होंने दोनों पहाड़ियों के बीच कई बार यही किया। फिर उन्होंने मन में सोचा, 'बेहतर है कि जाकर बच्चे का हाल देखूँ।' जब वे गईं तो उन्होंने पाया कि वह मृत्यु की कगार पर है। उसे मरते देखना उनसे सहन नहीं हुआ और उन्होंने सोचा, 'अगर मैं जाकर देखूँ तो शायद कोई मिल जाए।' तब वे फिर से सफ़ा की पहाड़ी पर चढ़ीं और देर तक नज़रें बिछाए रहीं, लेकिन कोई नहीं मिला। इस प्रकार उन्होंने सफ़ा और मरवा के बीच सात चक्कर पूरे किए। फिर उन्होंने सोचा, 'बेहतर है कि वापस जाकर बच्चे का हाल देखूँ।' तभी अचानक उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी और उन्होंने उस अनजानी आवाज़ का जवाब देते हुए कहा, 'अगर तुम मदद कर सकते हो तो हमारी मदद करो।' अरे! वह जिब्राइल (अलैहिस्सलाम) की आवाज़ थी। जिब्राइल ने अपनी एड़ी से ज़मीन पर इस तरह मारा — इब्ने अब्बास ने इसे समझाने के लिए अपनी एड़ी से ज़मीन पर मारकर दिखाया — और पानी फूट पड़ा। इस्माईल की माँ हैरान रह गईं और वे उस पानी के स्रोत के चारों ओर कुआँ बनाने के लिए खुदाई करने लगीं।"

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"अगर वे पानी को बिना रोके स्वाभाविक रूप से बहने देतीं तो वह ज़मीन की सतह पर बहता रहता।"

- ज़मज़म का कुआँ मक्का में मस्जिद अल-हराम के भीतर स्थित एक कुआँ है जो काबे से 20 मीटर पूर्व में है। यह अल्लाह की तरफ़ से एक चमत्कारी रूप से प्रकट हुआ पानी का स्रोत है।
- यह कुआँ काबे से 21 मीटर की दूरी पर है। इसे हाथों से खोदा गया था और यह लगभग 30 मीटर गहरा है, जिसका आंतरिक व्यास 1.08 मीटर से 2.66 मीटर तक है।

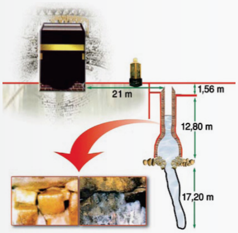

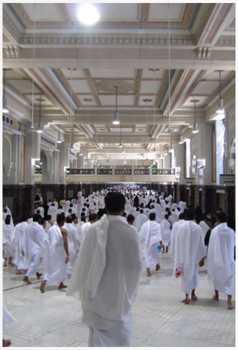

- सफ़ा और मरवा के बीच की दूरी लगभग 450 मीटर है, इसलिए सात चक्करों की कुल दूरी लगभग 3.15 किलोमीटर बनती है।

इस्माईल की माँ ने उस पानी को पीना शुरू किया और उनका दूध बच्चे के लिए बढ़ गया। इसके बाद, जुरहुम क़बीले के कुछ लोग जब उस घाटी के निचले हिस्से से गुज़र रहे थे तो उन्हें कुछ पक्षी दिखाई दिए — यह देखकर वे चकित हो गए। उन्होंने कहा, "पक्षी तो वहीं होते हैं जहाँ पानी हो।" उन्होंने एक आदमी को भेजा जिसने उस जगह की तलाश की, पानी मिला और वापस जाकर उन्हें इसकी ख़बर दी। फिर वे सब उनके पास आए और बोले, "ऐ इस्माईल की माँ! क्या आप हमें यहाँ अपने साथ रहने की इजाज़त देंगी?" उन्होंने हाँ कर दी और इस तरह वे सब वहाँ रहने लगे। (बुख़ारी)

- मिना में तीन जमरात हैं:
  जमरतुल अक़्बह
  जमरतुल वुस्ता
  जमरतुस सुग़रा

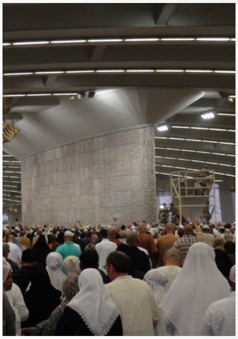

05 सफ़ा और मरवा:

सफ़ा और मरवा: सफ़ा और मरवा — ये वे दो पहाड़ियाँ हैं जिनके बीच हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की माता उस समय दौड़ती और उन पर चढ़ती रहीं, जब वे पानी और रोज़ी की तलाश में भटक रही थीं। हज के दौरान लोग इन्हीं दो पहाड़ियों के बीच चलते और दौड़ते हैं — और यह सब नबी करीम ﷺ की सुन्नत की पैरवी में किया जाता है।

06 जमरात:

जमरात: जमरात वे स्थान हैं जहाँ शैतान उस समय हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास आया था — जब वे अपनी पत्नी और बेटे को मक्का में छोड़ कर जा रहे थे — ताकि वह उन्हें अल्लाह के आदेश पर अमल करने से रोक सके और उनके दिल में संदेह और हिचकिचाहट पैदा कर सके। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कुछ कंकरियाँ उठाईं और उन्हें शैतान पर मारा।

हज के दौरान, अपने जद्दे-अमजद हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की सुन्नत की पैरवी करते हुए, मुसलमान इन्हीं स्तंभों पर कंकरियाँ मारते हैं। इस अमल के ज़रिए वे एलान करते हैं कि शैतान एक खुला दुश्मन है और उसका मुक़ाबला करना लाज़िम है। यह मुक़ाबला असल में शैतानी ख्वाहिशों को ठुकराने, अल्लाह के आदेशों की पाबंदी करने और उसकी मना की हुई चीज़ों से बचने के ज़रिए किया जाता है।

- यह एक अरबी वाक्यांश है जिसका अर्थ है — "इस साल भी और आने वाले सालों में भी आपका भला हो।" यह "तुग़रा" नामक ख़त्तात्ती शैली में लिखा गया है जिसे इस्लामी ख़िलाफ़त के दौर में उस्मानी सुल्तान अपनी मुहर के रूप में इस्तेमाल किया करते थे।

07 मुसलमानों के ईद उत्सव:

मुसलमानों के ईद उत्सव: मुसलमानों के वर्ष में दो धार्मिक त्योहार होते हैं। ईदुल-फित्र, रमज़ान के पवित्र महीने के अंत में मनाई जाती है और यह रोज़े के मौसम की समाप्ति का प्रतीक है।

दूसरे ईद के त्योहार को ईदुल-अज़्हा कहा जाता है क्योंकि मुसलमान हमारे पिता इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की सुन्नत पर चलते हुए क़ुर्बानी के जानवर ज़बह करके अल्लाह की निकटता हासिल करने की कोशिश करते हैं। उन्होंने सपने में देखा कि वे अपने बेटे इस्माईल की क़ुर्बानी दे रहे हैं और नबियों के सपने सच्चे होते हैं। जब वे अपने बेटे की क़ुर्बानी देने ही वाले थे तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तो हमने उसे एक सहनशील पुत्र की शुभ सूचना दी।

- मदीना मुनव्वरा में स्थित मस्जिद-ए-नबवी एक साथ बीस लाख से अधिक लोगों को जगह दे सकती है। मुसलमान इस मस्जिद में नमाज़ इसलिए अदा करते हैं ताकि वहाँ नमाज़ पढ़ने का जो बृहत पुण्य का वादा किया गया है उसे हासिल कर सकें।

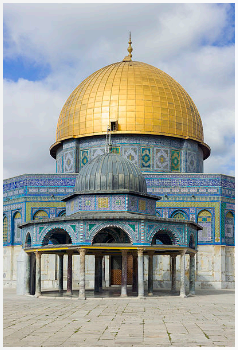

- क़ुब्बतुस्सख़रा (Dome of the Rock):
क़ुब्बतुस्सख़रा एक भव्य इमारत है जो यरूशलेम के पुराने शहर में स्थित टेम्पल माउंट पर बनी हुई है। इसे सर्वप्रथम 691 ईस्वी में उमय्यद ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक के आदेश पर, दूसरे फ़ितना के दौरान पूर्ण किया गया था। क़ुब्बतुस्सख़रा आज इस्लामी वास्तुकला की सबसे प्राचीन और महत्त्वपूर्ण कृतियों में से एक मानी जाती है।

फिर जब वह उसके साथ दौड़-धूप की आयु को पहुँचा तो उसने कहा: ऐ मेरे प्रिय बेटे! निःसंदेह मैं स्वप्न में देखता हूँ कि मैं तुझे ज़बह कर रहा हूँ। तो अब देख, तेरा क्या विचार है? उसने कहा: ऐ मेरे पिता! आपको जो आदेश दिया जा रहा है उसे कर डालिए। अगर अल्लाह ने चाहा तो आप अवश्य मुझे धैर्यवानों में से पाएँगे। अंततः जब दोनों (अल्लाह के आदेश के प्रति) समर्पित हो गए और उसने उसे माथे के एक किनारे पर गिरा दिया। और हमने उसे आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम!, निश्चय ही तूने स्वप्न को सच कर दिखाया। हम सदाचारियों को इसी तरह बदला प्रदान करते हैं। "(अस्-साफ़्फ़ात: 101-105)

08 मस्जिद-ए-नबवी: यह मुसलमानों द्वारा नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ के ज़माने में तामीर की गई पहली इबादतगाहों में से एक है। नबी ﷺ को उनके उसी कमरे में दफ़नाया गया जो मस्जिद से लगा हुआ था क्योंकि नबियों को उसी जगह दफ़नाया जाता है जहाँ उनका इंतेक़ाल होता है। जो व्यक्ति नबी ﷺ की क़ब्र के पास से गुज़रे, उनपर दुरूद व सलाम भेजना बेहद पसंदीदा और पुण्य का काम है।

09 जबल-ए-हिरा (हिरा पर्वत): नबी ﷺ वह्य (ईश्वरीय संदेश) मिलने से पहले इस गुफ़ा में कई-कई रातें गुज़ारा करते थे। जिब्रील (अलैहिस्सलाम) पहली वह्य इसी गुफ़ा में लेकर उनके पास आए थे। हालाँकि, इसकी कोई धार्मिक विशेष अहमियत नहीं है क्योंकि नबी के रूप में मबऊस होने के बाद नबी ﷺ कभी इस गुफ़ा में वापस नहीं गए और न ही उन्होंने दूसरों को इस जगह की ज़ियारत करने या इसे किसी खास मर्तबे में रखने की प्रेरणा दी।

10 मस्जिद क़ुब्बतुस्सख़रा (डोम ऑफ़ द रॉक): यह चट्टान, मस्जिद-ए-अक़्सा से सटी हुई उन्हीं बड़ी शिलाओं में से एक है। यह चट्टान लगभग 18 मीटर ऊँची और 13 मीटर चौड़ी है। फ़िलहाल यह एक गुंबद के नीचे स्थित है जिसे "क़ुब्बतुस्सख़रा" यानी "डोम ऑफ़ द रॉक" के नाम से जाना जाता है। इसे उमय्यद ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान ने बनवाया था और इसे अक्सर लोग मस्जिद-ए-अक़्सा समझने की ग़लती कर बैठते हैं।

11 मस्जिद अल-अक़्सा: मस्जिद अल-अक़्सा यरूशलेम शहर की उस पवित्र भूमि पर स्थित है जिसे अल्लाह ने सृष्टि के आरंभ से ही चुना है। इसे इसीलिए विशेष रूप से चुना गया ताकि ईमान वाले वहाँ अल्लाह की बड़ाई और महिमा का बखान करें। मस्जिद अल-अक़्सा धरती पर स्थापित की गई दूसरी इबादतगाह है।

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

मैंने अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल! धरती पर सबसे पहले कौन-सी मस्जिद बनाई गई?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "मस्जिद हराम (मक्का)।" फिर मैंने पूछा, "और दूसरी कौन सी?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "मस्जिद अल-अक़्सा।" मैंने पूछा, "इन दोनों मस्जिदों की तामीर के बीच कितना समय था?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "चालीस साल। और तुम जहाँ भी हो, नमाज़ अदा करो क्योंकि पूरी ज़मीन को सज्दागाह बना दिया गया है।" (मुस्लिम)

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने काबा तामीर किया तो अल्लाह ने उन्हें उस जगह जाने का हुक्म दिया जहाँ आज मस्जिद अल-अक़्सा खड़ी है। अल्लाह ने उन्हें वहाँ मस्जिद बनाने और उसकी इबादत करने का आदेश दिया। यह उस पूरे क्षेत्र में बनाई गई पहली इबादतगाह थी।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बाद, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने इस मस्जिद की मरम्मत की और उसे और अधिक विस्तृत किया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"जब हज़रत सुलेमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम ने मस्जिद अल-अक़्सा की तामीर मुकम्मल की तो उन्होंने अल्लाह से तीन दुआएँ माँगीं — ऐसा हुक्म और बादशाहत जो न पहले किसी को मिली हो और न बाद में किसी के लायक़ हो और यह कि जो भी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की नीयत से आए वह अपने सारे पाप से पाक होकर लौटे। "आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया, "दो दुआएँ क़बूल कर ली गईं और मुझे उम्मीद है कि तीसरी भी क़बूल हुई होगी।"(इब्ने ख़ुज़ैमा)

यह वह पहला क़िबला है जिसकी तरफ़ नबी करीम ﷺ ने नमाज़ अदा की और जब तक काबा की तरफ़ रुख़ करने का हुक्म नहीं आया, मुसलमान इसी दिशा में नमाज़ पढ़ते थे। शब-ए-मेराज के दौरान, नबी करीम ﷺ ने मस्जिद अल-अक़्सा में क़दम रखा और वहीं से आसमान की तरफ़ मेराज हुई। उस मुबारक रात आप ﷺ ने तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम की इमामत करते हुए नमाज़ पढ़ाई। यह मक्का और मदीना के बाद तीसरा हरम (पवित्र स्थान) है।

06 इस्लाम और संपत्ति

इस्लाम में, समस्त संपत्ति अल्लाह की है, जिसकी अमानत मनुष्यों को सौंपी गई है। यह एक ऐसी ज़िम्मेदारी है जिसे जायज़ तरीकों से कमाया जाना चाहिए और जायज़ तरीकों से खर्च किया जाना चाहिए — जैसे कि अपने आप पर और उन लोगों पर, फ़िज़ूलखर्ची और बर्बादी से बचते हुए, खर्च करना जिनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी उस पर है। अल्लाह के रसूल, अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"क़यामत के दिन कोई बंदा एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ा सकेगा जब तक उससे इन चार चीज़ों का हिसाब न ले लिया जाए: उसकी उम्र और उसने उसे कैसे बिताया, उसका इल्म और उसने उससे कैसे काम लिया, उसका माल और उसने उसे कहाँ से कमाया और कहाँ खर्च किया और उसकी जवानी और उसने उसे कैसे लगाया।" (तिर्मिज़ी)

इसके साथ ही, संपत्ति को नेक रास्तों में भी खर्च किया जाना चाहिए।

إنما النساء شقائق الرجال
• "महिलाएँ पुरुषों की पूरक आधी हैं।"

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"नेकी केवल यही नहीं कि तुम अपने मुँह पूर्व और पश्चिम की ओर फेर लो! बल्कि असल नेकी तो उसकी है जो अल्लाह और अंतिम दिन (आख़िरत) और फ़रिश्तों और ग्रंथों और नबियों पर ईमान लाए और मोह के बावजूद रिशतेदारों और अनाथों और निर्धनों और यात्री तथा माँगने वालों को और गर्दनें छुड़ाने में धन दे। " (अल्-ब-क़-रा:177)

07 इस्लाम और महिलाएँ

इस्लाम में पुरुष और महिलाएँ एक-दूसरे से भिन्न हैं और प्रत्येक की अपनी-अपनी भूमिकाएँ हैं। इस्लाम में महिलाओं का सम्मान और आदर करना एक अच्छे, सुदृढ़ चरित्र और शुद्ध स्वभाव की निशानी है। अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"तुममें से सबसे बेहतर वह है जो अपनी पत्नियों के प्रति सबसे अच्छा हो।" (तिर्मिज़ी)

महिला वह पहली हस्ती भी है जिसके साथ एक पुरुष को नेकी करनी चाहिए और जिससे रिश्ता जोड़े रखना चाहिए और जिसके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। जब एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ से पूछा कि वह अपनी संगति और देखभाल में किसे प्राथमिकता दे तो आप ﷺ ने फ़रमाया:

"तुम्हारी माँ।" उसने कहा, "फिर कौन?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "तुम्हारी माँ।" उसने कहा, "फिर कौन?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "तुम्हारी माँ।" उसने कहा, "फिर कौन?" आप ﷺ ने फ़रमाया, "तुम्हारे पिता।" (बुख़ारी)

अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने यह भी फ़रमाया:

"महिलाएँ पुरुषों की पूरक आधी हैं।" (अबू दाऊद)

- महिलाएँ अपनी इंसानियत में पुरुषों के बराबर हैं। वे न तो पाप का स्रोत हैं और न ही आदम के जन्नत (स्वर्ग के बागों) से निकाले जाने का कारण हैं।
- महिलाएँ अपनी व्यक्तिगत पहचान में पुरुषों के बराबर हैं। विवाह के बाद न तो उनका अपना नाम और न ही उनके परिवार का नाम खोता है। वे पुरुषों की पहचान में विलीन होकर गुम नहीं हो जातीं।
- महिलाएँ इस दुनिया और आख़िरत दोनों में पुण्य और सज़ा के मामले में पुरुषों के बराबर हैं।
- महिलाएँ पुरुषों के बराबर हैं, इस अर्थ में कि इस्लाम उनकी इज़्ज़त और पवित्रता को बनाए रखने और उसे बुलंद करने का प्रयास करता है।

- इस जीवन में पुरस्कार और दंड के संदर्भ में स्त्रियाँ, पुरुषों के समान हैं।

- शिक्षा प्राप्त करने और उचित परवरिश पाने के अधिकार में भी स्त्रियाँ, पुरुषों के बराबर हैं।

महिलाएँ पुरुषों के बराबर हैं इस बात में कि उन्हें विरासत पाने का अधिकार है।

महिलाएँ पुरुषों के बराबर हैं इस मायने में कि उन्हें अपनी दौलत को जैसे चाहें वैसे खर्च करने का पूर्ण अधिकार है।

महिलाएँ सामाजिक सुधार की ज़िम्मेदारी उठाने के दायित्व के संदर्भ में भी पुरुषों के बराबर हैं।

महिला और पुरुष को शिक्षा प्राप्त करने और उचित परवरिश पाने का समान अधिकार है।

महिला और पुरुष को अच्छी परवरिश, उचित शिक्षा और देखभाल के मामलों में समान अधिकार प्राप्त है। इस्लाम यह सुनिश्चित करता है कि महिलाओं के इन अधिकारों को लागू करते समय उन्हें और भी ऊँचे स्थान पर रखा जाए।

एक महिला को अपनी सभी ज़रूरतों और उससे भी बढ़कर अपने पति से नफ़क़ा (भरण-पोषण) पाने का हक़ है। यदि वह विवाहित नहीं है तो उसे अपने पिता से नफ़क़ा पाने का अधिकार है और उनकी ग़ैर-मौजूदगी में अपने भाई (भाइयों) से नफ़क़ा पाने का अधिकार है। यदि उसके भाई नहीं हैं तो उसके सबसे क़रीबी रिश्तेदार से नफ़क़ा पाने का अधिकार है। सीधे शब्दों में कहें तो एक मुस्लिम महिला की देखभाल सदैव की जाती है।

एक महिला को अपना सारा धन अपने पास रखने का अधिकार है। परिवार का आर्थिक भरण-पोषण करना उसकी ज़िम्मेदारी नहीं है। परिवार में वह जो भी धन लगाती है वह केवल उसकी अपनी इच्छा से होता है और उसे दान (सदक़ा) का दर्जा दिया जाता है।

एक महिला को अपने पति से जिस्मानी संतुष्टि पाने का अधिकार है।

एक महिला को तलाक़ की स्थिति में बच्चों की परवरिश का हक़ और साथ में बच्चों के लिए आर्थिक सहायता पाने का अधिकार तब तक है, जब तक कि वह किसी उचित कारण (जैसे गंभीर बीमारी आदि) से उनकी परवरिश करने में असमर्थ न हो।

महिलाओं को तलाक़ के बाद या विधवा हो जाने के बाद दोबारा निकाह करने का अधिकार है।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"जिसके पास तीन बेटियाँ या तीन बहनें हों और वह उन्हें संरक्षण देने में अल्लाह से डरे तो वह जन्नत में मेरे साथ इस तरह होगा।" आप ﷺ ने यह बात अपनी शहादत और बीच की उँगलियों को मिलाकर इशारे से समझाई। (अहमद और अन्य)

08 इस्लाम में यौन संबंधों का दृष्टिकोण

इस्लाम यौन संबंधों को एक ऐसी आवश्यक मानवीय आवश्यकता मानता है जिसे दबाने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि इसे उचित तरीके से पूरा किया जाना चाहिए। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे घृणा की दृष्टि से देखा जाए और न ही कोई ऐसी चीज़ है जिससे व्यक्ति को दूर रहना चाहिए।

इस्लाम ने कुछ ऐसे निश्चित नियम निर्धारित किए हैं जिनके द्वारा व्यक्ति इस आवश्यकता को नियंत्रित भी कर सकता है और पूरा भी कर सकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति पशुवत, वासनापूर्ण या अनियंत्रित तरीके से नहीं की जानी चाहिए। इस इच्छा की पूर्ति का एकमात्र वैध माध्यम विवाह है।

इस्लाम में विवाह का उद्देश्य

इस्लाम में विवाह का सर्वोच्च लक्ष्य पति-पत्नी दोनों के लिए मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक स्थिरता प्राप्त करना है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "वे तुम्हारे लिए वस्त्र हैं तथा तुम उनके लिए वस्त्र हो।" (अल्-ब-क़-रा:187)

क़ुरआन में यह अत्यंत सुंदर वर्णन — कि पति और पत्नी एक-दूसरे के लिए आवरण हैं — पति-पत्नी के बीच की अंतरंगता को इस प्रकार व्यक्त करता है जो भाषाई दृष्टि से सुशील और शालीन होने के साथ-साथ जीवंत रूप से प्रेमपूर्ण भी है।

इब्ने कसीर की व्याख्या, क़ुरआन की अपनी विशाल और महत्त्वपूर्ण तफ़सीर (व्याख्या) में इब्ने कसीर लिखते हैं:

"[नबी के साथियों और उनके शिष्यों में से टीकाकारों ने] कहा कि इस आयत का अर्थ है — 'तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिए विश्राम-स्थल हैं और तुम उनके लिए।' अर-रबी' बिन अनस ने कहा, 'वे तुम्हारा आवरण हैं और तुम उनका आवरण हो।' संक्षेप में, पत्नी और पति एक-दूसरे के अत्यंत निकट हैं और आपस में यौन संबंध रखते हैं।"

- इस्लाम में विवाह का उद्देश्य पति-पत्नी दोनों के लिए मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक स्थिरता की प्राप्ति है — एक ऐसा पवित्र बंधन जो व्यक्ति को, परिवार को और समग्र समाज को संतुलित एवं स्वस्थ बनाए रखता है।

इस्लाम व्यक्ति और समाज की रक्षा उन समस्त चीज़ों पर प्रतिबंध लगाकर करता है जो यौन इच्छा को उत्तेजित कर सकती हैं — इस भय से कि कहीं व्यक्ति व्यभिचार या बलात्कार जैसे घोर पाप न कर बैठे।

इसके परिणामस्वरूप, समाज में ऐसे नाजायज़ बच्चों की संख्या बढ़ेगी जिनका पालन-पोषण नैतिक रूप से करने वाला कोई माता-पिता नहीं होगा। ऐसे बच्चे समाज में एक ऐसे वर्ग के रूप में उभरेंगे जो दूसरों के प्रति शत्रुता और घृणा पालते हैं। इसके अतिरिक्त, समाज में अनेक प्रकार की बीमारियाँ भी फैल जाएँगी।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और व्यभिचार के निकट भी न जाओ। निःसंदेह वह निर्लज्जता (अश्लीलता) तथा बुरी राह है।" (अल्-इस्रा: 32)

09 इस्लाम और गैर-मुस्लिम

इस्लाम उन गैर-मुस्लिमों की जान, माल और इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करता है जिनका किसी इस्लामी राष्ट्र के साथ संधि हो। उन पर न तो अत्याचार किया जा सकता है और न ही उनके साथ ज़्यादती की जा सकती है। उन्हें उनके अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता और न ही लेन-देन में उनके साथ बुरा व्यवहार किया जा सकता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों से अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निश्चय अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।" (अल्-मुम्तहिना: 8)

अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"सुनो! जिसने किसी मुआहिद (जिसके साथ संधि हो) पर ज़ुल्म किया, उसके हक़ में कमी की, उस पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ डाला, या उसकी रज़ामंदी के बिना उससे कुछ छीन लिया — तो क़यामत के दिन मैं ख़ुद उसके ख़िलाफ़ फ़रियादी बनूँगा।" (अबू दाऊद)

फिर आप ﷺ ने अपनी उँगली से अपने सीने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया:

"सुनो! जिसने किसी ऐसे मुआहिद को क़त्ल किया जो अल्लाह और उसके रसूल की पनाह में हो तो अल्लाह उस पर जन्नत की ख़ुशबू हराम कर देगा — जबकि जन्नत की ख़ुशबू सत्तर साल की दूरी से महसूस की जा सकती है।" (सख़ावी — मक़ासिद अल-हसीना)

अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"मेरे रब ने मुझे यह हुक्म दिया है कि हम मुआहिदीन (यानी मुसलमानों की सरज़मीन पर रहने वाले वे गैर-मुस्लिम जिनसे संधि की गई हो) पर या किसी और पर ज़ुल्म न करें।" (बैहक़ी)

10 इस्लाम और अन्य दिव्य धर्म

इस्लाम अपने अनुयायियों के लिए यह अनिवार्य मानता है कि वे पिछले दिव्य संदेशों और समस्त पैगंबरों तथा दूतों पर विश्वास रखें। मुसलमानों को उन सभी से प्रेम करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"यह हमारा तर्क है जो हमने इब्राहीम को उसकी जाति के विरुद्ध प्रदान किया। हम जिसे चाहते है, पदों में ऊँचा कर देते हैं। निःसंदेह आपका पालनहार पूर्ण हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है। और हमने उसे (इब्राहीम को) इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए, प्रत्येक को हमने मार्गदर्शन दिया और उससे पहले नूह को मार्गदर्शन प्रदान किया और उसकी संतति में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा तथा हारून को। और इसी प्रकार हम नेकी करने वालों को प्रतिफल प्रदान करते हैं। तथा ज़करीया और यह्या और ईसा और इलयास को। ये सभी सदाचारियों में से थे। तथा इस्माईल और अल-यसअ, यूनुस और लूत को। और उन सबको हमने संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की है। तथा उनके बाप-दादा और उनकी संतानों तथा उनके भाइयों में से भी कुछ को (तौफ़ीक़ दी) और हमने उन्हें चुन लिया और सीधे मार्ग की ओर उनका मार्गदर्शन किया। " (अल्-अन्आम: 83-87)

01 क़ुरआन मूसा (अलैहिस्सलाम) के बारे में क्या कहता है?

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"और आप इस पुस्तक में मूसा की चर्चा करें। निश्चय ही, वह चुना हुआ था तथा रसूल एवं नबी था।" (मर्यम: 51)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"ऐ मूसा! निःसंदेह मैंने तुम्हें अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप के साथ लोगों पर चुन लिया है। अतः जो कुछ मैंने तुम्हें प्रदान किया है, उसे ले लो और आभार प्रकट करने वालों में से हो जाओ।" (अल्-आराफ़:144)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"फिर हमने मूसा को पुस्तक प्रदान की, उनके अच्छे काम के लिए बदला के रूप में अनुग्रह को पूरा करने के लिए तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण और मार्गदर्शन एवं दया के लिए। ताकि वे अपने पालनहार से मिलने पर ईमान ले आएँ।" (अल्-अन्आम: 154)

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और निःसंदेह हमने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कारों) के साथ भेजा कि अपनी जाति को अंधेरों से प्रकाश की ओर निकाल ला और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला। निःसंदेह इसमें हर ऐसे व्यक्ति के लिए निश्चय ही बहुत-सी निशानियाँ हैं जो बहुत सब्र करने वाला, बहुत शुक्र करने वाला है।" (इब्राहीम: 5)

02 क़ुरआन में ईसा (अलैहिस्सलाम) और उनकी माता मरियम (अलैहास्सलाम) के बारे में क्या कहा गया है, अल्लाह उन दोनों पर अपनी प्रशंसा और कृपा बरसाए।

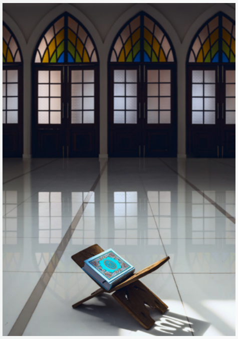

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और (याद करो) जब फ़रिश्तों ने कहा: ऐ मरयम! निःसंदेह अल्लाह ने तुम्हारा चयन कर लिया तथा तुम्हें पवित्र कर दिया और सर्व संसार की स्त्रियों पर तुम्हें चुन लिया है।" (आले इम्रान:42)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"निःसंदेह ईसा का उदाहरण अल्लाह के निकट आदम के उदाहरण की तरह है कि उसे थोड़ी-सी मिट्टी से बनाया, फिर उसे कहा: "हो जा" तो वह हो जाता है।" (आले इम्रान: 59)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"ऐ किताब वालो! अपने धर्म में हद से आगे न बढ़ो और अल्लाह के बारे में सत्य के सिवा कुछ न कहो। मरयम का पुत्र ईसा मसीह केवल अल्लाह का रसूल और उसका 'शब्द' है जिसे (अल्लाह ने) मरयम की ओर भेजा तथा उसकी ओर से एक आत्मा है। अतः अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि (पूज्य) तीन हैं। बाज़ आ जाओ! तुम्हारे लिए बेहतर होगा। अल्लाह केवल एक ही पूज्य है। वह इससे पवित्र है कि उसकी कोई संतान हो। उसी का है जो कुछ आकाशों में हैं और जो कुछ धरती में है और अल्लाह कार्यसाधक के रूप में काफ़ी है। "(अन्-निसा:171)

11 मुसलमान ईसा (अलैहिस्सलाम) और उनकी माता से प्रेम करते हैं।

ईसा (अलैहिस्सलाम) का उल्लेख पवित्र क़ुरआन में सोलह अलग-अलग अवसरों पर स्पष्ट रूप से किया गया है। एक अवसर पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"(तथा याद करो) जब अल्लाह तआला फ़रमाऐगा: ऐ मरयम के पुत्र ईसा! अपने ऊपर तथा अपनी माता के ऊपर मेरा अनुग्रह याद कर, जब मैंने पवित्रात्मा (जिबरील) द्वारा तेरी सहायता की। तू गोद (पालने) में तथा अधेड़ आयु में लोगों से बातें करता था। तथा जब मैंने तुझे किताब और हिकमत तथा तौरात और इंजील की शिक्षा दी। और जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी की आकृति की तरह (रूप) बनाता था, फिर तू उसमें फूँक मारता तो वह मेरी अनुमति से पक्षी बन जाता था और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था और जब तू मुर्दों को मेरी अनुमति से निकाल (जीवित) खड़ा करता था। और जब मैंने बनी इसराईल को तुझसे रोका, जब तू उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया तो उनमें से कुफ़्र करने वालों ने कहा: यह तो स्पष्ट जादू के सिवा कुछ नहीं।" (अल्-माइदा:110)

दूसरी ओर, पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ का नाम पवित्र क़ुरआन में केवल चार बार स्पष्ट रूप से आया है, जबकि ईसा की माता, कुँवारी मरयम का उल्लेख आठ बार हुआ है और उनके नाम पर एक पूरी सूरह (अध्याय) है।

एक अवसर पर अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फ़रमाया:

"(ऐ नबी! उस समय को याद करें) जब फ़रिश्तों ने कहा: ऐ मरयम! निःसंदेह अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से एक शब्द की शुभ सूचना देता है, जिसका नाम 'मसीह़ ईसा बिन मरयम' है। वह दुनिया तथा आख़िरत में महान स्थान वाला और निकटवर्ती लोगों में से होगा।'"(आले इम्रान:45)

एक परिवार के रूप में, उनका उल्लेख पवित्र क़ुरआन में तीन बार हुआ है और उन्हें यह विशेष सम्मान प्राप्त है कि उनके नाम पर एक पूरी सूरह (अध्याय) है — सूरह आल-ए-इमरान — जो सदा के लिए ईमानवालों के दिलों और मन-मस्तिष्क में अंकित है।

12 इस्लाम और जिहाद

इस्लाम में सबसे अधिक गलत समझे जाने वाले शब्दों में से एक है — "जिहाद"। दुर्भाग्यवश, "जिहाद" शब्द का दुरुपयोग किया गया है और इसके परिणामस्वरूप बहुत से लोग इसे युद्ध और आतंकवाद से जोड़ते हैं।

भाषाई दृष्टि से, जिहाद का अर्थ है — भलाई के लिए प्रयास करना या बुराई के विरुद्ध संघर्ष करना। जिहाद को कई रूपों में व्यक्त किया जाता है, किंतु सामान्यतः इसका अर्थ है — स्वयं को नीच इच्छाओं और कुप्रवृत्तियों से दूर रखना। इसका अर्थ यह भी हो सकता है — अत्याचार और उत्पीड़न का विरोध करना, अथवा किसी अन्यायी शासक के सामने डटकर खड़े होना।

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया: "जिहाद करने वाला वह व्यक्ति है जो अल्लाह की ख़ुशी के लिए अपने मन (स्वयं) का विरोध करे (यानी उसकी आज्ञा का पालन करे।)" (इब्ने हिब्बान)

जिहाद को व्यक्त करने के कुछ प्रमुख तरीके निम्नलिखित हैं:

ग़ैर-मुस्लिमों को इस्लाम की शिक्षाओं से अवगत कराना

ग़ैर-मुस्लिमों को इस्लाम की विषय-वस्तु से परिचित कराना, पवित्र क़ुरआन के प्रमाणों और सहायक व्याख्याओं के माध्यम से उन्हें स्पष्ट रूप से समझाना, आवश्यकता पड़ने पर तर्कपूर्ण संवाद करना तथा उनकी आलोचनाओं और आरोपों को धैर्यपूर्वक सुनना — यह सब जिहाद के रूप हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "अतः आप काफ़िरों की बात न मानें और इस (क़ुरआन) के द्वारा उनसे बड़ा जिहाद करें।" (अल्-फ़ुर्क़ान :52)

नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना

नेकी का आदेश देना और बुराई से रोकना — यह पैग़ंबरों और उनके अनुयायियों की परंपरा रही है। नबी ﷺ ने फ़रमाया:

"मुझसे पहले अल्लाह ने जो भी नबी भेजे, उनमें से हर एक की उम्मत में शागिर्द और साथी होते थे जो उनके तरीक़े पर चलते और उनके आदेशों का पालन करते थे। फिर उनके बाद ऐसी पीढ़ियाँ आईं जो वह कहती थीं, उसे वे ख़ुद नहीं करती थीं और वह काम करती थीं जिनका उन्हें हुक्म नहीं दिया गया था। जिसने उनके विरुद्ध हाथ से जिहाद किया वह मोमिन है। जिसने ज़बान से जिहाद किया वह मोमिन है। और जिसने दिल से जिहाद किया वह मोमिन है। और इससे आगे राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं।" (मुस्लिम)

अन्यायी शासक के विरुद्ध सच बोलना

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया: "सबसे उत्तम जिहाद यह है कि अन्यायी शासक के सामने सच बात कही जाए।" (अबू दाऊद)

माता-पिता के साथ आदरपूर्ण व्यवहार करना

एक व्यक्ति नबी ﷺ के पास आया और किसी एक युद्ध में शामिल होने की अनुमति माँगी। नबी ﷺ ने पूछा, "क्या तुम्हारे माता-पिता जीवित हैं?" उस व्यक्ति ने कहा, "हाँ।" नबी ﷺ ने फ़रमाया, "तो फिर उनकी सेवा करके अपना जिहाद करो।" (बुख़ारी)

ज्ञान की तलाश करना

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई मेरी इस मस्जिद में आए और केवल किसी अच्छे उद्देश्य से आए — जैसे सीखने या सिखाने के लिए — तो उसका दर्जा उस व्यक्ति के समान है जो अल्लाह की राह में जिहाद करता है। और जो किसी अन्य उद्देश्य से आए, उसकी मिसाल उस व्यक्ति जैसी है जो दूसरों की संपत्ति पर नज़र रखता है — यानी वह कोई नेकी नहीं कमा रहा।" (इब्ने माजा)

ज्ञान प्राप्त करने के लिए यात्रा करना भी जिहाद का एक रूप है।

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति ज्ञान की तलाश में निकलता है, उसे अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला समझा जाता है — यहाँ तक कि वह वापस लौट आए।" (तिरमिज़ी)

इबादत और उपासना के कार्य करना

नबी ﷺ से पूछा गया, "ऐ अल्लाह के रसूल, क्या महिलाओं पर भी जिहाद फ़र्ज़ है?" आपने फ़रमाया: "हाँ। उन पर एक ऐसा जिहाद है जिसमें लड़ाई नहीं है — हज (स्वैच्छिक तीर्थयात्रा) या उमरा (छोटी तीर्थयात्रा)।" (इब्ने माजा)

आपने यह भी फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें वे कार्य न बताऊँ जो पापों की माफ़ी का और नेकियों में वृद्धि का कारण बनते हैं? — कठिन परिस्थितियों में (जैसे ठंड में) वुज़ू करना, मस्जिद तक पैदल चलकर अधिक क़दम उठाना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का मस्जिद में इंतज़ार करना। बेशक ये कार्य दुश्मन से सरहद की रखवाली करने के बराबर हैं।" (मुस्लिम)

- अन्यायी शासक के विरुद्ध आवाज़ उठाना जिहाद का एक रूप माना जाता है।

- ज्ञान की तलाश करना एक ऐसा नेक कार्य है जो जिहाद के समतुल्य है।

- नैतिक सुधार और सामाजिक सेवा

  जो मुसलमान नैतिक उत्थान को प्राथमिकता देते हैं और अपने समाज में सेवा कार्य करते हैं, वे भी जिहाद ही कर रहे हैं।

  नबी ﷺ ने फ़रमाया: "विधवाओं और ग़रीबों की देखभाल करने वाला उस व्यक्ति के समान है जो अल्लाह की राह में जिहाद करे, या उस व्यक्ति के समान जो पूरी रात नमाज़ पढ़े और पूरे दिन रोज़ा रखे।" (बुख़ारी)

सैन्य प्रयास — एक अंतिम विकल्प

जिहाद का अर्थ सैन्य प्रयास भी हो सकता है। इसे दूसरों के अधिकारों के हनन या किसी भी आक्रामकता को समाप्त करने के लिए अंतिम उपाय के रूप में देखा जाता है। कभी-कभी अन्याय की तलवार को रोकने के लिए न्याय की तलवार ज़रूरी होती है — ठीक वैसे ही जैसे पुलिस का कार्य होता है। फिर भी युद्ध के समय भी मुसलमानों को नैतिकता बनाए रखने का आदेश दिया गया है। यातना देना सख्त वर्जित है और युद्ध के दौरान नागरिकों, महिलाओं, बच्चों या बुज़ुर्गों को नुकसान पहुँचाना भी पूरी तरह निषिद्ध है। इसके अतिरिक्त, एक वैध जिहाद की घोषणा केवल सरकारी अधिकार द्वारा की जा सकती है — किसी व्यक्ति विशेष या गुट द्वारा नहीं की जा सकती है।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह के नाम पर और अल्लाह की राह में लड़ो… वादे मत तोड़ो, अंग-भंग मत करो और छोटे बच्चों को मत मारो।" (मुस्लिम)

इस्लाम इबादतगाहों को नष्ट करने या अपवित्र करने, जानवरों को मारने या तकलीफ़ देने और पेड़ों को काटने को भी हराम (निषिद्ध) ठहराता है।

पहले ख़लीफ़ा अबू बक्र की नसीहत

मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिमों के बीच लड़ाई के समय, नबी ﷺ के बाद पहले ख़लीफ़ा अबू बक्र (रज़ि०) अपने सेनापतियों को यह नसीहत किया करते थे:

"मैं तुम्हें दस बातों का हुक्म देता हूँ। इन्हें दिल में बसा लो: विश्वासघात मत करो, माल-ए-ग़नीमत में हेराफेरी मत करो और वादे मत तोड़ो। अंग-भंग मत करो, महिलाओं, छोटे बच्चों या बुज़ुर्गों को मत मारो। खजूर के पेड़ मत उखाड़ो और मत जलाओ। फलदार पेड़ मत काटो। बकरियाँ, गाएँ या ऊँट — खाने के अलावा मत काटो। और तुम्हारा गुज़र ऐसे लोगों के पास से होगा जो मठों में एकांत में रहते हैं तो उन्हें और उनकी इबादत को छोड़ दो।" (तबरी, खंड 3)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"…और किसी ऐसे प्राणी की हत्य न करो, जिस (की हत्या) को अल्लाह ने हराम ठहराया हो, सिवाय इसके कि उसका कोई उचित कारण हो। ये बातें हैं जिनकी अल्लाह ने तुम्हें ताकीद की है ताकि तुम समझो।" (अल्-अन्आम:151)

13 इस्लाम — शांति का धर्म

इस्लाम का अर्थ है अल्लाह के सामने समर्पण करना, उसकी आज्ञा का पालन करना और उसके सिवा किसी अन्य की उपासना से मुक्त रहना। कोई भी भलाई ऐसी नहीं जिसका आदेश इस्लाम ने न दिया हो और कोई भी बुराई ऐसी नहीं जिसे उसने वर्जित न किया हो। इस्लाम को अपने जीवन में उतारना इस बात की गारंटी देता है कि हर व्यक्ति सुरक्षा और शांति के साथ जी सके — उस व्यवस्था के प्रकाश में जो सभी के अधिकारों की रक्षा करती है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"आप उनसे कह दें कि आओ, मैं तुम्हें (आयतें) पढ़कर सुना दूँ कि तुम पर, तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम किया है? वह यह है कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी न बनाओ और माता-पिता के साथ उपकार करो तथा निर्धनता के भय से अपनी संतानों की हत्या न करो। हम तुम्हें रोज़ी देते हैं और उन्हें भी देंगे। और निर्लज्जता की बातों के निकट भी न जाओ, खुली हों अथवा छिपी। और किसी ऐसे प्राणी की हत्य न करो, जिस (की हत्या) को अल्लाह ने हराम ठहराया हो, सिवाय इसके कि उसका कोई उचित कारण हो। ये बातें हैं जिनकी अल्लाह ने तुम्हें ताकीद की है ताकि तुम समझो। और अनाथ के धन के पास न जाओ, परंतु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाए। तथा नाप-तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राणी पर उसकी शक्ति से अधिक बोझ नहीं डालते। और जब बोलो तो न्याय की बात बोलो, यद्यपि मामला किसी निकटवर्ती का ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो। उसने तुम्हें इन बातों की ताकीद की है ताकि तुम याद रखो।" (अल्-अन्आम: 151-152)

अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया:

"निःसंदेह अल्लाह न्याय और उपकार और निकटवर्तियों को देने का आदेश देता है और अश्लीलता और बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।" (अन्-नह्ल: 90)

अतः इस्लाम का दीन एक ऐसा व्यापक शांति का दीन है जो इस शब्द के हर अर्थ में शांति को समेटे हुए है। यह मुस्लिम समाज के आंतरिक स्तर पर भी लागू होता है,

जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और जो लोग ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को कष्ट पहुँचाते हैं, बिना इसके कि उन्होंने कुछ (अपराध) किया हो तो उन्होंने मिथ्यारोपण और स्पष्ट पाप का बोझ उठाया।"। (अल्-अहज़ाब: 58)

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे सुरक्षित रहें और मुहाजिर वह है जिसने उन चीज़ों को छोड़ दिया हो जिन्हें अल्लाह ने हराम किया है।" (मुत्तफ़क़ अलैह)

आपने यह भी फ़रमाया:

"मोमिन वह है जिस पर लोग भरोसा करें..." (तिरमिज़ी)

इस्लाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी शांति प्रदान करता है जो ऐसे मैत्रीपूर्ण संबंधों के ज़रिए स्थापित होती है जो सुरक्षा, स्थिरता और इस्लाम की बुनियादों पर टिके हों। इसके अलावा, एक मुस्लिम समाज किसी दूसरे समाज पर ज़ुल्म नहीं करता — विशेष तौर पर उन लोगों पर जो सच्चे दिल से ईमान रखते हैं — और न ही उनके अनुयायियों से दुश्मनी मोल लेता है। जैसा कि अल्लाह के इन शब्दों से ज़ाहिर है:

"ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूर्ण रूप से प्रवेश कर जाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो। निश्चय वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" (अल्-ब-क़-रा: 208)

इस्लाम का दीन न्याय का हुक्म देता है और अत्याचार से रोकता है — यहाँ तक कि उन लोगों के साथ भी जो इन उसूलों की मुख़ालफ़त करते हों। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए मज़बूती से क़ायम रहने वाले, न्याय के साथ गवाही देने वाले बन जाओ। तथा किसी समूह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर हरगिज़ न उभारे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़्वा (अल्लाह से डरने) के अधिक निकट है और अल्लाह से डरो। निःसंदेह अल्लाह उससे भली-भाँति अवगत है जो तुम करते हो।" (अल्-माइदा: 8)

- अस-सलाम — जो अल्लाह के सुंदर नामों में से एक है, जिसका अर्थ है शांति का स्रोत — अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "वह अल्लाह ही है, जिसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह बादशाह है, अत्यंत पवित्र, हर दोष से मुक्त, पुष्टि करने वाला, निगरानी करने वाला, प्रभुत्वशाली, शक्तिशाली, बहुत बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह, उससे जो वे (उसका) साझी बनाते हैं।" (अल्-हश्र: 23)

- अस-सलाम जन्नत के नामों में से भी एक है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उनके लिए उनके पालनहार के पास सलामती का घर है। और वह उनका संरक्षक है, उन कर्मों के कारण जो वे करते थे।" (अल्-अन्आम: 127)

- अस-सलाम इस दुनिया में मुसलमानों का आपसी अभिवादन भी है और आखिरत में जन्नतियों का अभिवादन भी है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "जिस दिन वे अपने पालनहार से मिलेंगे, उनका अभिवादन सलाम होगा। और उसने उनके लिए सम्मानजनक प्रतिफल तैयार कर रखा है।" (अल्-अहज़ाब: 44)

السلام عليكم

"अस्-सलामु अलैकुम" एक अरबी अभिवादन है। इसका अर्थ है — "आप पर शांति हो" — यह एक स्वागत-वाक्य भी है और विदाई-वाक्य भी और इसे अंग्रेज़ी के "hello" के समतुल्य माना जा सकता है।

यदि आप किसी मुसलमान को किसी दूसरे मुसलमान से मिलते हुए देखें तो आप उन्हें कहते सुनेंगे — "अस-सलामु अलैकुम"! यह एक अभिवादन भी है और एक दुआ भी जो अभिवादन करने वाले और अभिवादन पाने वाले — दोनों के लिए शांति, प्रसन्नता और सुकून लेकर आती है। इसका कारण यह है कि इस अभिवादन में सुरक्षा और अमन का भाव निहित है।

नबी ﷺ ने इसे व्यक्ति के ईमान को परिपूर्ण करने वाले कार्यों में से एक के रूप में स्थापित किया। आपने ﷺ फ़रमाया:

"तुम जन्नत में तब तक नहीं जाओगे जब तक ईमान नहीं लाते और तुम ईमान वाले तब तक नहीं बन सकते जब तक एक-दूसरे से मुहब्बत नहीं करते। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ कि अगर तुम उसे करो तो आपस में मुहब्बत हो जाए? आपस में सलाम को आम करो!" — (मुस्लिम)

अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमें सिखाया कि यह सबसे उत्तम कार्यों में से एक है। इसकी वजह यह है कि सलाम — चाहे किया जाए या सुना जाए — दिलों को करीब लाता है और उन्हें नर्म करता है। यह मतभेदों और नफ़रत को भी दूर करता है। जब नबी ﷺ से पूछा गया, "इस्लाम का कौन-सा काम सबसे बेहतर है?" तो आपने ﷺ फ़रमाया:

"लोगों को खाना खिलाओ और सलाम करो — हर उस शख़्स को जिसे तुम जानते हो और जिसे नहीं जानते!" — (बुखारी और मुस्लिम)

इस प्रकार, इस्लाम का दीन अपने साथ ऐसे नियम और विधान लेकर आया जो जीवन के हर पहलू को समेटताहैहैं — जैसे कि युद्ध, विवाह, अर्थव्यवस्था, राजनीति, इबादत आदि। यह एक आदर्श और सदाचारी समाज के निर्माण के लिए था ताकि एक मुसलमान के अपने रब के साथ, अपने समाज के साथ और अपने आस-पास की दुनिया के साथ संबंध को — चाहे वह मानव जगत हो या पशु-पक्षी व वनस्पति जगत सबको सुव्यवस्थित और संतुलित किया जा सके।

समस्त मानवजाति मिलकर भी इस्लाम जैसी कोई चीज़ नहीं बना सकती। इस तरह की परिपूर्णता और व्यापकता वाला दीन इस योग्य है कि उसे अपनाया जाए, उसका नेवता दिया जाए और उसका सम्मान किया जाए।

14 इस्लाम और समाज

इस्लाम यह आदेश देता है कि मनुष्य को अपने पर्यावरण की देखभाल करनी चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए और इसीलिए इस्लाम किसी भी प्रकार से उसे प्रदूषित करने से मना करता है। इस्लाम यह शिक्षा निम्नलिखित तरीकों से देता है:

- उपयोगी पेड़-पौधे लगाने की प्रेरणा

इस्लाम उपयोगी पेड़-पौधे लगाने को प्रोत्साहित करता है। अल्लाह के दूत, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"जो भी मुसलमान कोई पेड़ या फ़सल लगाए और उसका फल पक्षी, इंसान या जानवर खाएँ तो वह उसके लिए दान (सदक़ा) माना जाएगा।" (बुखारी)

- नुकसानदेह चीज़ों को हटाने की प्रेरणा

इस्लाम उन चीज़ों को हटाने को प्रोत्साहित करता है जो किसी को नुकसान पहुँचा सकती हैं। इस्लाम के पैग़म्बर ﷺ ने फ़रमाया:"रास्ते से तकलीफ़देह चीज़ को हटाना भी दान (सदक़ा) है।" (बुखारी)

- बीमारियों और महामारियों में एकांतवास की प्रेरणा

इस्लाम बीमारियों और महामारियों से पीड़ित लोगों को अलग-थलग रखने को प्रोत्साहित करता है ताकि बीमारी दूसरे समाजों में न फैले और दूसरों की जानें सुरक्षित रहें। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

"यदि तुम किसी जगह प्लेग (महामारी) फैलने की खबर सुनो तो वहाँ मत जाओ; और यदि वह उस जगह फैल जाए जहाँ तुम पहले से हो तो वहाँ से बाहर मत निकलो।" (बुखारी)

- जानवरों और पक्षियों की बेवजह हत्या की मनाही

इस्लाम जानवरों और पक्षियों को बिना कारण, मारने से सख्ती से मना करता है। अल्लाह के दूत, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया: "जो कोई बिना किसी कारण के किसी गौरैया को मारे तो वह क़यामत के दिन अल्लाह के सामने फ़रियाद करेगी — 'ऐ अल्लाह! फलाँ ने मुझे बिना किसी वजह या फ़ायदे के मार डाला!" (नसाई)

- समाज को किसी भी रूप में गंदा करने की मनाही

इस्लाम समाज को किसी भी तरह से प्रदूषित करने से मना करता है। अल्लाह के रसूल, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"उन दो कामों से बचो जिनकी वजह से लोग एक-दूसरे पर लानत भेजते हैं।" उनके सहाबा (साथियों) ने पूछा — "ऐ अल्लाह के रसूल! वे दो काम कौन से हैं जिनकी वजह से लोग लानत भेजते हैं?" आप ﷺ ने फ़रमाया — "यह कि वह उन जगहों पर हाजत (शौच) करे जहाँ लोग चलते हों, या जहाँ वे छाँव में बैठते हों।" (मुस्लिम)

15 इस्लाम और स्वच्छता

- किसी अन्यायी शासक के विरुद्ध आवाज़ उठाना जिहाद का एक रूप माना जाता है।

इस्लाम स्वच्छता का धर्म है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"ऐे आदम की संतान! प्रत्येक नमाज़ के समय अपनी शोभा धारण करो। तथा खाओ और पियो और हद से आगे न बढ़ो। निःसंदेह वह हद से आगे बढ़ने वालों से प्रेम नहीं करता।" (अल्-आराफ़:31)

यह पवित्रता का धर्म है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"निःसंदेह अल्लाह उनसे प्रेम करता है जो बहुत तौबा करने वाले हैं और उनसे प्रेम करता है जो बहुत पाक रहने वाले हैं।" (अल्-ब-क़-रा :222)

पवित्रता नमाज़ की स्वीकृति के लिए एक अनिवार्य शर्त है और नमाज़ वह इबादत है जिसे एक मुसलमान अपनी दिनचर्या में कम से कम पाँच बार अदा करता है। इस्लाम यह भी अनिवार्य करता है कि वीर्यपात या संभोग के पश्चात पूर्ण स्नान किया जाए और उन इबादतों को अदा करने से पूर्व, पूर्ण स्नान को अत्यंत प्रोत्साहित किया जाता है जो इस्लाम के स्पष्ट प्रतीक हैं — जैसे जुमे की नमाज़ और मक्का की बड़ी तथा छोटी हज।

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है:

"ऐे ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों को और अपने हाथों को कुहनियों समेत धो लो और अपने सिरों का मसह् करो तथा अपने पाँवों को टखनों समेत (धो लो)। और यदि तुम जनाबत की हालत में हो तो स्नान कर लो। तथा यदि तुम बीमार हो, अथवा यात्रा में हो, अथवा तुममें से कोई शौचकर्म से आया हो, अथवा तुमने स्त्रियों से सहवास किया हो, फिर कोई पानी न पाओ तो पाक मिट्टी का क़सद करो और उससे अपने चेहरों तथा हाथों पर मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे। लेकिन वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और ताकि अपनी अनुग्रह तुम पर पूरी करे ताकि तुम शुक्र करो।" (अल्-माइदा:6)

यह भी प्रोत्साहित किया जाता है कि व्यक्ति अपने मुँह और दाँतों को साफ़ रखे। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

"यदि मुझे अपने अनुयायियों के लिए कठिनाई का अंदेशा न होता तो मैं उन्हें हर नमाज़ से पहले मिसवाक करने का आदेश देता।" (बुखारी)

इस्लाम उन स्थानों को साफ़ और पवित्र रखने को प्रोत्साहित करता है जो कीटाणुओं और गंदगी के पनपने का कारण बन सकते हैं। अल्लाह के रसूल, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"पाँच चीज़ें उस स्वाभाविक प्रकृति में से हैं जिस पर अल्लाह ने मनुष्यों को पैदा किया है: खतना करना, जघन के बाल साफ़ करना, बगल के बाल उखाड़ना, मूँछें छोटी करना और नाखून काटना।" (बुखारी)

- सलात जो अरबी भाषा में प्रार्थना के लिए प्रयुक्त शब्द है, इस्लाम धर्म के "पाँच स्तंभों" में से एक है और प्रत्येक मुसलमान के लिए एक अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य है। यह एक शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उपासना का कार्य है जिसे प्रतिदिन निर्धारित समयों पर पाँच बार अदा किया जाता है।

16 इस्लाम और ज्ञान

इस्लाम धर्म सभी लोगों को ज्ञान प्राप्त करने और उसे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह अज्ञानता की निंदा करता है और उससे सावधान करता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"अल्लाह तुममें से उन लोगों के दर्जे ऊँचे कर देगा जो ईमान लाए तथा जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है।" (अल्-मुजादिला:11)

इस्लाम ज्ञान को खोजने, सीखने और सिखाने के प्रयास को जन्नत तक पहुँचाने वाला साधन मानता है। अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"जो कोई ज्ञान की तलाश में कोई रास्ता अपनाता है, अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है।" (अबू दाऊद)

आप ﷺ ने ज्ञान को छुपाने से मना फ़रमाया क्योंकि उसे प्राप्त करना हर व्यक्ति पर अनिवार्य है। अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"जो कोई ज्ञान को छुपाएगा, उसे क़यामत के दिन आग की लगाम पहनाई जाएगी।" (इब्ने हिब्बान)

इस्लाम विद्वानों को सर्वोच्च सम्मान देता है और यह माँग करता है कि उन्हें उनका उचित आदर-सम्मान दिया जाए। अल्लाह के रसूल, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"वह मेरी उम्मत में से नहीं जो अपने बड़ों का आदर न करे, छोटों पर दया न करे और किसी आलिम का हक़ न पहचाने।" (अहमद)

नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ ने हमें अपनी बातों में विद्वान की हैसियत से आगाह फ़रमाया:

"...आसमानों और ज़मीन के तमाम बाशिंदे, यहाँ तक कि समुद्र की गहराइयों में मौजूद मछलियाँ भी आलिम के लिए मग़फ़िरत की दुआ करती हैं। एक आलिम की फ़ज़ीलत एक नफ़्ल इबादत करने वाले पर ऐसे है जैसे पूरे चाँद की बाक़ी सभी तारों पर। आलिम ही नबियों के वारिस हैं — नबियों ने विरासत में न सोना छोड़ा, न चाँदी, बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ ज्ञान छोड़ा; और जिसने यह ज्ञान प्राप्त किया, उसने वास्तव में एक बड़ी और भरपूर दौलत पा ली।" (तिर्मिज़ी)

17 आधुनिक विज्ञान पर इस्लामी संस्कृति का प्रभाव

जो व्यक्ति इस बात पर विचार करता है कि आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने किस प्रकार विशाल छलांगें लगाई हैं और अपनी वर्तमान अवस्था तक पहुँची हैं वह निश्चित रूप से इस बात से सहमत होगा कि इसका एक कारण इस्लामी संस्कृति भी है, जिसने विशाल मात्रा में ज्ञान को संचारित और प्रसारित किया तथा अनेक वैज्ञानिक विद्वानों को जन्म दिया।

सी.एच. हास्किंस (1) ने कहा: "यह व्यापक तथ्य अटल है कि स्पेन के अरब, पश्चिमी यूरोप के लिए नवीन ज्ञान के प्रमुख स्रोत थे।"

वही लोग थे जिन्होंने उन आधारभूत सिद्धांतों की नींव रखी, जिन पर आधुनिक सभ्यता ने अपनी प्रगति की इमारत खड़ी की। जो कोई भी एयरोस्पेस के तकनीकी शब्दकोश (2) का अवलोकन करे वह इस निष्कर्ष पर अवश्य पहुँचेगा कि ज्ञात तारों में से साठ प्रतिशत के नाम अरबी भाषा से व्युत्पन्न हैं।

आरंभिक मुस्लिम विद्वानों की पुस्तकें और रचनाएँ वे प्रमुख संदर्भ ग्रंथ थे, जिनसे पश्चिम ने — विशेष रूप से यूरोपीय लोगों ने — पुनर्जागरण काल के दौरान लाभ उठाया। इनमें से अनेक ग्रंथ यूरोपीय विश्वविद्यालयों में पाठ्य सामग्री के रूप में प्रयुक्त होते थे।

(1) सी.एच. हास्किंस — चार्ल्स होमर, 1870–1937, अमेरिकी इतिहासकार, मध्यकालीन इतिहास के विशेषज्ञ

(2) विलियम एच. एलन, एयरोस्पेस के तकनीकी शब्दों का शब्दकोश, प्रथम संस्करण.

डफरिन और अवा के मार्क्विस ने कहा: "यूरोप को मध्य युग के अंधकार से बाहर निकालने में मुसलमानों के विज्ञान, मुसलमानों की कला और मुसलमानों के साहित्य का ऋण सर्वाधिक रहा है।" (3)

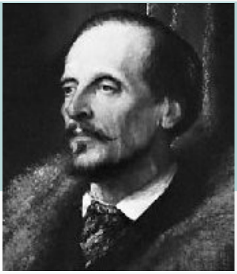

(3) डफरिन स्पीचेज़ डेलीवर्ड इन इंडिया, लंदन, 1890, पृष्ठ 24.

जे.एच. डेनिसन ने कहा:

"पाँचवीं और छठी शताब्दी में सभ्य संसार अराजकता की कगार पर खड़ा था। वे पुरानी भावनात्मक संस्कृतियाँ, जिन्होंने सभ्यता को संभव बनाया था —उन्होंने मनुष्यों को एकता की भावना और अपने शासकों के प्रति श्रद्धा का बोध दिया था — अब चरमरा चुकी थीं और उनकी जगह लेने में सक्षम कोई नई व्यवस्था नहीं मिली थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह महान सभ्यता जिसे चार हज़ार वर्षों की अथक साधना से खड़ा किया गया था, अब विघटन की दहलीज़ पर है और मानवजाति फिर से उस बर्बरता की ओर लौट सकती है जहाँ हर कबीला और हर संप्रदाय दूसरे का शत्रु होता था और जहाँ कानून और व्यवस्था का कोई नाम-निशान न था।

पुरानी कबीलाई मान्यताओं ने अपना प्रभाव खो दिया था। ईसाइयत द्वारा स्थापित नई मान्यताएँ एकता और व्यवस्था के बजाय विभाजन और विनाश को जन्म दे रही थीं। यह एक त्रासदी से भरा समय था। सभ्यता उस विशाल वृक्ष के समान थी जिसकी शाखाएँ संसार भर पर छाई हुई थीं और जिसकी डालियों पर कला, विज्ञान और साहित्य के सुनहरे फल लहलहाते थे — परंतु अब वह वृक्ष डगमगा रहा था और भीतर से सड़ चुका था। क्या ऐसी कोई भावनात्मक संस्कृति थी जो मानवजाति को पुनः एकता के सूत्र में पिरो सके और सभ्यता को बचा सके?

इन्हीं लोगों के बीच मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (ﷺ) नामक वह महापुरुष जन्मा जो पूर्व और दक्षिण की समस्त ज्ञात दुनिया को एकता के बंधन में बाँधने वाला था।" (1)

(1) जे.एच. डेनिसन, अमेरिकी मनोवैज्ञानिक और Emotion as the Basis of Civilization के लेखक, लंदन, 1928, पृष्ठ 265, 269.

- यह चित्र बग़दाद से प्राप्त बारहवीं शताब्दी के सौरमंडल के एक प्रतिरूप को दर्शाता है।

(2) साचाऊ, ई. (1879)। प्राचीन राष्ट्रों का कालक्रम; अलबेरूनी की अरबी कृति 'आसार-उल-बाकिया' अर्थात् 'अतीत के अवशेष' का अंग्रेज़ी अनुवाद, लंदन: ग्रेट ब्रिटेन एवं आयरलैंड के ओरिएंटल ट्रांसलेशन फ़ंड हेतु डब्ल्यू.एच. एलन द्वारा प्रकाशित।

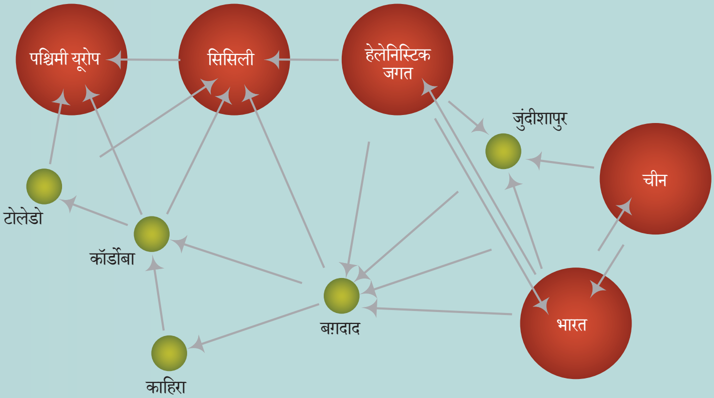

यूरोप के अंधकार युग को आलोकित करना

- भारत, चीन और हेलेनिस्टिक जगत में उत्पन्न वैज्ञानिक ज्ञान को मुस्लिम विद्वानों ने खोजा और तत्पश्चात् इस्लामी जगत के विभिन्न शिक्षा केंद्रों में उसका अनुवाद, परिष्करण, संश्लेषण और संवर्धन किया गया — जहाँ से यह ज्ञान पश्चिमी यूरोप तक फैला। (चिकित्सा का इतिहास, यूरोपीय चिकित्सा की अरबी जड़ें — डेविड डब्ल्यू. त्शान्ज़, MSPH, PhD। साथ ही देखें: www.hmc.org.qa/hmc/heartviews/H-V-v420%N29/.htm)*. इसके अतिरिक्त, मुस्लिम विद्वानों ने कुछ ऐसे अभूतपूर्व शास्त्रों की भी नींव रखी जो इससे पहले कभी अस्तित्व में नहीं थे।

मुसलमानों ने समस्त तकनीकी, वैज्ञानिक और बौद्धिक क्षेत्रों में असाधारण प्रगति की थी। यहाँ हम विभिन्न क्षेत्रों के कुछ उल्लेखनीय विद्वानों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करेंगे।

अल-ख्वारिज़्मी (780–850 ई.) गणित, बीजगणित, लघुगणक और ज्यामिति के क्षेत्रों में एक महान विद्वान थे। वे संभवतः उन महानतम गणितज्ञों में से एक थे जो कभी इस धरती पर हुए। वास्तव में, वे गणित की कई शाखाओं और मूलभूत अवधारणाओं के संस्थापक थे। वे बीजगणित के भी जनक थे।

अल-बिरूनी (973–1050 ई.) अनेक क्षेत्रों में एक महान विद्वान थे। उन्होंने खगोलशास्त्र से लेकर गणित तक, गणितीय भूगोल से लेकर यांत्रिकी तक, औषधि विज्ञान और इतिहास जैसे विषयों पर लेखन किया। अल-बिरूनी ने गैलीलियो से छः सौ वर्ष पूर्व ही पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के सिद्धांत पर विचार-विमर्श किया था!

जर्मन प्राच्यविद्वान ई. सखाऊ ने अल-बिरूनी के बारे में कहा: "वे मानव इतिहास में ज्ञात सबसे महान बुद्धिजीवी थे।" (2)

मुसलमानों के रूप में हम कहते हैं कि मानव इतिहास में ज्ञात सबसे महान बुद्धिजीवी हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ हैं।

चिकित्सा और औषधि विज्ञान के क्षेत्र में, मुस्लिम विद्वानों ने अपनी रचनाओं में ज्ञान का एक अमूल्य भंडार छोड़ा, जिसका उपयोग आधुनिक चिकित्सा विज्ञान को आगे बढ़ाने में किया गया। इन विद्वानों में शामिल थे —

इब्न रुश्द (एवेरोज़, 1126–1198 ई.) एक स्पेनी (स्पेनिश) दार्शनिक और चिकित्सक थे। वे दर्शनशास्त्र और इस्लामी कानून, गणित तथा चिकित्सा विज्ञान के महारथी थे।

• इब्न रुश्द

इब्न अन-नफ़ीस (1213–1288 ई.) एक ऐसे चिकित्सक थे जो मुख्य रूप से इस बात के लिए प्रसिद्ध हैं कि उन्होंने सर्वप्रथम रक्त के फुफ्फुसीय परिसंचरण (Pulmonary Circulation) का वर्णन किया। उन्होंने अंग्रेज़ हार्वे और स्पेनिश मायकेल सर्वेटस से सैकड़ों वर्ष पहले ही रक्त परिसंचरण की खोज कर ली थी।

अम्मार इब्न अली अल-मोसिली इब्न ईसा अल-काह्हाल नेत्र विज्ञान में अत्यंत कुशल थे। उन्होंने शल्य-चिकित्सा (Operations) में उपयोग होने वाले विशेष उपकरणों का आविष्कार किया, जैसे कि "इंजेक्शन सिरिंज" — एक खोखली सुई।

• इब्न अन-नफ़ीस

अल-हसन इब्न अल-हैसम (अल्हाज़ेन, 965–1040 हि.) एक महान गणितज्ञ थे। वे प्रकाशिकी (Optics), अभियांत्रिकी (Engineering) और खगोलशास्त्र (Astronomy) में अग्रणी थे। जाम्बतिस्ता देला पोर्टा के अनुसार, अल-हसन पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह समझाया कि क्षितिज के पास आने पर चंद्रमा और सूर्य का आकार बड़ा क्यों दिखाई देता है। प्रकाशिकी पर उनका सात खंडों में लिखा ग्रंथ किताब अल-मनाज़िर (Book of Optics) संभवतः वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करने वाली सबसे प्रारंभिक रचना है। उन्होंने सिद्धांतों को परखने के लिए प्रयोगों के परिणामों का उपयोग किया।

(1) **लियोनार्ड, आर्थर ग्लिन.** (1909). इस्लाम, उसके नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य: एक तर्कसंगत और मनोवैज्ञानिक अध्ययन। लंदन: लुज़ाक.

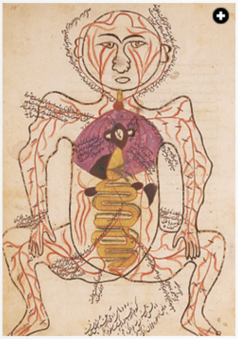

• अबू बकर अर-राज़ी

अल-मनसूरी और अबू बकर अर-राज़ी अत्यंत प्रतिभाशाली और बहुमुखी चिकित्सक थे। उन्होंने चिकित्सा विज्ञान और दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में मौलिक एवं स्थायी योगदान दिया।

मुवफ्फक अल-बगदादी और अबुल-कासिम अज़-ज़हरावी दंत चिकित्सा (Dental Practices) के क्षेत्र में विख्यात थे। उन्होंने इस विषय पर पुस्तकें लिखीं और शल्य-चिकित्सा में प्रयुक्त उपकरणों के चित्र तथा उनके उपयोग की विधि भी प्रस्तुत की।

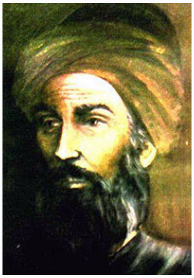

• अज़-ज़हरावी

भूगोल और भूविज्ञान के क्षेत्र में भी अनेक उल्लेखनीय विद्वानों का नाम लिया जा सकता है, जिनमें से एक हैं:

शरीफ अल-इदरीसी (1100–1165 हि.) एक मानचित्रकार, भूगोलवेत्ता और यात्री थे। वे विश्व के अपने उत्कृष्ट मानचित्रों के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने नौवहन (Navigation) उपकरणों का भी आविष्कार किया। अनेक मुस्लिम विद्वानों ने सभ्यता के विकास में भाग लिया और उसे आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया। जो अधिक जानना चाहते हैं, उन्हें विशेष रूप से इस विषय पर लिखी गई पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। कई बार मुस्लिम विद्वानों द्वारा लिखे गए शोध-कार्यों की नकल की गई और उन्हें अनुचित रूप से दूसरों के नाम से प्रस्तुत किया गया।

• शरीफ अल-इदरीसी

• एस्ट्रोलेब: मुसलमानों द्वारा नौवहन के लिए आविष्कृत एक महत्त्वपूर्ण उपकरण। सामने की जालीदार प्लेट (Rete Plate) पर घुमावदार कीलों की नोकें सबसे चमकीले तारों की स्थितियाँ दर्शाती हैं और प्रत्येक कील के आधार पर उस तारे का नाम अंकित होता है। पिछली प्लेट जिसे मेटर (Mater) कहते हैं, पर प्रक्षेपित निर्देशांक रेखाएँ (Projected Coordinate Lines) उकेरी गई हैं। यह उपकरण कैम्ब्रिज के व्हिपल म्यूज़ियम ऑफ द हिस्ट्री ऑफ साइंस में संग्रहीत है।

मेजर आर्थर ग्लिन लियोनार्ड [1] ने कहा:
"क्या हम जो आज स्वयं को संस्कृति और सभ्यता की सर्वोच्च चोटी पर मानते हैं, यह नहीं मानते कि यदि अरबों की उच्च संस्कृति, उनकी सभ्यता, उनकी बौद्धिक और सामाजिक उत्कृष्टता तथा उनकी व्यवस्था की सुदृढ़ता न होती तो यूरोप आज भी अज्ञानता के अंधकार में डूबा रहता?"

18 इस्लामी संस्कृति की विशेषताएँ

• नेत्र शारीरिक रचना — एक प्राचीन मुस्लिम चिकित्सक की पुस्तक से ली गई छवि

- ज्ञान की खोज एक धार्मिक कर्तव्य है जिसे पूरा करने के लिए इस्लाम सभी मुसलमानों को प्रोत्साहित करता है।

- बीते युग के मुस्लिम विद्वानों ने अपने ज्ञान का उपयोग लोगों की आस्था को मज़बूत करने के लिए किया, जबकि इस युग के विद्वान अपने ज्ञान का उपयोग लोगों की आस्था को कमज़ोर करने के लिए करते हैं।

- बीते युग के मुस्लिम विद्वानों ने अपने ज्ञान का उपयोग मानवजाति की सेवा के लिए किया, जबकि आज के अधिकांश विद्वान अपने ज्ञान का उपयोग शोषण और स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के लिए करते हैं।

  इस युग के वैज्ञानिकों ने परमाणु बम, हाइड्रोजन बम और अन्य विनाशकारी हथियारों का आविष्कार किया। इसके बाद उन्होंने दूसरों को इन हथियारों को रखने से रोका ताकि वे दुनिया की संपदा पर नियंत्रण और उसका दोहन कर सकें।

- बीते युग के मुस्लिम विद्वानों ने अपना ज्ञान इस प्रकार फैलाया कि लोग उससे लाभ उठा सकें, जबकि कुछ अन्य लोग अपने ज्ञान को स्वयं तक या अपने देश तक सीमित रखते हैं और दूसरों को उसे प्राप्त करने से रोकते हैं।

- बीते युग के मुस्लिम विद्वानों का लक्ष्य अल्लाह की रहमत और उसका प्रतिफल प्राप्त करना था, जबकि आज के विद्वान अपनी खोजों से भौतिक लाभ उठाने की पूरी कोशिश करते हैं।

19 क़ुरआन की कुछ आयतों में वैज्ञानिक तथ्य

- सौर मंडल और ब्रह्मांड की उत्पत्ति

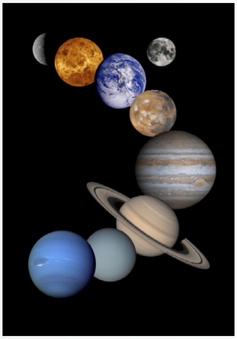

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"निःसंदेह आकाशों और धरती की रचना तथा रात और दिन के बदलने में तथा उन नावों में जो लोगों को लाभ देने वाली चीज़ें लेकर सागरों में चलती हैं और उस पानी में, जो अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर दिया और उसमें हर प्रकार के जानवर फैला दिए तथा हवाओं को फेरने (बदलने) में और उस बादल में जो आकाश और धरती के बीच वशीभूत किया हुआ है, (इन सब चीज़ों में) उन लोगों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं जो समझ-बूझ रखते हैं।" (अल्-ब-क़-रा:164)

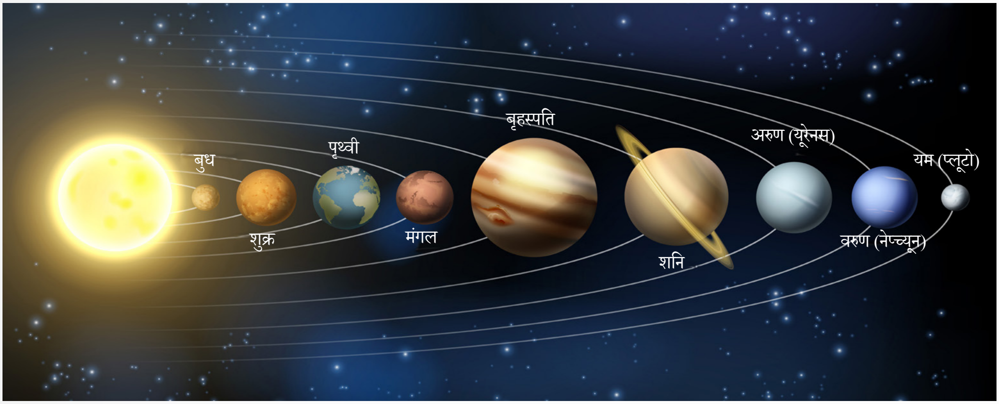

- यह चित्र हमारे सौर मंडल को दर्शाता है

क़ुरआन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ पर नाज़िल हुआ जो उम्मी थे — वे न पढ़ सकते थे, न लिख सकते थे। उनका समुदाय भी बड़े पैमाने पर अनपढ़ थी। तो फिर कोई इंसान ऐसा कलाम कैसे ला सकता है, जिसने सबसे बड़े-बड़े वाक्पटु और विद्वान लोगों को भी हैरान कर दिया?

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"आप कह दें: यदि समस्त मनुष्य तथा जिन्न इस बात पर एकत्रित हो जाएँ कि इस क़ुरआन के समान (कोई पुस्तक) ले आएँ तो इस जैसी पुस्तक नहीं ला सकेंगे, चाहे वे एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हो जाएँ!" (अल्-इस्रा:88)

नबी ﷺ और उनके अनेक साथी अत्यंत निर्धन थे और वे उन्हें क़ुरआन की वे आयतें सुनाया करते थे जिनमें वैज्ञानिक तथ्यों का उल्लेख है। क़ुरआन के नाज़िल होने के 1400 से भी अधिक वर्षों के बाद, आधुनिक विज्ञान अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीक के माध्यम से आज भी उन्हीं तथ्यों को खोज रहा है!

थॉमस कार्लाइल ने कहा:
"क्या एक झूठा इंसान किसी धर्म की स्थापना कर सकता है? भला, एक झूठा तो एक ईंट की दीवार भी नहीं खड़ी कर सकता! यदि वह गारे, पकी हुई मिट्टी और अन्य सामग्रियों के गुणों को न जाने और उनका सही उपयोग न करे तो वह घर नहीं बनाता, बल्कि मलबे का ढेर खड़ा करता है। वह बारह सदियों तक टिककर अठारह करोड़ लोगों को आश्रय नहीं दे सकता — वह तो तत्काल ढह जाएगा।" [1]

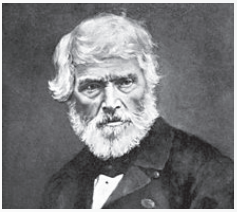

[1] थॉमस कार्लाइल — विक्टोरियन युग के स्कॉटिश लेखक, निबंधकार, इतिहासकार और शिक्षक। यह उद्धरण उनके निबंध-संग्रह "On Heroes, Hero-Worship, and the Heroic in History" से लिया गया है।

20 क़ुरआन और सृष्टि का आरंभ

"अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"अल्लाह ही सृष्टि का आरंभ करता है। फिर वही उसे दोबारा पैदा करेगा। फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे।" (अर्-रूम:11)

इस आयत में अल्लाह स्पष्ट रूप से बताता है कि वही एकमात्र सत्ता है जिसने इस संपूर्ण ब्रह्मांड में हर चीज़ को अस्तित्वहीनता से उत्पन्न किया और अस्तित्व में लाया। वास्तव में, अल्लाह ब्रह्मांड के आरंभ का वर्णन इन शब्दों में करता है:

"वह आकाशों तथा धरती का आविष्कारक है और जब किसी काम का निर्णय करता है तो उससे मात्र यही कहता है कि "हो जा" तो वह हो जाता है।" (अल्-ब-क़-रा:117)

इस आयत में अल्लाह एक बार फिर हमें बताता है कि ब्रह्मांड की रचना शून्य से हुई। इसकी रचना से पहले जो कुछ भी था वह परोक्ष जगत का ज्ञान है जिसे केवल अल्लाह ही जानता है। मानव बुद्धि यह समझने और जानने में असमर्थ है कि प्रथम सृष्टि का मूल तत्व क्या था क्योंकि अल्लाह ने हमें इसकी सूचना नहीं दी। मनुष्य केवल उस संसार के बारे में परिकल्पनाएँ और सिद्धांत गढ़ सकता है, जिसके साथ वह प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"मैंने उन्हें न आकाशों तथा धरती के पैदा करने में उपस्थित किया और न स्वयं उनके पैदा करने में और न ही मैं पथभ्रष्ट करने वालों को सहायक बनाने वाला था।" (अल्-कह्फ़ :51)

- यह एक तारे की वास्तविक तस्वीर है जो अंतरतारकीय पदार्थ (interstellar matter) से बनी है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"क्या जिन लोगों ने कुफ़्र किया, यह नहीं देखा कि आकाश और धरती दोनों मिले हुए थे, फिर हमने दोनों को अलग-अलग कर दिया तथा हमने पानी से हर जीवित चीज़ को बनाया ? तो क्या ये लोग ईमान नहीं लाते? "(अल्-अम्बिया :30)

إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ

- **"और जब किसी काम का निर्णय करता है तो उससे मात्र यही कहता है कि "हो जा" तो वह हो जाता है।" (अल्-ब-क़-रा:117)**

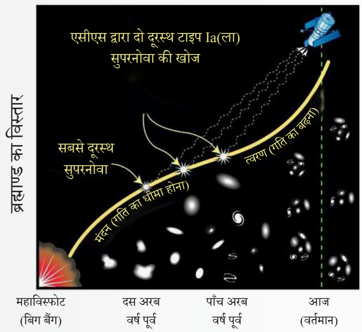

- यह तस्वीर दर्शाती है कि ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है।

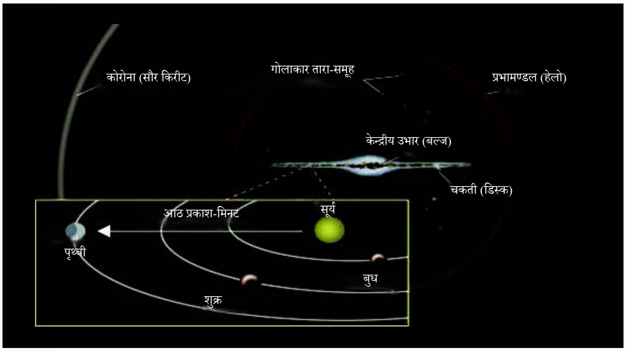

यह आयत इस तथ्य की ओर अत्यंत स्पष्ट संकेत करती है कि अल्लाह ने ब्रह्मांड की रचना एक ही इकाई से की और वह हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है। फिर अल्लाह ने इस "एकल इकाई" को आदेश दिया कि वह विभाजित हो जाए — और वह विभाजित हो गई और धुएँ के एक बादल में बदल गई। इसी धुएँ के बादल से अल्लाह ने आकाशों और धरती की रचना की। इसका उल्लेख अल्लाह के इन शब्दों में मिलता है:

"आप कह दें कि क्या तुम उस अस्तित्व का इनकार करते हो, जिसने धरती को दो दिनों में पैदा किया और उसके समकक्ष ठहराते हो? वह तो समस्त संसार का पालनहार है।

तथा उस (धरती) में उसके ऊपर से पर्वत बनाए तथा उसमें बरकत रख दी और उसमें उसके वासियों के आहार चार दिनों में निर्धारित किए, समान रूप से, प्रश्न करने वालों के लिए। फिर उसने आकाश की ओर रुख़ किया, जबकि वह धुआँ था। तो उसने उससे और धरती से कहा: तुम दोनों आओ, स्वेच्छा से या मजबूरी से। दोनों ने कहा: हम स्वेच्छा से आ गए। फिर उसने उन्हें दो दिनों में सात आकाश बना दिए और प्रत्येक आकाश में उससे संबंधित काम की वह्य की। तथा हमने निकटतम (निचले) आकाश को दीपों (चमकदार सितारों) से सुशोभित किया तथा (उनके द्वारा) उसको सुरक्षित कर दिया। यह अत्यंत प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाले (अल्लाह) की योजना है।" (फ़ुस्सिलत:9-12)

आधुनिक खगोल-भौतिकीविद यह दावा करते हैं कि संपूर्ण ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक ही इकाई से हुई जिसे आज "बिग बैंग" के नाम से जाना जाता है। (1)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"फिर उसने आकाश की ओर रुख़ किया, जबकि वह धुआँ था। तो उसने उससे और धरती से कहा: तुम दोनों आओ, स्वेच्छा से या मजबूरी से। दोनों ने कहा: हम स्वेच्छा से आ गए। " (फ़ुस्सिलत: 11)

यह आयत इस बात की पुष्टि करती है कि अपनी आरंभिक अवस्था में आकाश धुएँ के समान था — एक तथ्य जिसकी पुष्टि आधुनिक विज्ञान भी करता है।

जेम्स एच. जींस ने कहा:

"हमने पाया है कि, जैसा न्यूटन ने पहले अनुमान लगाया था — लगभग एकसमान घनत्व वाली और अत्यंत विशाल गैस की एक अव्यवस्थित राशि गतिशील रूप से अस्थिर होती है; उसमें केंद्र-बिंदु (nuclei) बनने की प्रवृत्ति होती है, जिनके चारों ओर अंततः समस्त पदार्थ एकत्रित हो जाता है।"(2)

(2) जीन्स, जेम्स एच. (1929) खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड उत्पत्ति विज्ञान। यूनिवर्सिटी प्रेस.

(1) जी. लेमेत्र (1927). «एक स्थिर द्रव्यमान और बढ़ती त्रिज्या वाला समरूप ब्रह्मांड जो बाह्यआकाशगंगीय नीहारिकाओं की त्रिज्यीय वेग की व्याख्या करता है।" ब्रुसेल्स की वैज्ञानिक सोसायटी के वार्षिक विवरण 47A: 41। अनुवादित रूप में: (1931) «स्थिर द्रव्यमान और बढ़ती त्रिज्या वाला एक समरूप ब्रह्मांड जो बाह्यआकाशगंगीय नीहारिकाओं की त्रिज्यीय गति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है।» रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी की मासिक सूचनाएँ 91: 483–490. खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड उत्पत्ति विज्ञान, सर जेम्स एच. जीन्स, पृ. 15.

21 ब्रह्मांड के विस्तार पर क़ुरआन

अमेरिकी खगोलशास्त्री वेस्टो एम. स्लीफर (1875 – 1969)

अमेरिकी खगोलशास्त्री एडविन हबल (1889 – 1953)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तथा आकाश को हमने शक्ति के साथ बनाया और निःसंदेह हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।" (अज़्-ज़ारियात: 47)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"जिस दिन हम आकाश को पंजिका के पन्नों को लपेटने की तरह लपेट देंगे। जिस तरह हमने प्रथम सृष्टि का आरंभ किया, (उसी तरह) हम उसे लौटाएँगे। यह हमारे ज़िम्मे वादा है। निश्चय ही हम इसे पूरा करने वाले हैं।" (अल्-अम्बिया:104)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"जिस दिन यह धरती अन्य धरती से बदल दी जाएगी और सब आकाश भी। तथा लोग अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत होंगे जो अकेला, सब पर प्रभुत्वशाली है।" (इब्राहीम: 48)

ये आयतें इस बात की पुष्टि करती हैं कि हम जिस ब्रह्मांड में रहते हैं वह अंतरिक्ष में लगातार फैलता जा रहा है। अगर हम समय में पीछे जाएँ तो हम पाएँगे कि पूरा ब्रह्मांड एक आदिकालीन परमाणु यानी एक "ब्रह्मांडीय अंडे" से उत्पन्न हुआ था। फिर अल्लाह के हुक्म से उसमें विस्फोट हुआ और वह धुएँ के एक बादल में तब्दील हो गया जिससे ज़मीन और आसमान बने। ब्रह्मांड अंतरिक्ष में लगातार फैलता रहेगा और अंततः अल्लाह के हुक्म से इसका फैलाव रुक जाएगा। उसके बाद ब्रह्मांड अपने आप में सिमट जाएगा और एक बार फिर उसी आदिकालीन परमाणु में विलीन हो जाएगा। फिर से विस्फोट होगा और नई सृष्टि बनेगी — एक ऐसा आसमान जो हमारे आसमान से बिल्कुल अलग होगा और एक ऐसी ज़मीन जो हमारी ज़मीन से बिल्कुल जुदा होगी। उस मरहले पर दुनिया की ज़िंदगी का अंत हो जाएगा और आख़िरत की ज़िंदगी का आग़ाज़ होगा।

ये तमाम मरहले क़ुरआन में बयान किए गए हैं। यह देखकर हैरानी होती है कि आधुनिक विज्ञान ने जो बातें हाल ही में दरयाफ़्त की हैं, वे 1400 से भी ज़्यादा साल पहले नाज़िल हुए क़ुरआन में पहले से ही मौजूद हैं! यह अकेला तथ्य इस बात की पुष्टि करता है कि क़ुरआन केवल और केवल अल्लाह का कलाम हो सकता है और यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ को इलाही वह्य मिली थी — और उन्होंने लोगों को ये हक़ीक़तें उस वक़्त बताई जब इनसे कोई वाक़िफ़ नहीं था। बल्कि सच तो यह है कि इन हक़ीक़तों से इंसान कई सदियों बाद जाकर परिचित हो पाया।

(1) वी. स्लीफर द्वारा अमेरिकन एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी के समक्ष प्रस्तुत शोध-पत्र (1915).

(2) एडविन हबल (1929)। «अतिरिक्त-आकाशगंगीय निहारिकाओं के मध्य दूरी और त्रिज्यीय वेग का परस्पर संबंध।» प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज। 15: 168–173.

(3) कणों का एक ऐसा वर्ग — जैसे फोटॉन, पायन अथवा अल्फा कण — जिसकी स्पिन शून्य या पूर्णांक होती है और जो उन सांख्यिकीय नियमों का पालन करता है जिनके अनुसार किसी भी संख्या में समान कण एक ही क्वांटम अवस्था में विद्यमान रह सकते हैं।

खगोलविदों ने दरयाफ़्त किया है कि ब्रह्मांड लगातार गतिमान है और फैलता जा रहा है। यह खोज आकाशगंगाओं और दूर के खगोलीय पिंडों के अध्ययन के ज़रिए की गई। अमेरिकी खगोलविद वेस्टो एम. स्लिफ़र ने जो आकाशगंगाओं के वर्णक्रम (spectra) का अध्ययन करते थे, देखा कि कुछ नज़दीकी आकाशगंगाओं की वर्णक्रमीय रेखाएँ लंबी तरंगदैर्ध्य की ओर खिसकी हुई थीं। तरंगदैर्ध्य में इस बदलाव से पता चला कि अधिकांश आकाशगंगाएँ आकाशगंगा मंदाकिनी (Milky Way) से प्रति सेकंड कई सौ किलोमीटर की रफ़्तार से दूर जा रही हैं! (1)

अमेरिकी खगोलविद एडविन हबल ने इस बात की पुष्टि की कि ब्रह्मांड फैल रहा है और यह भी कि जो आकाशगंगा जितनी दूर है, उसकी दूर जाने की रफ़्तार उतनी ही अधिक है — यानी उसकी गति उसकी दूरी के समानुपाती है। (2)

इससे स्पष्ट होता है कि खगोल विज्ञान के विद्वानों ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि ब्रह्मांड सदा फैलता रहता है। यह फैलाव तब तक जारी रहेगा जब तक गुरुत्वाकर्षण अपनी पकड़ खो न दे और ग्रह ब्रह्मांड में बिखर न जाएँ — और यही क़यामत का सबब बनेगा।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "जब आकाश फट जाएगा। तथा जब तारे झड़ जाएँगे।" (अल्-इन्फ़ितार:1-2)

22 खगोलीय पिंडों पर क़ुरआन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"अल्लाह वह है, जिसने आकाशों को बिना स्तंभों के ऊँचा किया, जिन्हें तुम देखते हो।" (अर्-रअ़्द:2)

ब्रह्मांड पर आधुनिक अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि पदार्थ, उसके घटकों और खगोलीय पिंडों में अत्यधिक ऊर्जा विद्यमान है। अल्लाह इसे नष्ट कर सकता है और दोबारा बना सकता है। वैज्ञानिकों ने शक्तिशाली ऊर्जा के विभिन्न रूपों की खोज की है जो आसमानों और धरती में प्रवाहित होती हैं। ये ऊर्जाएँ निम्नलिखित हैं:

- **प्रबल नाभिकीय ऊर्जा:** यह ऊर्जा उप-परमाण्विक कणों को आपस में बाँधे रखती है, जिनमें प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन शामिल हैं।
- **दुर्बल नाभिकीय ऊर्जा:** यह नाभिकीय ऊर्जा रेडियोधर्मी क्षय के कुछ विशेष रूपों का कारण बनती है।(3)
- **विद्युत-चुम्बकीय ऊर्जा:** यह वह ऊर्जा है जो पदार्थ के भीतर परमाणुओं को आपस में बाँधती है और प्रत्येक को उसके अपने विशिष्ट गुण प्रदान करती है।
- **गुरुत्वाकर्षण:** यह हमें ज्ञात ऊर्जा का सबसे कमज़ोर रूप है, किंतु दीर्घकाल में यह एक केंद्रीय और अत्यंत महत्त्वपूर्ण ऊर्जा है क्योंकि यही सभी खगोलीय पिंडों को उनकी निर्धारित कक्षाओं में स्थिर रखती है। (1)

- व्हर्लपूल गैलेक्सी (जिसे मेसियर 51, M51, या NGC 5194 के नाम से भी जाना जाता है) एक अन्योन्यक्रिया करती हुई भव्य-संरचना सर्पिल आकाशगंगा है जो लगभग 2 करोड़ 30 लाख प्रकाश-वर्ष की दूरी पर स्थित है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"और वही है, जिसने रात और दिन तथा सूरज और चाँद बनाए। सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं।" (अल्-अम्बिया:33)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"तथा सूर्य अपने नियत ठिकाने की ओर चला जा रहा है। यह प्रभुत्वशाली, सब कुछ जानने वाले (अल्लाह) का निर्धारित किया हुआ है। तथा चाँद की हमने मंज़िलें निर्धारित कर दी हैं। यहाँ तक कि वह फिर खजूर की पुरानी सूखी टेढ़ी टहनी के समान हो जाता है। न तो सूर्य ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े और न रात ही दिन से पहले आने वाली है। और सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं। "(यासीन: 38-40)

इन आयतों में अल्लाह बताता है कि सूरज एक निश्चित दिशा की ओर गतिशील है। पहले यह धारणा थी कि सूरज स्थिर है। आधुनिक खगोलशास्त्रियों ने इस बात की पुष्टि की है कि सूरज एक निश्चित दिशा में गतिमान है। इस सौर मंडल के सभी ग्रह उपग्रहों की भाँति गति करते हैं। पृथ्वी की कक्षा ग्रहों की कक्षाओं के साथ केन्द्र-संपाती है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"क़सम है रास्तों वाले आकाश की!" (अज़्-ज़ारियात:7)

अरबी भाषा में "हुबुक" (तारों भरे मार्ग) शब्द के एक से अधिक अर्थ हैं:

- सृष्टि में पूर्णता: खगोलशास्त्री गणना करते हैं कि ज्ञात ब्रह्मांड में दो सौ अरब आकाशगंगाएँ हैं और लगभग सत्तर अरब खरब तारे हैं। प्रत्येक आकाशगंगा अपने आकार, रूप, घनत्व, अपनी धुरी पर घूमने की गति, हमसे उसकी दूरी, आपस में एक-दूसरे से दूरी, उसके विकास के चरणों, उसके तारों की संख्या और उनके जीवनकाल में भिन्न है।
- इसका अर्थ उस वस्तु से भी है जो पूर्णतः संयुक्त और एकीकृत हो। ज्ञात ब्रह्मांड में आकाशगंगाओं और तारों की ये विस्मयकारी संख्या संपूर्ण ब्रह्मांड का केवल 10% है। अवश्य ही कोई ऐसी शक्ति होनी चाहिए जो इस सब को एक साथ थामे रखे, अन्यथा यह सब बिखर कर अराजकता में समा जाता। पाक और बेनियाज़ है अल्लाह तआला हर कमी से, जिसने फ़रमाया:

(1) डॉ. ज़गलूल अल-नज्जार, अस-समा (आकाश).

"निःसंदेह अल्लाह ही आकाशों और धरती को थामे (रोके)[हुए है कि (कहीं) वे दोनों (अपनी जगह से) हट (टल) न जाएँ। और वास्तव में यदि वे दोनों हट (टल) जाएँ तो उसके बाद कोई भी उन्हें थाम (रोक) नहीं सकेगा। निःसंदेह वह अत्यंत सहनशील, बहुत क्षमा करने वाला है।" (फ़ातिर: 41)

- इसका अर्थ उन कक्षाओं से भी है जिनमें प्रत्येक खगोलीय पिंड तैरता रहता है। उन अद्भुत बातों में से जिसने वैज्ञानिकों को हैरान कर दिया है वह ज्ञात ब्रह्मांड के उस हिस्से में आकाशगंगाओं की विशाल संख्या है। यह इस बात का प्रमाण है कि यह ब्रह्मांड एक परिपूर्ण व्यवस्था के अंतर्गत संचालित हो रहा है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"वही है जिसने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया और उस (चाँद) की मंज़िलें निर्धारित कीं ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब जान सको। अल्लाह ने इन सब को सत्य के साथ बनाया है। वह उन लोगों के लिए निशानियों को खोलकर बयान करता है जो जानते हैं।" (यूनुस:5)

एक प्रज्वलित, अग्निमय पिंड द्वारा उत्सर्जित प्रकाश और एक अंधेरे, ठंडे पिंड — यानी चाँद — द्वारा सूरज से परावर्तित प्रकाश के बीच का यह अद्भुत और सटीक अंतर जो फिर एक निरंतर और स्थिर रूप से (धरती पर) परावर्तित होता है — इसका उल्लेख क़ुरआन में चौदह सौ से भी अधिक वर्ष पूर्व किया जा चुका है! यह उन अनेक प्रमाणों में से एक है जो इस बात की गवाही देते हैं कि क़ुरआन अल्लाह की ओर से दिव्य प्रकाशना है — वह अल्लाह जो उस सबका सर्वश्रेष्ठ जानने वाला है जिसे उसने अकेले अपने हाथों से बनाया है।

- **"सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं। "(अल्-अम्बिया:33)**

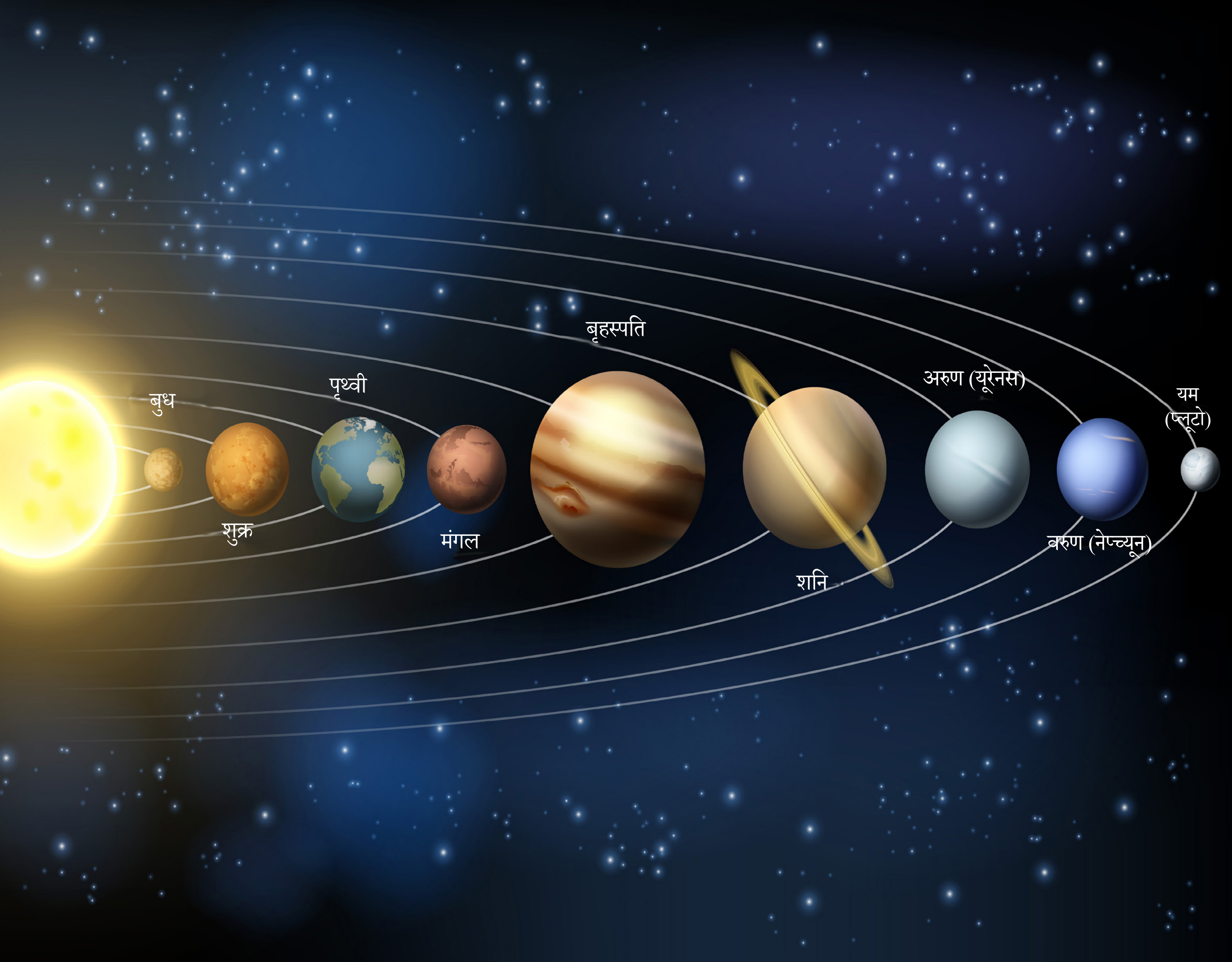
बुध
शुक्र
पृथ्वी
मंगल
बृहस्पति
शनि
अरुण (यूरेनस)
वरुण (नेप्च्यून)
यम
(प्लूटो)

23 वायुदाब पर क़ुरआन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तो वह व्यक्ति जिसे अल्लाह चाहता है कि उसे मार्गदर्शन प्रदान करे, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है कि उसे गुमराह करे, उसका सीना तंग, अत्यंत घुटा हुआ कर देता है, मानो वह बड़ी कठिनाई से आकाश में चढ़ रहा है। इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते।" (6:125)

इस आयत से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जैसे-जैसे कोई व्यक्ति वायुमंडल में ऊपर की ओर चढ़ता है, वैसे-वैसे उसके लिए सांस लेना कठिन होता जाता है। यह वायु दाब में कमी और ऑक्सीजन के निम्न स्तर के कारण होता है। इस तथ्य को कोई भी तब तक सिद्ध नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं आकाश में ऊपर न चढ़े! यह सच्चाई तब जाकर उजागर हुई जब मनुष्य ने उड़ना और ऊँचाइयों तक पहुँचना सीखा।

जब कोई व्यक्ति समुद्र तल से आठ किलोमीटर से अधिक की ऊँचाई पर पहुँचता है तो ऑक्सीजन की कमी और वायु दाब के कम होने के कारण उसे सांस लेने में गंभीर कठिनाई होने लगती है। एक सामान्य रूप से सामने आने वाली समस्या है हाइपोक्सिया — यानी शरीर के ऊतकों तक पहुंचने वाली ऑक्सीजन की मात्रा का अत्यधिक कम हो जाना।

एक अन्य समस्या है डिसबेरिज़्म, जो अत्यधिक कम या तेज़ी से बदलते वायु दाब के संपर्क में आने से उत्पन्न होने वाले लक्षणों का एक जटिल समूह है। ये दोनों समस्याएँ शरीर की सामान्य क्रियाओं में बाधा डालती हैं। इसलिए, अधिक ऊँचाई पर सांस लेने में होने वाली कठिनाई को सरल शब्दों में इस प्रकार समझाया जा सकता है — यह शरीर द्वारा स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए उठाए गए कदम हैं।

24 अंतरिक्ष के अंधकार और ऊपरी स्तरों पर क़ुरआन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और यदि हम उनपर आकाश का कोई द्वार खोल दें, फिर वे उसमें चढ़ते चले जाएँ। तब भी निश्चय ही वे यही कहेंगे कि हमारी निगाहें बाँध दी गई हैं। बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।!"" (अल्-हिज्र:14-15)

(1) देखें: The Merck Manual, 18वाँ संस्करण, "ऊँचाई की बीमारी" (Altitude Sickness) के अंतर्गत.

यह उपमा अत्यंत अद्भुत है क्योंकि यह एक ऐसे सार्वभौमिक तथ्य को प्रस्तुत करती है जिससे मनुष्य पहले अनजान था और जिसे साठ के दशक में अंतरिक्ष अन्वेषण के युग में ही खोजा जा सका। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अंधकार में डूबा हुआ है। पृथ्वी पर दिखाई देने वाला प्रकाश केवल दो सौ किलोमीटर तक ही दृष्टिगोचर होता है; उसके आगे, जलवाष्प और धूलकणों की विरलता के कारण, हर दिशा में केवल अंधकार ही अंधकार है। अल्लाह हर दोष और कमी से परे और पाक है। यही वह सत्ता है जिसने हमें इस वास्तविकता से अवगत कराया।

- यह ग्रहण के दौरान सूर्य की एक तस्वीर है जो इस बात को प्रमाणित करती है कि ब्रह्माण्ड अंधकार में लिपटा हुआ है।

- यह चित्र सूर्य के सामने वाले दिन के स्तर की पतलाई को दर्शाता है, जिसकी मोटाई दो सौ किलोमीटर है, जबकि पृथ्वी का शेष भाग पूर्ण अंधकार में डूबा दिखाई देता है।

25 परमाणु के बारे में क़ुरआन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"...और आपके पालनहार से कोई कण भर भी चीज़ न तो धरती में छिपी रहती है और न आकाश में तथा न उससे कोई छोटी चीज़ है और न बड़ी, परंतु एक स्पष्ट पुस्तक में मौजूद है। " (यूनुस:61)

इस ख़ूबसूरत आयत में अल्लाह स्पष्ट करता है कि इस ब्रह्माण्ड में उससे कुछ भी छुपा नहीं है, चाहे वह कितना ही सूक्ष्म क्यों न हो। एक समय यह माना जाता था कि परमाणु (Atom) ब्रह्माण्ड की सबसे छोटी इकाई है। परंतु जब इसे विभाजित किया गया तो इससे भी सूक्ष्म कण खोजे गए — जिनमें से कुछ में धनात्मक विद्युत गुण थे, जैसे प्रोटॉन और कुछ में ऋणात्मक विद्युत गुण, जैसे इलेक्ट्रॉन।

सन् 1939 में, बर्लिन विश्वविद्यालय के जर्मन वैज्ञानिकों हान (Hahn) और स्ट्रासमैन (Strassmann) ने यूरेनियम के एक परमाणु को विभाजित किया। आगे के शोधों के साथ और भी अधिक सूक्ष्म कण खोजे गए, जैसे कि क्वार्क (Quark)।

आधुनिक विज्ञान ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी विकास और वैज्ञानिक उन्नति के उच्च स्तर को प्राप्त किया है। भविष्य में और भी प्रगति की प्रतीक्षा है। यह सिलसिला क़यामत के दिन तक जारी रहेगा। ज्ञान के क्षेत्र में समस्त मानवजाति के सामूहिक प्रयास कभी भी अल्लाह के ज्ञान और सामर्थ्य की बराबरी नहीं कर सकते और न ही उसके क़रीब पहुँच सकते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और वे (ऐ नबी!) आपसे 'रूह' (आत्मा) के विषय में पूछते हैं। आप कह दें: 'रूह' मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें बहुत ही थोड़ा ज्ञान दिया गया है। '"(अल्-इस्रा: 85)

अल्लाह का ज्ञान और उसकी शक्तियाँ असीमित और अतुलनीय हैं। अल्लाह ने इस क़ुरआनी आयत में हमारे लिए एक सरल व्याख्या प्रस्तुत की है ताकि हमारी बुद्धि उसके ज्ञान और हमारे ज्ञान के बीच के विशाल अंतर को पहचान सके और आत्मसात कर सके। अल्लाह की शान बेनियाज़ है — सुब्हान अल्लाह!

26 क़ुरआन में मानव भ्रूण के चरणों का वर्णन

अल्लाह उन चरणों के बारे में फरमाता है जिनसे भ्रूण गुज़रता है:

"और निःसंदेह हमने मनुष्य को तुच्छ मिट्टी के एक सार से पैदा किया। फिर हमने उसे वीर्य बनाकर एक सुरक्षित स्थान में रखा। फिर हमने उस वीर्य को एक जमा हुआ रक्त बनाया, फिर हमने उस जमे हुए रक्त को एक बोटी बनाया, फिर हमने उस बोटी को हड्डियाँ बनाया, फिर हमने उन हड्डियों को कुछ माँस पहनाया, फिर हमने उसे एक अन्य रूप में पैदा कर दिया। तो बहुत बरकत वाला है अल्लाह जो बनाने वालों में सबसे अच्छा है।" (अल्-मुमिनून:12-14)

मानव विकास का प्रारम्भ

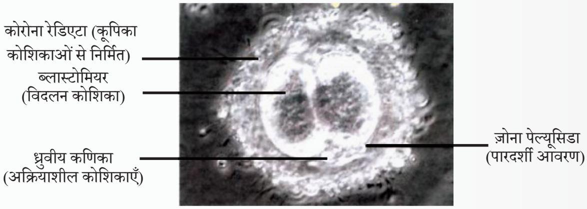

इंसान जिन चरणों से गुज़रता है, वे इस प्रकार हैं:

मिट्टी का सत्त

आदम जो पूरी मानव-जाति के पिता हैं, मिट्टी से बनाए गए थे। यह इस बात का संकेत है कि इंसान एक विशिष्ट और अलग रचना है। मानव-जाति किसी अन्य प्रजाति से विकसित नहीं हुई।

मिश्रित वीर्य (नुत्फ़ा)

इस चरण में नर और मादा के स्राव गर्भाशय में मिलते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अल्लाह की इच्छा से अंडा निषेचित हो सकता है या नष्ट हो सकता है। यदि अंडा निषेचित हो जाता है तो रचना के प्रथम चरण शुरू हो जाते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"निःसंदेह हमने इनसान को मिश्रित वीर्य से पैदा किया, हम उसकी परीक्षा लेते हैं। तो हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। "(अल्-इन्सान:2)

यदि वीर्य अंडे को निषेचित करने में विफल रहता है तो वह अंडे के साथ ही गर्भाशय से बाहर निकाल दिया जाता है। परंतु यदि वह अंडे को निषेचित कर दे और एक युग्मनज (ज़ाइगोट) बना ले तो वह ब्लास्टुला के रूप में गर्भाशय की दीवार से चिपक जाता है। यदि अल्लाह की यही इच्छा हो कि वह गर्भाशय से चिपका रहे तो वह अलक़ह के चरण में पहुँच जाता है — अर्थात् एक जोंक जैसी, लटकी हुई चीज़।

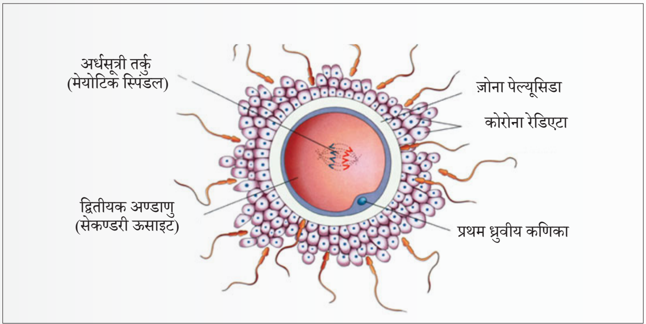

- आरेख विवरण: निषेचन (Fertilization) को दर्शाने वाला आरेख — यह उस क्रमबद्ध घटनाओं की श्रृंखला को प्रदर्शित करता है जो तब आरंभ होती है जब शुक्राणु द्वितीयक अंडाणु (Secondary Oocyte) की प्लाज़्मा झिल्ली से संपर्क करता है और यह उस क्षण पर समाप्त होती है जब युग्मनज (Zygote) के प्रथम समसूत्री विभाजन (First Mitotic Division) के मेटाफ़ेज़ चरण में मातृ एवं पितृ गुणसूत्र आपस में मिलते हैं। A — द्वितीयक अंडाणु जो कई शुक्राणुओं से घिरा हुआ है, जिनमें से दो ने कोरोना रेडिएटा को भेद लिया है। *(डॉ. कीथ मूर, The Developing Human, पृष्ठ 34 — सातवाँ संस्करण से लिया गया)*

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"ऐ लोगो! यदि तुम (मरणोपरांत) उठाए जाने के बारे में किसी संदेह में हो तो निःसंदेह हमने तुम्हें तुच्छ मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य की एक बूँद से, फिर रक्त के थक्के से, फिर माँस की एक बोटी से जो चित्रित तथा चित्र विहीन होती है ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी शक्ति को) स्पष्ट कर दें और हम जिसे चाहते हैं गर्भाशयों में एक नियत समय तक ठहराए रखते हैं, फिर हम तुम्हें एक शिशु के रूप में निकालते हैं, फिर ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुममें से कोई वह है जो उठा लिया जाता है और तुममें से कोई वह है जो जीर्ण आयु की ओर लौटाया जाता है ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने। तथा तुम धरती को सूखी (मृत) देखते हो, फिर जब हम उसपर पानी उतारते हैं तो वह लहलहाती है और उभरती है तथा हर प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ उगाती है। " (अल्-हज्ज:5)

अलक़ह — लोथड़ा / चिपकने वाली चीज़

इसे इस प्रकार इसलिए कहा गया है क्योंकि यह गर्भाशय से उसी तरह चिपकती है जैसे एक जोंक दूसरे जीवों के खून से अपना पोषण लेने के लिए चिपकती है।

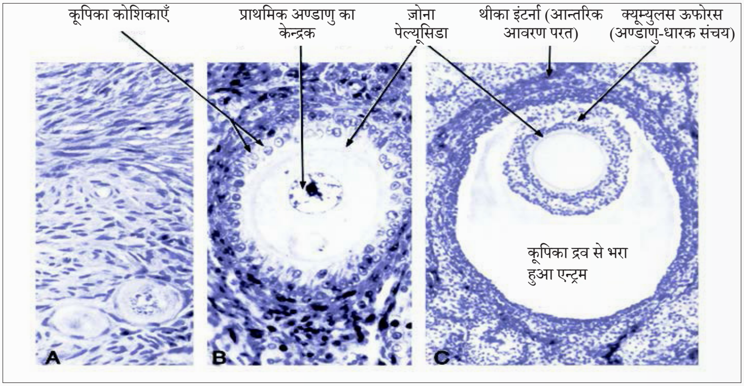

- यह उस क्षण से आरंभ होता है जब शुक्राणु द्वितीयक अंडाणु की प्लाज़्मा झिल्ली को स्पर्श करता है और उस समय समाप्त होता है जब युग्मनज के प्रथम समसूत्री विभाजन के मेटाफ़ेज़ में मातृ एवं पितृ गुणसूत्र परस्पर मिलते हैं। A — द्वितीयक अंडाणु जो कई शुक्राणुओं से घिरा हुआ है, जिनमें से दो ने कोरोना रेडिएटा को भेद दिया है।

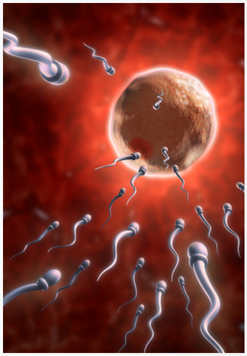

मुज़्ग़ह — चबाई हुई चीज़ जैसा पदार्थ

इसे इस प्रकार इसलिए कहा गया है क्योंकि भ्रूण दिखने में एक चबाई हुई चीज़ जैसा लगता है।

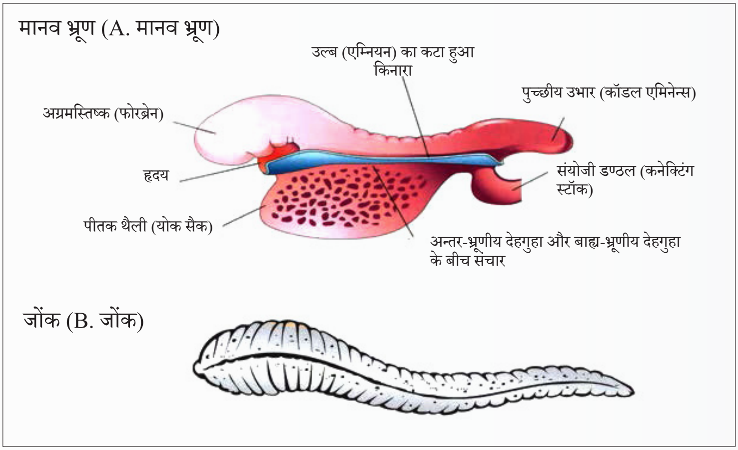

- एक भ्रूण (24 से 25 दिन) का पार्श्व दृश्य। B. चित्र जो 'अलक़ह' (Alaqah) चरण में एक जोंक (Leech) और एक मानव भ्रूण के बीच की समानताओं को दर्शाते हैं। (डॉ. कीथ मूर, The Developing Human, पृष्ठ 71 — सातवाँ संस्करण से लिया गया) (पृष्ठ 71 – 7वाँ संस्करण)

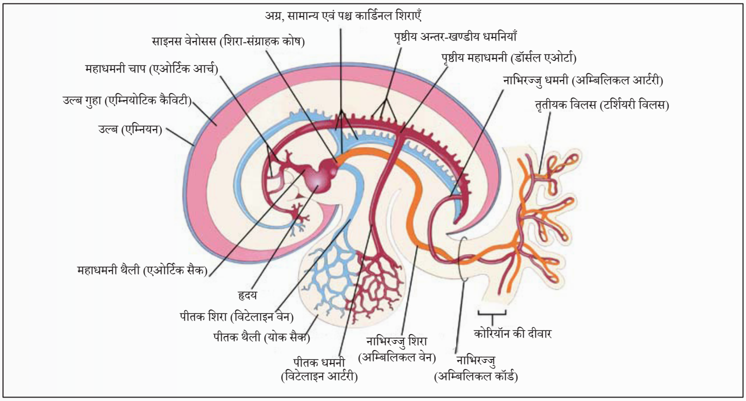

- लगभग 21 दिन के भ्रूण में आदिम हृदय-वाहिका तंत्र (Primordial Cardiovascular System) का आरेख जिसे बाईं ओर से देखा गया है। इसमें युग्मित सममित वाहिकाओं (Paired Symmetrical Vessels) की क्षणिक अवस्था को देखा जा सकता है। (कीथ मूर) प्रत्येक हृदय नली (Heart Tube) पृष्ठीय महाधमनी (Dorsal Aorta) में आगे बढ़ती है जो पुच्छीय दिशा (Caudally) में जाती है। भ्रूण और उसके आवरणों (Sacs) का बाहरी स्वरूप रक्त के थक्के (Blood Clot) जैसा प्रतीत होता है क्योंकि भ्रूण में अपेक्षाकृत बड़ी मात्रा में रक्त उपस्थित होता है।

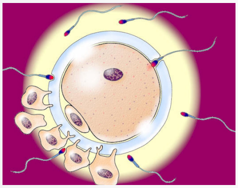

- निषेचन (Fertilisation): मनुष्यों में निषेचन तब होता है जब एक शुक्राणु (Spermatozoon) की आनुवंशिक सामग्री अंडाणु (Ovum) की आनुवंशिक सामग्री से मिलती है। मनुष्यों में यह प्रक्रिया गर्भाशय नली (Fallopian Tube / Uterine Tube) के दूरस्थ तीसरे भाग में घटित होती है।

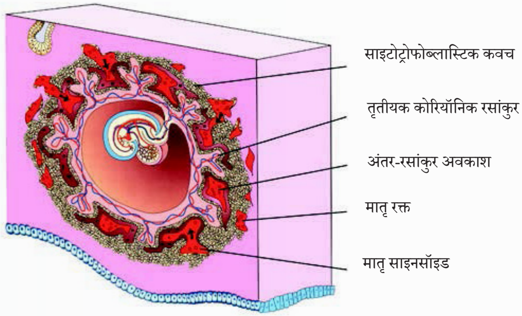

- एक प्रत्यारोपित भ्रूण (लगभग 21 दिन) का अनुप्रस्थ काट (Section)। इस आरेख में हम माँ के गर्भाशय में 'अलक़ह' चरण के दौरान भ्रूण के निलंबन (Suspension) को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

- **" नि:संदेह हमने इनसान को मिश्रित वीर्य से पैदा किया, हम उसकी परीक्षा लेते हैं। तो हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। " (अल्-इन्सान:2)**

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ

हड्डियों का निर्माण

हड्डियों पर माँस का आवरण

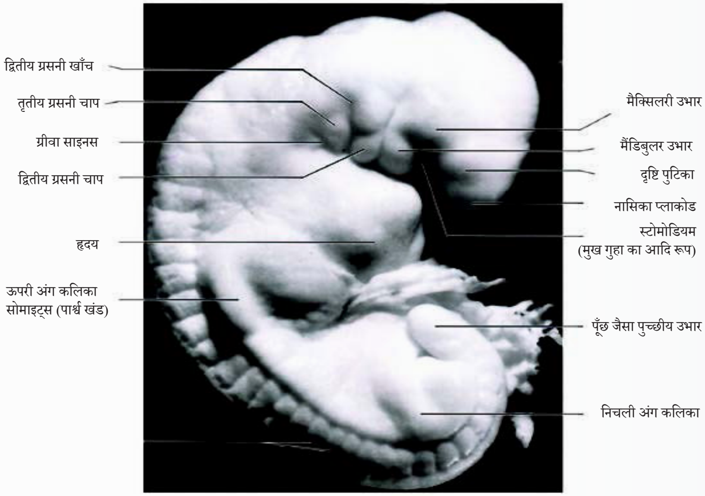

- मानव भ्रूण की चरण-13 (Stage 13) का मैक्रो-फ़ोटोग्राफ़। (कीथ मूर) वास्तविक आकार: 44.55 मि.मी.

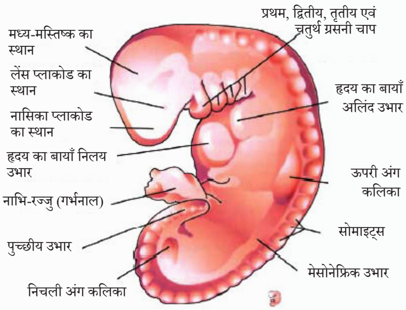

वास्तविक आकार 4.5 मिमी

च्युइंग गम (Chewed Gum)

- चित्र: एक चबाई हुई च्युइंग गम के टुकड़े और भ्रूण की वास्तविक तस्वीर के बीच की समानताओं पर ध्यान दीजिए। यह कैसे संभव है कि एक अनपढ़ व्यक्ति भ्रूण के बारे में इतने स्पष्ट और सटीक विवरण दे सका? निःसंदेह, यह ईश्वर की ओर से एक दिव्य प्रकाशन (Revelation) के अतिरिक्त कुछ नहीं!

- इस चरण में भ्रूण का स्वरूप एक चबाई हुई वस्तु से मिलता-जुलता है क्योंकि भ्रूण की पीठ पर उपस्थित सोमाइट्स (Somites) किसी चबाई हुई वस्तु पर पड़े दाँतों के निशानों से कुछ हद तक मेल खाते हैं।

- भ्रूण का एक नई रचना में रूपांतरण, इस चरण में शरीर की संरचना और अनुपात निर्धारित होते हैं और उसमें जान फूँकी जाती है।

मानव भ्रूण तीन परतों के अंधेरे के भीतर अनेक चरणों से गुज़रता है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

- चार सप्ताह में गर्भवती गर्भाशय (Gravid Uterus) के धनु-काट (Sagittal Section) का चित्र जो भ्रूण-झिल्लियों (Fetal Membranes), पर्णपाती (Decidua) और भ्रूण के परस्पर संबंध को दर्शाता है।

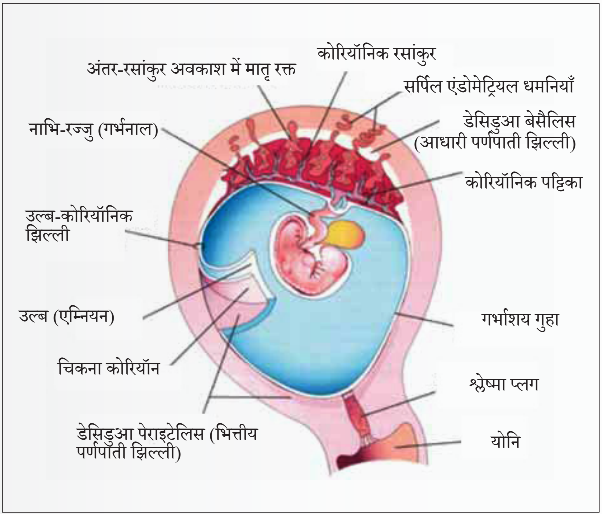

"उसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया तथा तुम्हारे लिए पशुओं में से आठ प्रकार (नर-मादा) उतारे। वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों में, तीन अंधेरों में, एक रचना के बाद दूसरी रचना में, पैदा करता है। यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। उसी का राज्य है। उसके सिवा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं। फिर तुम किस तरह फेरे जाते हो? "(अज़्-ज़ुमर: 6)

यह आयत बताती है कि भ्रूण तीन परतों या आवरणों से ढका होता है, जिन्हें इस आयत में "अंधेरे" कहा गया है। पानी, हवा, प्रकाश और ऊष्मा — इनमें से कोई भी इन परतों को भेद नहीं सकता। और न ही इन्हें नंगी आँखों से देखा जा सकता है।

(1) मॉरिस बुकाई (Maurice Bucaille) — वे पेरिस विश्वविद्यालय (University of Paris) में शल्य-चिकित्सा क्लिनिक के प्रमुख थे।

डॉ. मॉरिस बुकाई [1] ने कहा: "कुरआन के आधुनिक व्याख्याकार इस आयत में उन तीन शारीरिक परतों को देखते हैं जो गर्भावस्था के दौरान शिशु की रक्षा करती हैं: उदर की दीवार, गर्भाशय स्वयं और भ्रूण के आस-पास का वातावरण (प्लेसेंटा, भ्रूण की झिल्लियाँ और एम्नियोटिक द्रव)।" [2]

(2) बुकाई, मॉरिस। The Bible, the Qur'an and Science: The Holy Scriptures Examined in the Light of Modern Science. 2010. Archive. org. वेब। 5 सितंबर 2017. https:// archive.org

इसके अलावा, भ्रूण को एक सुरक्षित और महफ़ूज़ जगह पर रखा जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "क्या हमने तुम्हें एक तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया?, फिर हमने उसे एक ज्ञात अवधि तक एक सुरक्षित ठिकाने में रखा। फिर हमने अनुमान लगाया तो हम क्या ही अच्छा अनुमान लगाने वाले हैं।" (अल्-मुर्सलात: 20-23)

डॉ. गैरी मिलर [3] हमें बताते हैं: "एक रिपोर्टर ने प्रोफेसर कीथ मूर [4] से पूछा: 'क्या आपको नहीं लगता कि शायद अरब लोग इन बातों के बारे में जानते रहे होंगे — भ्रूण का विवरण, उसका रूप और वह कैसे बदलता और बढ़ता है? शायद वे वैज्ञानिक नहीं थे, लेकिन शायद उन्होंने अपने स्तर पर कुछ मोटे-मोटे चीर-फाड़ किए हों — लोगों को काटकर इन चीज़ों की जाँच की हो?'
प्रोफेसर ने तुरंत उसे बताया कि वह (रिपोर्टर) एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात से चूक गया है। फिल्म में दिखाई गई भ्रूण की सभी स्लाइड्स माइक्रोस्कोप से ली गई तस्वीरों से बनी थीं। उन्होंने कहा, 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि चौदह सदी पहले किसी ने भ्रूण विज्ञान को समझने की कोशिश की हो — वे इसे देख ही नहीं सकते थे!'"

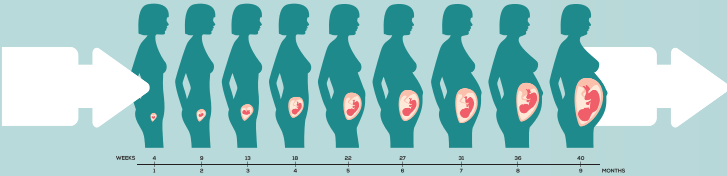

(3) अब्दुल-अहद उमर (Abdul-Ahad Omar) — एक कनाडाई मुसलमान हैं। वे इस कारण उल्लेखनीय हैं क्योंकि वे पूर्व में एक ईसाई धर्मशास्त्री एवं पादरी थे जिन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया।

(4) कीथ मूर (Keith Moore) — विश्वविख्यात भ्रूणविज्ञानी (Embryologist).
वे कनाडाई एनाटॉमिस्ट संघ (Canadian Association of Anatomists) के पूर्व अध्यक्ष तथा टोरंटो विश्वविद्यालय (University of Toronto) के शरीर रचना एवं कोशिका जीव विज्ञान विभाग (Department of Anatomy and Cell Biology) से सम्बद्ध थे।

कुरआन में भ्रूण के रूप-स्वरूप का जो भी विवरण है वह उस अवस्था का है जब यह जीव इतना छोटा होता है कि नंगी आँखों से दिखाई नहीं देता। इसे देखने के लिए माइक्रोस्कोप की ज़रूरत पड़ती है। चूँकि यह उपकरण केवल दो सौ साल से कुछ अधिक समय से ही अस्तित्व में है। डॉ. मूर ने व्यंग्यपूर्वक कहा:

"शायद चौदह सदी पहले किसी के पास गुप्त रूप से एक माइक्रोस्कोप था और उसने यह शोध किया, बिना कहीं कोई गलती किए। फिर किसी तरह उसने मुहम्मद को यह सिखाया और उन्हें मनाया कि वे यह जानकारी अपनी किताब में दर्ज करें। फिर उसने अपना सारा सामान नष्ट कर दिया और इसे हमेशा के लिए राज़ रखा। क्या आप इस बात पर यकीन करते हैं? वास्तव में आपको नहीं करना चाहिए — जब तक कि आप कोई सबूत न लाएँ — क्योंकि यह बेहद हास्यास्पद सिद्धांत है।"

जब उनसे पूछा गया: "आप कुरआन में इस जानकारी की व्याख्या कैसे करते हैं?"

डॉ. मूर का जवाब था: "यह केवल ईश्वरीय प्रकाशना (वह्य) के ज़रिए ही संभव हो सकता था!"

डॉ. गेराल्ड सी. गोयरिंगर [5] ने कहा: "यह विवरण पारंपरिक वैज्ञानिक साहित्य में दर्ज मानव भ्रूण और गर्भस्थ शिशु के विभिन्न चरणों के अभिलेखन से कई शताब्दियाँ पहले का है।"

डॉ. गेराल्ड सी. गोएरिंगर
(Dr. Gerald C. Goeringer)

(5) डॉ. गेराल्ड सी. गोएरिंगर (Dr. Gerald C. Goeringer) — वाशिंगटन डी.सी., अमेरिका स्थित जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय (Georgetown University) के स्कूल ऑफ मेडिसिन (School of Medicine) में कोशिका जीव विज्ञान विभाग (Department of Cell Biology) में चिकित्सा भ्रूणविज्ञान (Medical Embryology) के पाठ्यक्रम निदेशक एवं सहायक प्रोफ़ेसर हैं।

27 कुरआन में महासागरों का उल्लेख

कुरआन में समुद्रों के बीच अवरोध का वर्णन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"वही है जिसने दो सागरों को मिला दिया। यह मीठा, प्यास बुझाने वाला है और यह खारा, कड़वा है। और उसने उन दोनों के बीच एक परदा और मज़बूत आड़ बना दिया।" (अल्-फ़ुर्क़ान:53)

यह तथ्य कि महासागरों के जल आपस में नहीं मिलते, इसकी खोज हाल ही में समुद्र विज्ञानियों (oceanographers) ने की है। यह एक भौतिक शक्ति के कारण होता है जिसे "पृष्ठ तनाव" (surface tension) कहते हैं, जिसकी वजह से पड़ोसी समुद्रों का पानी एक-दूसरे से नहीं मिल पाता। इसका मूल कारण उनके जल की घनत्व (density) में अंतर होना है। यही पृष्ठ तनाव उन्हें आपस में घुलने-मिलने से रोकता है — ठीक वैसे, जैसे उनके बीच कोई पतली दीवार खड़ी हो।

अमेज़न नदी का जल अटलांटिक महासागर में जाकर मिलता है, फिर भी समुद्र में 200 मीटर तक जाने के बाद भी वह अपनी विशेषताएँ बनाए रखता है।

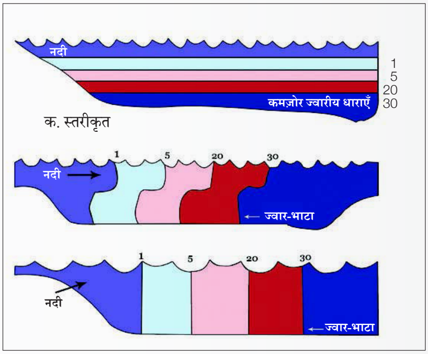

- तटीय जलमार्गों (coastal waterways) में मुख्यतः तीन प्रकार की लवणता व्यवस्थाएँ (salinity regimes) पाई जाती हैं: स्तरीकृत (Stratified) — जहाँ जल की परतें अलग-अलग बनी रहती हैं। आंशिक रूप से मिश्रित (Partially Mixed) — जहाँ जल का आंशिक सम्मिश्रण होता है। पूर्णतः मिश्रित (Fully Mixed) — जहाँ जल पूरी तरह घुल-मिल जाता है।

(1) संदर्भ: White, Harvey E. Modern College Physics. New York: Van Nostrand Reinhold, 1973. मुद्रित।

समुद्र की गहराइयों में अंधकार और आंतरिक लहरों पर क़ुरआन:

"अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"या फिर (उनके कर्म) जैसे किसी अथाह गहरे समुद्र में अंधकार की परतें हों जिसे लहरें ढके हों, उन लहरों के ऊपर और लहरें हों और उनके ऊपर बादल हों — अंधकार की परतें एक के ऊपर एक। जब कोई अपना हाथ निकाले तो वह उसे भी मुश्किल से देख पाए। और जिसे अल्लाह ने प्रकाश न दिया हो, उसके लिए कोई प्रकाश नहीं।" (सूरह नूर:40)

यह वैज्ञानिक रूप से सुस्थापित और सर्वमान्य तथ्य है कि समुद्र की अत्यधिक गहराइयों में प्रकाश का नामोनिशान नहीं होता — वहाँ केवल घोर अंधकार छाया रहता है। इसका कारण यह है कि सूर्य की किरणें उन गहराइयों तक पहुँच ही नहीं पातीं। महासागरों की गहराई कुछ सौ मीटर से लेकर 10,994 मीटर तक होती है। गहरे समुद्रों और महासागरों में अंधकार लगभग 200 मीटर की गहराई से शुरू हो जाता है। इस गहराई पर प्रकाश नगण्य रह जाता है और 1,000 मीटर से अधिक गहराई पर प्रकाश का प्रवेश पूर्णतः असंभव हो जाता है।

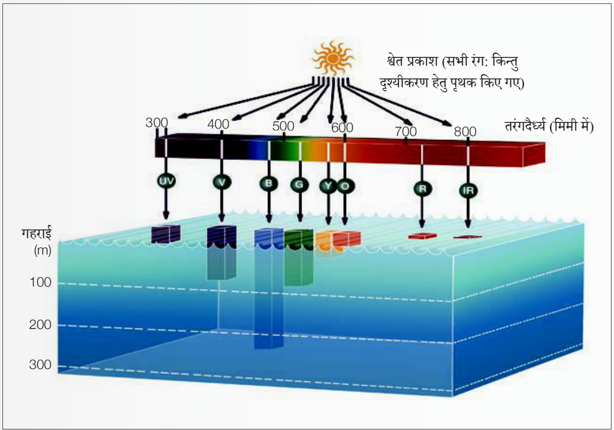

- यह आरेख (चित्र) दर्शाता है कि स्वच्छ समुद्री जल में प्रकाश किस गहराई तक प्रवेश कर सकता है। चूँकि लाल प्रकाश सबसे अधिक अवशोषित होता है, इसलिए उसकी प्रवेश गहराई सबसे कम है और नीले प्रकाश की प्रवेश गहराई सबसे अधिक है। (Applied Optics, Vol. 20 (177), Smith, R.C. and K.S. Baker. 1981. यह भी देखें: http://daac.gsfc.nasa.gov/oceancolor/scifocus/oceanColor/oceanblue.shtml)

सूर्य की अधिकांश किरणें 100 मीटर की गहराई पर ही जल द्वारा अवशोषित कर ली जाती हैं। समुद्र के इस हिस्से को प्रकाशमय क्षेत्र (Luminous Zone) कहा जाता है। इसके आगे, 150 मीटर की गहराई पर सूर्य की केवल 1% किरणें दिखाई देती हैं और 200 मीटर पर मात्र 0.01% किरणें शेष रह जाती हैं।

वायुमंडल में स्थित ओज़ोन परत अधिकांश पराबैंगनी (Ultra-violet) किरणों को परावर्तित कर देती है, जबकि बादल इन किरणों का 30% परावर्तित करते हैं और 19% अवशोषित कर लेते हैं। इस प्रकार इन किरणों का केवल 51% भाग ही समुद्र तक पहुँच पाता है। समुद्र की सतह पर 3% से 30% तक सूर्य का प्रकाश परावर्तित हो जाता है। इसके बाद प्रकाश के सात रंगों में से केवल नीली तरंगदैर्ध्य (Blue Wavelength) को छोड़कर, लगभग सभी रंग पहले 200 मीटर की गहराई में एक-एक करके अवशोषित हो जाते हैं।

आंतरिक लहरों पर क़ुरआन:

वैज्ञानिकों ने हाल ही में यह भी खोज की है कि आंतरिक लहरें (Internal Waves) होती हैं जो "विभिन्न घनत्व वाली परतों के बीच घनत्व सीमाओं पर उत्पन्न होती हैं।" ये आंतरिक लहरें समुद्रों और महासागरों के गहरे जल को ढकती हैं क्योंकि गहरे जल का घनत्व उसके ऊपर के जल से अधिक होता है। आंतरिक लहरें सतही लहरों की भाँति व्यवहार करती हैं और सतही लहरों की तरह टूट भी सकती हैं। आंतरिक लहरें नग्न आँखों से दिखाई नहीं देतीं, परंतु किसी निर्धारित स्थान पर तापमान या लवणता (Salinity) में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करके इनका पता लगाया जा सकता है।

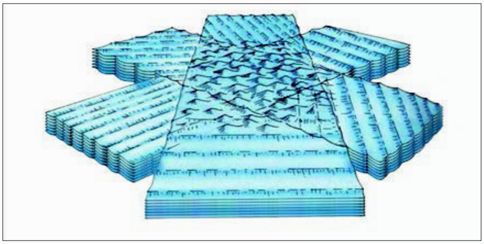

- विभिन्न घनत्व वाली जल की दो परतों के मध्य सीमा पर आंतरिक लहरें।
- एक परत सघन (निचली) है और दूसरी कम सघन (ऊपरी) है। (Gross, M. Grant. Oceanography. New Jersey: Prentice Hall. 1993. Print)

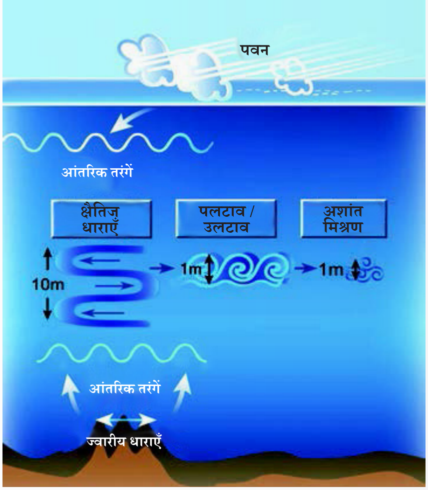

- आंतरिक लहरें और समुद्री मिश्रण के पैमाने। (Oceanography, Chris Garrett. यह भी देखें: http://www.nature.com/nature/journal/v422/n6931/full/422477a.html)

उदाहरण के तौर पर, भूमध्य सागर (Mediterranean Sea) का जल अटलांटिक महासागर के जल की तुलना में गर्म, अधिक खारा और कम घना होता है। जब भूमध्य सागर का जल जिब्राल्टर जलडमरूमध्य (Gibraltar Sill) को पार करके अटलांटिक महासागर में प्रवेश करता है तो यह अपनी गर्म, खारी और कम घनत्व वाली विशेषताओं को बनाए रखते हुए लगभग 1,000 मीटर की गहराई पर सैकड़ों किलोमीटर तक अटलांटिक में आगे बढ़ता जाता है। भूमध्यसागरीय जल इसी गहराई पर स्थिर हो जाता है। यद्यपि इन समुद्रों में विशाल लहरें, प्रबल धाराएँ और ज्वार-भाटा होते हैं तथापि ये दोनों जल-राशियाँ न तो आपस में मिलती हैं और न ही एक-दूसरे की सीमाओं का उल्लंघन करती हैं।

अटलांटिक महासागर का तापलवणीय परिसंचरण

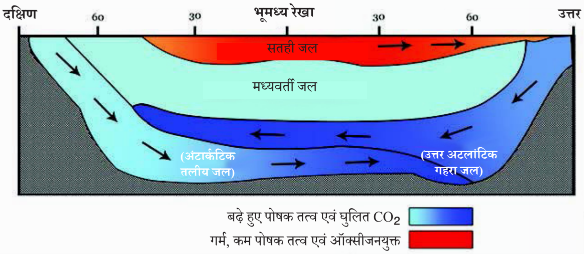

- गहरे महासागर की प्रमुख जल-राशियाँ अपने तापमान और लवणता के आधार पर एक-दूसरे से अलग पहचानी जाती हैं। ये गुण उनके सापेक्ष घनत्व निर्धारित करते हैं जो बदले में महासागरों की गहरी तापलवणीय परिसंचरण (Thermohaline Circulation) को संचालित करते हैं।
  NADW = उत्तर अटलांटिक गहरा जल (North Atlantic Deep Water)
  AABW = अंटार्कटिक तलीय जल (Antarctic Bottom Water)
  (डॉ. स्टीव होवान, इंडियाना यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेंसिल्वेनिया के सौजन्य से प्राप्त चित्र से संशोधित)

यह जानकारी हमें इस आधुनिक युग में उपलब्ध उन्नत प्रौद्योगिकी और अत्याधुनिक उपकरणों के माध्यम से ही प्राप्त हो सकी है जो ऐसी घटनाओं का पता लगाने में सक्षम हैं। नबी ﷺ एक मरुस्थलीय जलवायु में रहते थे जो समुद्र से बहुत दूर थी और उन्होंने कभी कोई समुद्री यात्रा भी नहीं की थी। क़ुरआन में इस परिघटना का उल्लेख होना ही क़ुरआन की सत्यता और प्रामाणिकता का प्रमाण है।

- एक क्यूम्युलोनिम्बस बादल — यह चित्र NASA के उपग्रह द्वारा लिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई अदृश्य हाथ क्यूम्युलस बादलों को एकत्रीकरण के स्थान की ओर धकेल रहा हो।

- वायुमंडल का एक चित्र जिसमें बादल और हवाएँ दर्शाई गई हैं।

28 क़ुरआन में बादलों के निर्माण और वर्षा का वर्णन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले हवाओं (वर्षा) को शुभ सूचना देने के लिए भेजता है। यहाँ तक कि जब वे भारी बादल उठाती हैं तो हम उसे एक मृत शहर की ओर ले जाते हैं। फिर हम उससे पानी उतारते हैं फिर उसके साथ सभी प्रकार के फल पैदा करते हैं। इसी तरह हम मृत लोगों को निकालेंगे शायद तुम उपदेश ग्रहण करो।" (अल्-आराफ़ :57)

अल्लाह तआला यह भी फरमाता है:

"और हमने बादलों को पानी से गर्भित करने वाली हवाओं को भेजा फिर हमने आकाश से पानी उतारा और उसे तुम्हें पिलाया तथा तुम हरगिज़ उसे संग्रह करने वाले नहीं।" (अल्-हिज्र:22)

आधुनिक विज्ञान ने क़ुरआन की इन आयतों में बताए गए वैज्ञानिक तथ्यों की पुष्टि की है। हवाएँ नमक से भरपूर पानी के कण वायुमंडल में ऊपर उठाती हैं। ये कण, जिन्हें "एरोसोल" कहा जाता है, जलवाष्प को अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा करके पानी के फंदे की तरह काम करते हैं और बादल की बूँदें बनाते हैं। बादल उस जलवाष्प से बनते हैं जो हवा में मौजूद नमक के क्रिस्टलों या धूल के कणों के चारों ओर संघनित होते हैं। चूँकि बादलों में पानी की बूँदें बहुत छोटी होती हैं — जिनका व्यास 0.01 से 0.02 मिमी के बीच होता है — इसलिए बादल हवा में तैरते रहते हैं और आसमान में फैल जाते हैं। (1)

इस प्रकार आसमान बादलों से ढक जाता है। नमक के क्रिस्टलों और धूल के कणों के इर्द-गिर्द जमा पानी के कण और घने होते जाते हैं और बारिश की बूँदें बन जाती हैं। जो बूँदें हवा से भारी हो जाती हैं, वे बादलों से बाहर निकलकर ज़मीन पर बारिश के रूप में गिरने लगती हैं।

(1) देखें: टारबक, एडवर्ड जे. और लुटगेन्स, फ्रेडरिक जे. (1994). पृथ्वी विज्ञान. न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल।
इसके साथ देखें: व्हाइटमैन, डेविड सी. (2000). पर्वतीय मौसम विज्ञान. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को चलाता है। फिर उसे परस्पर मिलाता है। फिर उसे तह-ब-तह कर देता है। फिर आप बारिश को देखते हैं कि उसके बीच से निकल रही है। और वह आकाश से उसमें (मौजूद) पर्वतों जैसे बादलों से ओले बरसाता है। फिर जिस पर चाहता है, उन्हें गिराता है और जिससे चाहता है उन्हें फेर देता है। प्रायः उसकी बिजली की चमक आँखों की रोशनी को ले जाए।" (अन्-नूर:43)

वर्षा के बादल एक निश्चित क्रम और चरणों के अनुसार बनते और आकार लेते हैं। क्यूम्युलोनिम्बस — जो एक प्रकार का वर्षा बादल है — उसके निर्माण के चरण इस प्रकार हैं:

पहला चरण — हाँका जाना: बादलों को हवा द्वारा आगे बढ़ाया जाता है, यानी हवा उन्हें अपने साथ बहाकर ले जाती है।

दूसरा चरण — जुड़ना: फिर हवा द्वारा बहाए गए छोटे-छोटे बादल (क्यूम्युलस बादल) आपस में मिलकर एक बड़ा बादल बना लेते हैं।

तीसरा चरण — ऊपर उठना: जब छोटे बादल आपस में जुड़ते हैं तो बड़े बादल के भीतर ऊपर की ओर उठने वाली हवाओं की गति बढ़ जाती है। बादल के केंद्र के पास ये हवाएँ किनारों की तुलना में अधिक तेज़ होती हैं। ये हवाएँ बादल के शरीर को ऊर्ध्वाधर रूप से यानी ऊपर की दिशा में बढ़ाती हैं जिससे बादल ऊँचा उठता चला जाता है। यह ऊर्ध्वाधर विकास बादल के शरीर को वायुमंडल के ठंडे क्षेत्रों तक खींच ले जाता है जहाँ पानी की बूँदें और ओले बनने लगते हैं और धीरे-धीरे बड़े होते जाते हैं। जब ये पानी की बूँदें और ओले इतने भारी हो जाते हैं कि ऊपर उठने वाली हवाएँ उन्हें थाम नहीं पातीं तो वे बादल से बारिश, ओलों आदि के रूप में गिरने लगते हैं।

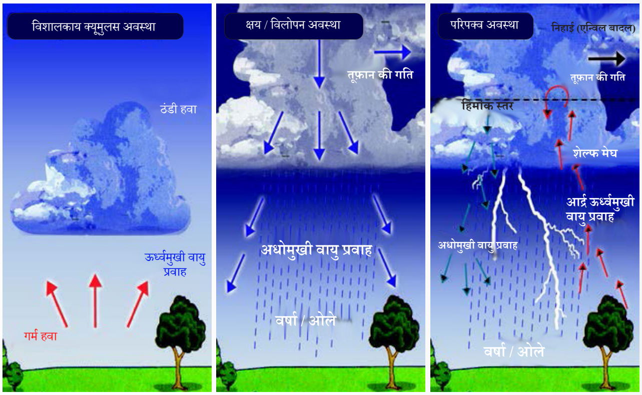

प्रथम अवस्था द्वितीय अवस्था तृतीय अवस्था

जब ओले बादल के उस क्षेत्र से गुज़रते हैं जहाँ अति-शीतल बूँदें और बर्फ के क्रिस्टल मौजूद होते हैं तो बादल विद्युतावेशित हो जाता है। जब तरल बूँदें किसी ओले से टकराती हैं तो वे तुरंत जम जाती हैं और गुप्त ऊष्मा छोड़ती हैं। इससे ओले की सतह आसपास के बर्फ के क्रिस्टलों की तुलना में अधिक गर्म बनी रहती है।

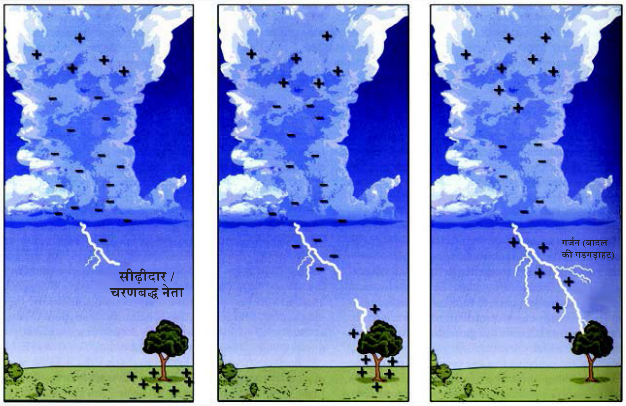

• शाखाओं वाली बिजली का प्रतिरूप: (क) बादल के निचले हिस्से में केंद्रित ऋणात्मक आवेश इतना अधिक हो जाता है कि वह हवा के प्रतिरोध को पार कर लेता है और ज़मीन की ओर एक "नेता" (लीडर) विकसित करता है। (ख) ज़मीन से धनात्मक आवेशों का ऊपर की ओर प्रवाह ऊँचे बिंदुओं पर केंद्रित होता है। (ग) ऋणात्मक आवेशों का नीचे की ओर प्रवाह और धनात्मक आवेशों का ऊपर की ओर प्रवाह आपस में मिलते हैं जिससे एक शक्तिशाली विद्युत धारा उत्पन्न होती है — जिसे "रिटर्न स्ट्रोक" कहते हैं — जो धनात्मक आवेशों को बादल के भीतर ले जाती है।

जब ओला किसी बर्फ के क्रिस्टल के संपर्क में आता है तो एक महत्त्वपूर्ण घटना घटित होती है — इलेक्ट्रॉन ठंडी वस्तु से गर्म वस्तु की ओर प्रवाहित होते हैं। इस कारण ओला ऋणात्मक रूप से आवेशित हो जाता है। यही प्रक्रिया तब भी होती है जब अति-शीतल बूँदें ओले से संपर्क में आती हैं और धनात्मक रूप से आवेशित बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े टूटकर अलग हो जाते हैं। ये हल्के धनात्मक आवेशित कण ऊपर उठने वाली हवाओं द्वारा बादल के ऊपरी हिस्से में ले जाए जाते हैं। ओले बादल के निचले हिस्से की ओर गिरते हैं जिससे बादल का निचला हिस्सा ऋणात्मक रूप से आवेशित हो जाता है। इन ऋणात्मक आवेशों का विसर्जन ही बिजली (तड़ित) के रूप में होता है। इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ओले ही बिजली उत्पन्न करने का प्रमुख कारण हैं। [1]

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और बादल की गरज, अल्लाह की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन करती है और फ़रिश्ते भी उसके भय से (उसकी पवित्रता का गुणगान करते हैं)। और वह कड़कने वाली बिजलियाँ भेजता है फिर उन्हें जिस पर चाहता है, गिरा देता है, जबकि वे अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं और वह बहुत शक्ति वाला है।" (अर्-रअ़्द:13)

(1) देखें: रिचर्ड ए. एन्थेस, जॉन जे. कैहिर, एलिस्टेयर बी. फ्रेज़र एवं हैंस ए. पैनोफ़्स्की। द एटमॉस्फियर। कोलंबस, ओहायो: चार्ल्स ई. मेरिल, 1978.
साथ ही देखें: अल्बर्ट मिलर, जैक सी. थॉम्पसन एवं रिचर्ड ई. पीटरसन। द एलीमेंट्स ऑफ़ मेटियोरोलॉजी। कोलंबस, ओहायो: मेरिल पब्लिशिंग कंपनी, 1983.
साथ ही देखें: ब्रेंडन मर्फी एवं डेमियन नैंस। अर्थ साइंस टुडे। पैसिफिक ग्रोव, कैलिफ़ोर्निया: ब्रूक्स/कोल, 1998.

(2) बाइबल, कुरआन और विज्ञान

29 जानवरों के बारे में कुरआन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तथा निःसंदेह तुम्हारे लिए पशुओं में बड़ा उपदेश है। हम उन चीज़ों में से जो उनके पेटों में हैं, गोबर और रक्त के मध्य से तुम्हें शुद्ध दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए रुचिकर होता है।" (अन्-नह़्ल:66)

मॉरिस बुकाई[2] ने कहा:

"वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, इस आयत का अर्थ समझने के लिए शरीर-क्रिया विज्ञान (Physiology) की अवधारणाओं का सहारा लेना आवश्यक है। शरीर के सामान्य पोषण को सुनिश्चित करने वाले पदार्थ उन रासायनिक परिवर्तनों से उत्पन्न होते हैं जो पाचन नली की पूरी लंबाई के साथ-साथ होते रहते हैं। ये पदार्थ आंत की सामग्री से प्राप्त होते हैं। जब ये रासायनिक परिवर्तन की उचित अवस्था में आंत में पहुँचते हैं तो वे आंत की दीवार को पार करके प्रणालीगत परिसंचरण (Systemic Circulation) की ओर बढ़ते हैं। यह परिवहन दो तरीकों से होता है: या तो सीधे जिसे 'लसीका वाहिकाएँ' (Lymphatic Vessels) कहा जाता है, अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, पोर्टल परिसंचरण (Portal Circulation) के माध्यम से। यह पोर्टल परिसंचरण इन पदार्थों को पहले यकृत (Liver) तक ले जाता है जहाँ वे रूपांतरित होते हैं और फिर वहाँ से निकलकर प्रणालीगत परिसंचरण से जुड़ जाते हैं। इस प्रकार, सब कुछ रक्तप्रवाह से होकर गुजरता है।

दूध के घटक स्तन ग्रंथियों (Mammary Glands) द्वारा स्रावित होते हैं। ये ग्रंथियाँ, कहें तो, भोजन के पाचन से प्राप्त उत्पादों द्वारा पोषित होती हैं जो रक्तप्रवाह के माध्यम से उन तक पहुँचते हैं। इस प्रकार, रक्त, भोजन से निकाले गए पदार्थों के संग्रहकर्ता और संवाहक की भूमिका निभाता है और यह दूध का उत्पादन करने वाली स्तन ग्रंथियों को ठीक पोषण पहुँचाता है जैसे किसी भी अन्य अंग को पोषण पहुँचाता है।

यहाँ वह प्रारंभिक प्रक्रिया जो बाकी सब कुछ गतिमान करती है, आंत की दीवार के स्तर पर आंत की सामग्री और रक्त का मिलन है। यह अत्यंत सटीक अवधारणा पाचन तंत्र की रसायन-विज्ञान और शरीर-क्रिया विज्ञान में की गई खोजों का परिणाम है। पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ के समय में यह बात पूर्णतः अज्ञात थी और इसे केवल आधुनिक काल में ही समझा जा सका है। मेरा मानना है कि कुरआन में इन अवधारणाओं से संबंधित आयत का अस्तित्व, उस काल को देखते हुए जिसमें इन्हें प्रस्तुत किया गया था, किसी मानवीय व्याख्या से परे है।"

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا

- "क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया?और पर्वतों को मेखें?" (अन्-नबा:6-7)

30 कुरआन में पर्वतों का वर्णन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया? और पर्वतों को मेखें? "(अन्-नबा: 6-7)

वैज्ञानिक पर्वतों के महत्व को ऐसी खूँटियों के रूप में समझाते हुए व्याख्या करते हैं जो धरती को स्थिर रखती हैं:

"पर्वतों की गहरी जड़ें होती हैं। ये जड़ें ज़मीन में बहुत गहराई तक धँसी होती हैं, इसीलिए पर्वत की आकृति एक खूँटी जैसी होती है। पृथ्वी की भूपर्पटी (क्रस्ट) तीस से साठ किलोमीटर गहरी है जो भूकंपमापी यंत्र (सिस्मोग्राफ) के माध्यम से ज्ञात हुई है। इसी यंत्र से यह भी पता चला है कि प्रत्येक पर्वत की एक अंतर्निहित जड़ होती है जो पृथ्वी की भूपर्पटी को उसकी निचली परतों के साथ स्थिर रखती है और धरती को हिलने-काँपने से रोकती है। इस प्रकार पर्वत एक ऐसी कील के समान है जो लकड़ी के विभिन्न टुकड़ों को आपस में जोड़कर थामे रखती है।" (1)

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और उसने धरती में पर्वत गाड़ दिए ताकि वह (धरती) तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे तथा नदियाँ और रास्ते बनाए ताकि तुम मंज़िल तक पहुँच जाओ।" (अन्-नह़्ल :15)

आधुनिक विज्ञान इस तथ्य की पुष्टि करता है कि पर्वत पृथ्वी पर समान रूप से और बिल्कुल सुनियोजित ढंग से वितरित हैं जो धरती को स्थिरता भी प्रदान करते हैं — विशेष रूप से वे पर्वत जिन्हें भूवैज्ञानिक "असममित पर्वत श्रृंखलाएँ" (Asymmetrical Mountain Ranges) कहते हैं और जो हर महाद्वीप पर पाई जाती हैं। तो भला एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं अनपढ़ था और जिसका समुदाय भी अधिकांशतः अनपढ़ था — वह इन तथ्यों को कैसे जान सकता था?

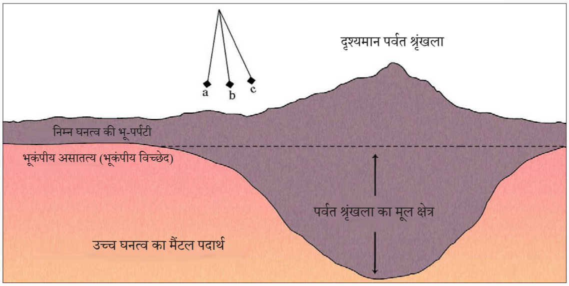

- समस्थिति (Isostacy): पर्वतीय द्रव्यमान एक लोलक (पेंडुलम) को ऊर्ध्वाधर स्थिति से विचलित तो करते हैं, किंतु उतना नहीं जितना अपेक्षित होता है। आरेख में ऊर्ध्वाधर स्थिति को (a) द्वारा दर्शाया गया है। यदि पर्वत केवल एक समान भूपर्पटी पर टिका हुआ बोझ होता तो लोलक को (c) की ओर विचलित होना चाहिए था। परंतु चूँकि पर्वत की एक ऐसी गहरी "जड़" होती है जो अपेक्षाकृत कम घनत्व वाली चट्टानों से बनी होती है, इसलिए वास्तविक विचलन केवल (b) तक ही देखा जाता है — कैटरमोल, पीटर। ग्रह पृथ्वी का निर्माण: पृथ्वी के इतिहास के पाँच अरब वर्ष। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। 2000.

(1) अर्थ, प्रेस, फ्रैंक एवं सीवर, रेमंड। अर्थ (Earth). न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. एच. फ्रीमैन (W.H. Freeman), 1982.
यह भी देखें: टारबक, एडवर्ड जे. एवं लुटजेंस, फ्रेडरिक जे. अर्थ साइंस (Earth Science)। न्यू जर्सी: प्रेंटिस हॉल (Prentice Hall), 1994.
यह भी देखें: एल-नज्जार, ज़ेड. आर. कुरआन में पर्वतों की भूवैज्ञानिक अवधारणा (The Geological Concept of Mountains in the Qur'an)। मारिफ़ाह (Marefah), 2007.
यह भी देखें: मर्फी, ब्रेंडन एवं नैंस, डेमियन। अर्थ साइंस टुडे (Earth Science Today)। पैसिफिक ग्रोव, कैलिफ़ोर्निया: ब्रूक्स/कोल (Brooks/Cole), 1998.

31 पानी और जीवन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"क्या जिन लोगों ने कुफ़्र किया यह नहीं देखा कि आकाश और धरती दोनों मिले हुए थे, फिर हमने दोनों को अलग-अलग कर दिया तथा हमने पानी से हर जीवित चीज़ को बनाया? तो क्या ये लोग ईमान नहीं लाते?" (अल्-अम्बिया:30)

आधुनिक विज्ञान इस बात की साफ़ तौर पर पुष्टि करता है कि पानी जीवन की बुनियादी इकाई है। रसायनशास्त्रियों ने साबित किया है कि पानी एक ज़रूरी और सक्रिय पदार्थ है जो शरीर के भीतर होने वाली प्रतिक्रियाओं में काम आता है। इसीलिए यह एकमात्र तरल पदार्थ है जिसकी हर जीव-जंतु को ज़रूरत होती है — चाहे वह छोटा हो या बड़ा — सूक्ष्म जीवों से लेकर धरती के सबसे विशाल प्राणियों तक सबको इसकी आवश्यकता होती है।

इंसानों, जानवरों और पेड़-पौधों के जीवन का मुख्य स्रोत पानी है। वैज्ञानिक विश्लेषण से यह सिद्ध हो चुका है कि 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के एक वयस्क मनुष्य के शरीर में लगभग 50 से 75 प्रतिशत तक पानी होता है। जहाँ तक बच्चों की बात है, उनके शरीर में पानी की मात्रा इससे भी अधिक हो सकती है। वनस्पति जगत में आम फलों और सब्ज़ियों में पानी की मात्रा इस प्रकार है: केला (74%), सफ़ेद आलू (79%), अंगूर (81%), अनानास (87%), अजवाइन का डंठल (95%) और मूली (95%)। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि समस्त जीवन किस हद तक पानी पर निर्भर है।

- इतालवी डिज़ाइनर श्री डेनिएले गास्परी ने पेशेवर और गैर-पेशेवर लोगों को एक ऐसा अखबारी विज्ञापन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जो दूसरों को पानी बचाने की प्रेरणा दे — आज के लिए भी और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी। श्री गास्परी ने अपने विज्ञापन "पानी की बर्बादी भविष्य को मार देगी" के लिए यह प्रतियोगिता जीती।

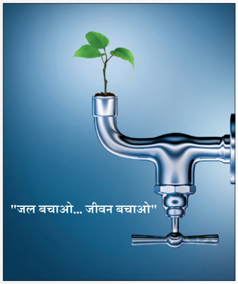

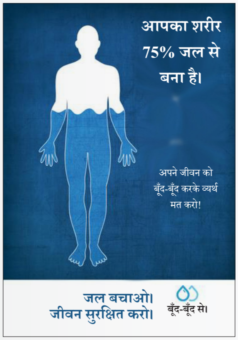

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ

- **"तथा हमने पानी से हर जीवित चीज़ को बनाया।" (अल्-अम्बिया:30)**

32 इस्लाम से दुश्मनी कौन रखते हैं?

यदि हम दुनिया के धर्मों पर नज़र डालें तो यह साफ़ नज़र आता है कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसे कुछ लोग नापसंद करते हैं। इस खुली दुश्मनी की वजह क्या है? अगर हम उन लोगों की बारीकी से पड़ताल करें जो इस्लाम के ख़िलाफ़ अपनी दुश्मनी का खुलकर इज़हार करते हैं तो हम उन्हें निम्नलिखित श्रेणियों में बाँट सकते हैं:

01 मुशरिक और जाहिल लोग — क्योंकि इस्लाम सच्चाई का धर्म है जो अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करने और उसके सामने झुकने की इजाज़त नहीं देता।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"आप कह दें के ऐ अज्ञानो! क्या तुम मुझे आदेश देते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत (वंदना) करूँ? " (अज़्-ज़ुमर:64)

02 वे लोग जिनकी फ़ितरत बिगड़ चुकी है — क्योंकि इस्लाम वह धर्म है जो इंसान की स्वाभाविक प्रकृति के अनुकूल है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तो (ऐ नबी!) आप एकाग्र होकर अपने चेहरे को इस धर्म की ओर स्थापित करें। उस फ़ितरत पर जमे रहें, जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह की रचना में कोई बदलाव नहीं हो सकता। यही सीधा धर्म है लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते।" (अर्-रूम:30)

03 ज़ालिम लोग — क्योंकि इस्लाम इंसाफ़ और न्याय का धर्म है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"निःसंदेह अल्लाह न्याय और उपकार और निकटवर्तियों को देने का आदेश देता है और अश्लीलता तथा बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।" (अन्-नह़्ल: 90)

04 फ़साद और बुराई फैलाने वाले — क्योंकि इस्लाम नेकी और इस्लाह का धर्म है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"...और वे (काफ़िर) धरती में उपद्रव का प्रयास करते रहते हैं और अल्लाह उपद्रव करने वालों से प्रेम नहीं करता।" (अल्-माइदा:64)

05

हद पार करने वाले — क्योंकि इस्लाम अमन और सलामती का धर्म है।
अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"तथा अल्लाह की राह में, उनसे युद्ध करो जो तुमसे युद्ध करते हैं और अत्याचार न करो, निःसंदेह अल्लाह अत्याचार करने वालों से प्रेम नहीं करता।" (अल्-ब-क़-रा:190)

06

कट्टरपंथी और अतिवादी लोग — क्योंकि इस्लाम एक मध्यमार्गी धर्म है।
अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"और इसी प्रकार हमने तुम्हें सबसे बेहतर उम्मत (समुदाय) बनाया; ताकि तुम लोगों पर गवाही देने वाले बनो और रसूल तुम पर गवाही देने वाला बने।" (अल्-ब-क़-रा:143)

07

नफ़्सानी ख़्वाहिशों में डूबे लोग — क्योंकि इस्लाम पाकदामनी और शील का धर्म है।
अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"और व्यभिचार के निकट भी न जाओ। निःसंदेह वह निर्लज्जता (अश्लीलता) तथा बुरी राह है।" (अल्-इस्रा:32)

08

दुनिया की हवस रखने वाले — क्योंकि इस्लाम आपसी सहयोग और दया का धर्म है जो लोगों की ज़रूरतों और कमज़ोरियों का फ़ायदा उठाने के ख़िलाफ़ है।
अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"तथा आपस में एक-दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ और न उन्हें अधिकारियों के पास ले जाओ ताकि लोगों के धन का कुछ भाग गुनाह के साथ खा जाओ हालाँकि तुम जानते हो। " (अल्-ब-क़-रा:188)

09

इंसानों को हीन समझने वाले और ख़ुद को श्रेष्ठ नस्ल समझने वाले — क्योंकि इस्लाम बराबरी का धर्म है जो हर तरह की जातिवाद और पक्षपात के ख़िलाफ़ है।
अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"ऐ मनुष्यो! हमने तुम्हें एक नर और एक मादा से पैदा किया तथा हमने तुम्हें जातियों और क़बीलों में कर दिए ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। निःसंदेह अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक सम्मान वाला वह है जो तुममें सबसे अधिक तक़्वा वाला है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है। "(अल्-हुजुरात:13)

प्रिय पाठक, इतना पढ़ने के बाद मेरा मानना है कि मीडिया में इस्लाम के बारे में जो कई ग़लतफ़हमियाँ आपने सुनी या पढ़ी होंगी, वे धीरे-धीरे टूटने लगी होंगी और इस्लाम की असली सच्चाई अब और स्पष्ट होती जा रही होगी। आइए इस्लाम की प्रमुख विशेषताएँ आपके सामने रखते हैं:

01

इस्लाम सच्चाई का धर्म है जो अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत और उसके सामने झुकने की इजाज़त नहीं देता। अल्लाह जो बुलंद और बरतर है,
अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"आप कह दें के ऐ अज्ञानो! क्या तुम मुझे आदेश देते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत (वंदना) करूँ? '" (अज़्-ज़ुमर:64)

02

इस्लाम अमन का धर्म है जो हर तरह के ज़ुल्म और तानाशाही की निंदा करता है। अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों से अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निश्चय ही अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।" (अल्-मुम्तहिना:8)

03

इस्लाम तालीम और इल्म की रोशनी फैलाने वाला धर्म है। अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"... आप कह दें कि क्या समान हैं वे लोग जो ज्ञान रखते हों तथा वे जो ज्ञान नहीं रखते? उपदेश तो वही ग्रहण करते हैं जो बुद्धि वाले हैं। "(अज़्-ज़ुमर:9)

04

इस्लाम पाकीज़गी और सफ़ाई का धर्म है।
अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"निःसंदेह अल्लाह उनसे प्रेम करता है जो बहुत तौबा करने वाले हैं और उनसे प्रेम करता है जो बहुत पाक रहने वाले हैं। "(अल्-ब-क़-रा:222)

05

इस्लाम इंसाफ़ और अच्छे बर्ताव का धर्म है।
अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"निःसंदेह अल्लाह न्याय और उपकार और निकटवर्तियों को देने का आदेश देता है और अश्लीलता तथा बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो। "(अन्-नह्ल: 90)

06

इस्लाम आसानी का धर्म है। अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, तुम्हारे साथ तंगी नहीं चाहता। "(अल्-ब-क़-रा:185)

07

इस्लाम दया का धर्म है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो लोग दूसरों पर दया करते हैं, अल्लाह उन पर दया फ़रमाता है। ज़मीन वालों पर दया करो, आसमान वाला तुम पर दया फ़रमाएगा।" (तिर्मिज़ी)

08

इस्लाम मुकम्मल इंसाफ़ का धर्म है।
अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"... तथा किसी समूह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर हरगिज़ न उभारे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़्वा (अल्लाह से डरने) के अधिक निकट है " (अल्-माइदा:8)

09

इस्लाम नेकी में सहयोग का नेवता देने वाला धर्म है।
अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"…. तथा नेकी और परहेज़गारी पर एक-दूसरे का सहयोग करो और पाप तथा अत्याचार पर एक-दूसरे की सहायता न करो।" (अल्-माइदा: 2)

10

इस्लाम किसी विशेष गिरोह, नस्ल या समुदाय का धर्म नहीं है — यह तमाम इंसानियत के लिए है।
अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"तथा हमने आपको समस्त मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला ही बनाकर भेजा है। किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।" (सबा: 28)

11

इस्लाम हर गुनाह को मिटाने वाला धर्म है।
अल्लाह जो बुलंद और बरतर है, फ़रमाता है:
"(ऐ नबी!) आप मेरे उन बंदों से कह दें जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किए हैं कि तुम अल्लाह की दया से निराश न हो। निःसंदेह अल्लाह सब पापों को क्षमा कर देता है। निःसंदेह वही तो अति क्षमाशील, अत्यंत दयावान् है।" (अज़्-ज़ुमर:53)

(1) डॉरमैन, हैरी जी. इस्लाम को समझने की ओर: इस्लाम का समकालीन बचाव और मिशनरी नीति. कोलंबिया विश्वविद्यालय. 1948.

33 इस्लाम की विशिष्ट विशेषताएँ और विशेषाधिकार

चूँकि इस्लाम अंतिम धर्म है, इसलिए इसमें कुछ ऐसी विशिष्ट विशेषताएँ और विशेषाधिकार हैं जो इसे हर युग और हर स्थान के लिए उपयुक्त बनाती हैं:

- यह मनुष्य पर अवतरित होने वाला अंतिम ईश्वरीय धर्म है।
- इस्लाम पूर्ववर्ती ईश्वरीय ग्रंथों और संदेशों को मान्यता देता है। दूसरी ओर, यहूदी हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को नहीं मानते और ईसाई हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ को नहीं मानते; जबकि मुसलमान हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और समस्त पैग़ंबरों को मानते हैं — अल्लाह उन सभी का उल्लेख उच्च करे।
- इस्लाम में मनुष्य अपने प्रभु से हर मामले और हर परिस्थिति में बिना किसी माध्यम के सीधा संबंध रखता है।
- इस्लाम एकमात्र ऐसा धर्म है जिसे न विकृत किया गया है और न ही बदला गया है।

हैरी जी. डॉर्मन ने कहा:

"[क़ुरआन] अल्लाह का शाब्दिक प्रकाशन है जिसे जिब्रील ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ को प्रत्येक अक्षर की दृष्टि से परिपूर्ण रूप में सुनाया। यह एक सदा विद्यमान चमत्कार है जो स्वयं अपनी और अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ की गवाही देता है। इसकी चमत्कारिकता आंशिक रूप से इसकी शैली में निहित है — जो इतनी परिपूर्ण और उत्कृष्ट है कि न कोई मनुष्य और न कोई जिन्न इसके सबसे संक्षिप्त अध्याय की बराबरी का एक भी अध्याय रच सकता है — और आंशिक रूप से इसकी शिक्षाओं, भविष्यवाणियों और उन अद्भुत रूप से सटीक सूचनाओं में जो अनपढ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ स्वयं अपने बल पर कभी एकत्र नहीं कर सकते थे।" (1)

- इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक, दोनों पहलुओं को समेटे हुए है। यह एक मुसलमान के जीवन की छोटी-से-छोटी बात को भी नज़रअंदाज़ नहीं करता। पैग़म्बर ﷺ के एक साथी सलमान से कहा गया: "क्या तुम्हारे नबी ने तुम्हें हर बात सिखाई है, यहाँ तक कि शौच करने का तरीक़ा भी?" सलमान ने उत्तर दिया: "बिल्कुल। उन्होंने हमें शौच या पेशाब करते समय क़िबले की दिशा की ओर मुँह करने से मना किया, दाहिने हाथ से सफ़ाई करने से मना किया, तीन पत्थरों से कम उपयोग करने से मना किया और हड्डी या गोबर से सफ़ाई करने से भी मना किया।" (मुस्लिम)

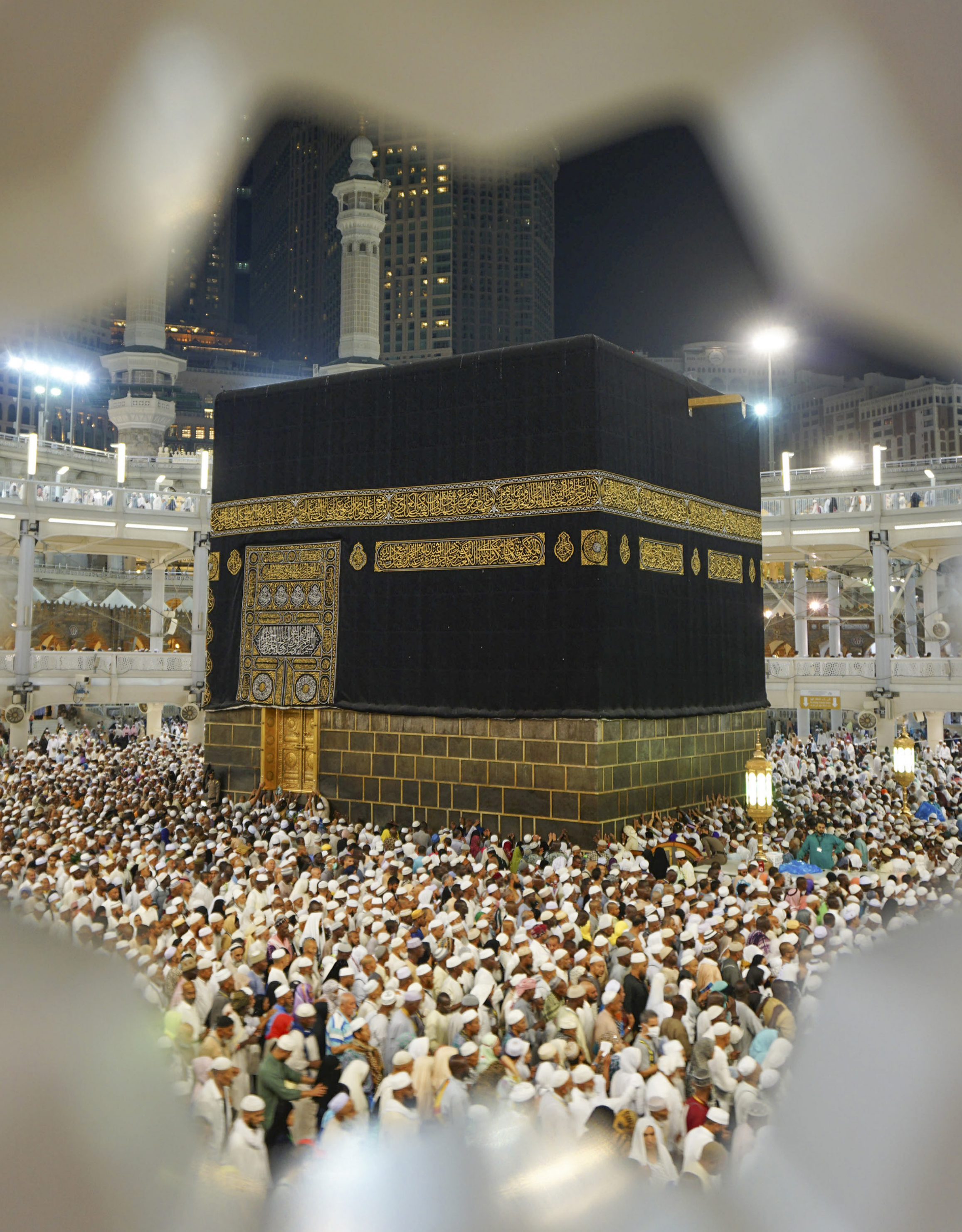

सरोजिनी नायडू [1] ने कहा:

"न्याय की भावना इस्लाम के सबसे अद्भुत आदर्शों में से एक है क्योंकि जब मैं क़ुरआन पढ़ती हूँ तो मुझे उसमें जीवन के वे गतिशील सिद्धांत मिलते हैं जो रहस्यवादी नहीं बल्कि व्यावहारिक नैतिकता पर आधारित हैं — दैनिक आचरण के लिए उपयुक्त और समस्त विश्व के अनुकूल हैं।"

(1) सरोजिनी नायडू, इस्लाम। रेडियो इस्लाम। 1 दिसंबर 2013 को प्राप्त।

- इस्लाम मनुष्य की शारीरिक और आध्यात्मिक, दोनों आवश्यकताओं को संतुलन के साथ पूरा करता है। यह इस बात की अनुमति नहीं देता कि एक पहलू को दूसरे पर प्राथमिकता दी जाए।

प्रिंस चार्ल्स [2] ने कहा:

"इस्लाम आज हमें दुनिया को समझने और उसमें जीने का एक ऐसा तरीक़ा सिखा सकता है जिसे खोकर ईसाइयत स्वयं दरिद्र हो गई है। इस्लाम मनुष्य और प्रकृति को, धर्म और विज्ञान को, मन और पदार्थ को अलग करने से इनकार करता है।" [3]

- इस्लाम मानव बुद्धि अथवा स्वाभाविक प्रकृति से कोई विरोध नहीं रखता।
- इस्लाम समस्त मानवजाति का धर्म है — चाहे उनकी शिक्षा, काल अथवा स्थान कुछ भी हो। यह पूर्ववर्ती धर्मों से भिन्न है जो किसी विशेष समय में किसी विशेष जाति के लिए भेजे गए थे। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति यहूदी बनना चाहे तो उसे यहूदी जन्म लेना होगा। ईसा मसीह ने नए नियम में अपने उद्देश्य के विषय में कहा था: "मुझे केवल इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।" जबकि इस्लाम एक सार्वभौमिक धर्म है जो सभी लोगों के लिए, सभी कालों में, उनकी जाति अथवा भाषा का भेद किए बिना, उचित एवं उपयुक्त है।

(2) प्रिंस चार्ल्स.

(3) बेमैन, हेनरी. द सीक्रेट ऑफ़ इस्लाम: लव एंड लॉ इन द रिलिजन ऑफ़ एथिक्स. बर्कले, सीए: नॉर्थ अटलांटिक बुक्स. 2003.

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"तथा हमने आपको समस्त मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला ही बनाकर भेजा है। किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।" (सबा: 28)

इन्हीं आयतों में ईश्वर ने अपने पैग़म्बर ﷺ को खुलकर इस्लाम की ओर बुलावा देने का आदेश दिया, अतः उन्होंने अपनी जाति को एकमात्र ईश्वर की उपासना करने और समस्त असत्य देवताओं को त्यागने का आह्वान किया। उनकी जाति ने उन्हें कष्ट पहुँचाया, फिर भी वे दृढ़ और दयालु बने रहे। उन्होंने अपने समय के राजाओं को पत्र लिखे और उन्हें इस्लाम स्वीकार करने का निमंत्रण दिया। जिन्हें उन्होंने पत्र लिखे, उनमें रोम का सम्राट, फारस का सम्राट और हबशा का राजा सम्मिलित थे। यदि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ का संदेश सार्वभौमिक न होता तो वे अरब के निकटवर्ती विभिन्न राज्यों के शासकों को इस्लाम अपनाने का निमंत्रण कभी न देते। इस कदम से एक से अधिक ऐसे शत्रुओं की ओर से मोर्चे खुलने की संभावना थी जो साधन-सम्पन्नता और संख्याबल, दोनों में कहीं अधिक थे। वे ऐसा साहस भला क्यों करते यदि यह ईश्वर का वह दिव्य संदेश न होता जिसे समस्त मानवजाति तक पहुँचाने का उन्हें आदेश था!

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया: "यह मामला (इस्लाम) दिन और रात की भाँति प्रकट हो जाएगा। हर नगर और वन-प्रांत का व्यक्ति इस धर्म को जानेगा — या तो सम्मान के द्वारा, या अपमान के द्वारा। वह सम्मान जिससे इस्लाम को गौरव प्राप्त होगा और वह अपमान जिससे ईश्वर अविश्वास को लज्जित करेगा।" (अहमद)

34 उपसंहार

ईश्वरीय धर्म, इस्लाम, हर दृष्टि से परिपूर्ण है। यह इस संसार में एक सार्थक जीवन जीने का और परलोक में एक शाश्वत एवं आनंदमय जीवन पाने का विधान है। आप मुसलमानों के आचरण में कुछ कमियाँ अथवा दोष पा सकते हैं, परंतु यह जान लीजिए कि इस्लाम का इन कमियों से कोई संबंध नहीं है। यह उनकी धर्म के प्रति अज्ञानता अथवा उनके विश्वास की दुर्बलता के कारण हो सकता है जो उन्हें वह करने की ओर ले जाता है जो आप देखते हैं। अतः इस्लाम का मूल्यांकन उसके कुछ अनुयायियों के आचरण के आधार पर मत कीजिए। इस लघु प्रकाशन को सत्य की खोज आरंभ करने की एक कुंजी के रूप में देखा जाना चाहिए। इस्लाम का गहन अध्ययन करने के लिए:

01 हर प्रकार के पूर्वाग्रह को मन से निकाल दीजिए।

02 सत्य तक पहुँचने की सच्ची अभिलाषा रखिए और केवल दोष व त्रुटियाँ ढूँढना अपना लक्ष्य मत बनाइए।

03 स्वतंत्र रूप से विचार कीजिए और बिना सोचे-समझे दूसरों का अनुसरण मत कीजिए।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:
"और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो (क़ुरआन) उतारा है, उसका अनुसरण करो तो कहते हैं कि हम तो उसी रास्ते पर चलेंगे, जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। अगरचे शैतान उन्हें धधकती आग की यातना की ओर बुला रहा हो तो भी?" (लुक़्मान:21)

अधिक जानकारी के लिए:

- www.islamland.com
- www.islamhouse.com
- www.thekeytoislam.com
- www.edialogue.org
- www.chatislamonline.org
- www.islamreligion.com
- www.islamicbooks4u.net
- www.islamic-message.net
- www.islamic-invitation.com
- www.mp3quran.net
- www.muslim-library.com
- www.newmuslimguide.com
- www.islamqa.info/en
- www.r-islam.com
- www.rasoulAllah.net
- www.knowingAllah.com
- www.newmuslimacademy.org
- www.islamweb.com

35 कोई व्यक्ति मुसलमान कैसे बनता है?

मुसलमान बनने के लिए किसी विशेष धार्मिक रीति-रिवाज़ या रस्म को अदा करने की ज़रूरत नहीं है — न किसी विशेष जगह पर और न ही किसी की मौजूदगी में। इसलिए कि इस्लाम में इंसान का अपने रब से सीधा रिश्ता होता है — बीच में कोई बिचौलिया नहीं होता है।

बस यह विश्वास करना और यह घोषणा करना कि "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं" — इतने से ही कोई मुसलमान बन जाता है। जब कोई यह कलिमा सच्चे दिल से कहता है तो उसकी ज़िंदगी के उस वक़्त तक के सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है:

"परंतु जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और अच्छे काम किए तो ये लोग हैं जिनके बुरे कामों को अल्लाह नेकियों में बदल देगा और अल्लाह हमेशा बहुत बख़्शने वाला, अत्यंत दयावान् है।" (अल्-फ़ुर्क़ान:70)

इस्लाम क़बूल करने के बाद आप एक नई ज़िंदगी की शुरुआत करते हैं — एक ऐसे मुसलमान के रूप में जो अल्लाह की मर्ज़ी के आगे सर झुकाता है।

जो ग़ैर-मुस्लिम इस्लाम को स्वीकार करते हैं, उन्हें दोहरा अज्र (पुरस्कार) दिया जाएगा — एक अपने पिछले पैग़ंबरों पर ईमान रखने के बदले में और दूसरा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ﷺ पर ईमान लाने के बदले में।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान लाते हैं। तथा जब यह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे कहते हैं: हम इस पर ईमान लाए। निश्चय ही यही हमारे रब की ओर से सत्य है। निःसंदेह हम इससे पहले मुसलमान (आज्ञाकारी) थे। ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रतिफल दोहरा दिया जाएगा, इसके बदले कि उन्होंने सब्र किया और वे भलाई के साथ बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। "(अल्-क़सस:52-54)

इसके अलावा, इस्लाम क़बूल करने से पहले के किए हुए सभी पाप को अल्लाह मिटा देता है।

सल्लल्लाहु अलैबह व सल्लम ﷺ ने फ़रमाया:

"इस्लाम उन तमाम पापों को मिटा देता है जो उससे पहले हुए हों।" (मुस्लिम)

ईश्वर के दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

यह पुस्तक पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन पर शांति हो) के जीवन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। यह हमें पैगंबर के उदात्त चरित्र, उनके सादे और विनम्र जीवन तथा उनके घर में परिवार के साथ, उनके साथियों के साथ और समाज के सभी लोगों के साथ उनके व्यवहार से परिचित कराती है। यह बताती है कि उन्होंने ईश्वर द्वारा सौंपे गए कार्य को पूरा करने के लिए किस प्रकार अथक प्रयास किया। साथ ही यह इस बात पर भी विचार करती है कि उन्होंने अपने शत्रुओं के साथ कैसा व्यवहार किया। सभी के प्रति उन्होंने जो असाधारण उदारता दिखाई, उसे भी इसमें समाहित किया गया है, साथ ही साथ, अपने संदेश के प्रचार-प्रसार की उनकी सरल किंतु अत्यंत प्रभावशाली पद्धति क्या थी, इसका भी उल्लेख है।

इस्लाम को समझने की कुंजी

यह पुस्तक स्पष्ट करती है कि इस्लाम जीवन जीने की एक ऐसी संहिता है जो जीवन के हर पहलू को समेटती है। इसमें उपासना के ऐसे कार्य शामिल हैं जो नैतिकता को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करने और लोगों में अच्छे गुणों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ताकि वे सदा सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित रहें। पुस्तक अनेक उदाहरण उद्धृत करती है और उस महत्व की चर्चा करती है जो इस्लाम ज्ञान को देता है। इसमें हाल ही में हुई कई वैज्ञानिक खोजों का उल्लेख है जिनकी ओर क़ुरआन ने आज से 14 शताब्दी पहले ही संकेत कर दिया था।

इस्लाम का संदेश

इस्लाम का संदेश' पाठक को यह स्मरण दिलाने से आरंभ होती है कि इस्लाम, उसकी उपासना-पद्धति, लोगों के आपसी व्यवहार को नियंत्रित करने वाले नियम और उसकी समस्त शिक्षाएँ ठीक वैसी ही हैं जैसी पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन पर शांति हो) ने सिखाई थीं — इनमें कोई परिवर्तन या फेरबदल नहीं किया गया है, भले ही कुछ मुसलमान स्वयं बदल गए हों। यह पुस्तक उन अनेक अधिकारों पर प्रकाश डालती है और उनकी विवेचना करती है जिन्हें इस्लाम अत्यधिक महत्व देता है।

इस्लाम शांति का धर्म है

'इस्लाम शांति का धर्म है' — यह पुस्तक पूर्ण स्पष्टता के साथ यह सिद्ध करती है कि इस्लाम शांति का धर्म है और इस्लाम का प्रसार विश्व भर में शांति का प्रसार है। मुसलमानों को सदा अपने वायदों और प्रतिज्ञाओं के प्रति सच्चा रहना चाहिए और दूसरों के साथ न्याय और करुणा के साथ पेश आना चाहिए।

इस्लाम में सरलता और सहिष्णुता

यह पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि इस्लाम में कठोरता की कोई गुंजाइश नहीं है और हर काम को आसान बनाना इस्लामी आस्था के हर पहलू की एक सामान्य विशेषता है। यह ईश्वर का प्रकट किया हुआ ऐसा धर्म है जिसे भिन्न-भिन्न कमज़ोरियों, भावनाओं और क्षमताओं वाले लोग भी अपने जीवन में उतार सकते हैं। इस्लामी कानून इन सभी बातों का ध्यान रखता है और मानव स्वभाव को संबोधित करते हुए उसे आकर्षित करता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: ".. और उसने धर्म के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी।" (अल्-हज्ज: 78)

इस्लाम में मानवाधिकार

इस्लाम में मानवाधिकारों का वर्णन क़ुरआन और पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन पर शांति हो) की शिक्षाओं में मिलता है।

इनका उद्देश्य यह है कि मनुष्य करुणा और गरिमा से परिपूर्ण जीवन जीए ताकि वह सभी उत्तम गुण अर्जित करे और दूसरों के साथ सर्वोत्तम तरीके से व्यवहार करे। यह पुस्तक स्वतंत्रता के विभिन्न पहलुओं के संबंध में प्रायः व्यक्त की जाने वाली भ्रांतियों को स्पष्ट करती है और आलोचनाओं का शांत एवं वस्तुनिष्ठ तरीके से जवाब देती है।

बिलाल अल-हबशी

यह पुस्तक बिलाल इब्न रबाह का इतिहास बताती है जो एक पूर्व दास थे और बाद में पैगंबर के प्रमुख साथियों में से एक बने। यह पुस्तक नस्लीय भेदभाव के प्रति इस्लाम के दृष्टिकोण को विस्तार से समझाती है और उन महत्वपूर्ण घटनाओं को उजागर करती है जो दर्शाती हैं कि पैगंबर ने उन अनेक लोगों की देखभाल की जिन्हें सताया गया था — उन्होंने उन्हें संरक्षण दिया और मुस्लिम समुदाय में उनका उचित स्थान सुनिश्चित किया।

प्रसन्नता का मार्ग

'प्रसन्नता का मार्ग' यह बताती है कि इस्लाम अपने अनुयायियों को जो जीवन-पद्धति प्रदान करता है वह ईश्वरीय है और उसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि लोग इस जीवन में भी और आने वाले जीवन में भी वास्तविक सुख का अनुभव करें। इस्लाम सच्ची और चिरस्थायी प्रसन्नता की अवधारणा स्थापित करता है जो मुसलमानों को ईश्वर की आज्ञाकारिता और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करके उच्चतम आदर्शों की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है।

इस्लाम में महिलाएँ

यह पुस्तक इस्लाम से पूर्व महिलाओं की स्थिति और अनेक संस्कृतियों में उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार और अपमान पर विचार करती है। यह बताती है कि इस्लाम ने इस सारे अन्याय को किस प्रकार समाप्त किया, महिलाओं के अधिकार स्थापित किए और उन्हें उनका उचित एवं सम्मानजनक स्थान प्रदान किया।

इस्लाम में प्रेम और रोमांस

यह पुस्तक उस महान महत्व को उजागर करती है जो इस्लाम प्रेम को देता है। यह दर्शाती है कि ईश्वर का प्रेम सर्वश्रेष्ठ और सबसे पवित्र प्रेम है। जब यह प्रेम किसी व्यक्ति के हृदय में गहराई से बस जाता है तो यह उसके आचरण को सही दिशा देता है, उसकी भावनाओं और संवेदनाओं को ऊँचा उठाता है और स्वार्थ को दूर करता है। जो व्यक्ति सच्चे मन से ईश्वर से प्रेम करता है वह समस्त सृष्टि के प्रति प्रेम और करुणा की भावना रखता है।

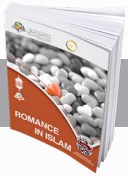

इस्लाम का यौन-संबंधी दृष्टिकोण

यह पुस्तक यौन विषय के प्रति इस्लामी दृष्टिकोण और यौन इच्छा को उचित एवं लाभकारी तरीके से संतुष्ट करने के ढंग पर चर्चा करती है। यौन इच्छा की पूर्ति का उचित मार्ग विवाह के भीतर है और इस्लाम के अनुसार विवाह व्यक्ति के लिए आत्मपूर्णता प्राप्त करने हेतु एक अनिवार्य आवश्यकता है। समाज के लिए, विवाह ही प्रगति, विकास और स्थिरता का मार्ग है।

कुरआन में ईसा

पहले यह चर्चा करने के बाद कि मनुष्यों को ईश्वर का संदेश पैगम्बरों के माध्यम से प्राप्त करने की आवश्यकता क्यों है, यह पुस्तक मरियम के पुत्र ईसा (उन पर शांति हो) की जीवन-गाथा प्रस्तुत करती है। यह कथा उनके जन्म से भी पहले से आरंभ होती है फिर उनके संदेश और उन विरोधों की चर्चा करती है जिन्हें उन्हें सहना पड़ा। पुस्तक ईसा (अलैहिस्सलाम) के बारे में क़ुरआनी विवरण भी प्रस्तुत करती है जिससे यह स्पष्ट होता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के निकट उनका स्थान अत्यंत उच्च और सम्माननीय है।

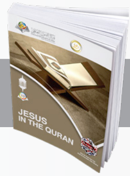

शुभ सूचना (Glad Tidings)

शुभ सूचना इस्लाम के स्वभाव और उसकी प्रकृति को स्पष्ट करती है तथा उन लोगों की भूल को उजागर करती है जो संदिग्ध स्रोतों से प्राप्त जानकारी पर निर्भर रहते हैं। यह पुस्तक इस्लाम की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित करती है और उन सभी लोगों को यह बताती है जो इस्लाम को अपनाते हैं कि ईश्वर उनके सभी पिछले पाप और भूलें मिटा देता है। जैसा कि पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने स्पष्ट किया है: "इस्लाम पिछले सभी पापों को मिटा देता है।"

इस्लाम में मेरे पहले कदम

यह पुस्तक गैर-मुस्लिम पाठकों को बताती है कि इस्लाम कैसे अपनाया जाए और यह दर्शाती है कि इसके लिए कोई विशेष कठिन प्रयास की आवश्यकता नहीं है। नए मुसलमानों के लिए यह पुस्तक इस्लाम के मूलभूत तत्वों को समझाती है और पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के चरित्र, उनके गुणों तथा उनके द्वारा मानवजाति को दिए गए संदेश का परिचय कराती है। इसके आगे यह उन विभिन्न इबादतों की चर्चा करती है जो मुसलमानों पर अनिवार्य हैं, साथ ही उनके उद्देश्यों और महत्त्व को भी स्पष्ट करती है।

पवित्रता (The Purity)

इस्लाम में पवित्रता की अवधारणा केवल व्यक्तिगत और शारीरिक स्वच्छता तक सीमित नहीं है; इसमें पाप और ईश्वर की सभी प्रकार की अवज्ञा से स्वयं को शुद्ध करना भी शामिल है। यह पुस्तक शारीरिक शुद्धि के विस्तृत नियमों पर प्रकाश डालती है, जिनमें वुज़ू (अभिषेक), ग़ुस्ल (पूर्ण स्नान), नजासत (अशुद्धता) को दूर करना, तयम्मुम (शुष्क अभिषेक) आदि सम्मिलित हैं।

हिस्न अल-मुमिन (Hisn Al-Mu'min)

हिस्न अल-मुमिन उन कारणों की चर्चा करती है जिनकी वजह से लोगों को जीवन में असफलताओं और विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। यह इस बात पर प्रकाश डालती है कि कोई व्यक्ति ईश्वर की कृपाओं और नेमतों की रक्षा और संरक्षण को कैसे सुनिश्चित कर सकता है, साथ ही हानि से बचाव और व्यक्तिगत दुःख-विपदाओं के प्रभाव को कम करने के उपाय भी बताती है। पुस्तक ऐसी विपत्तियों के प्रभाव से स्वयं को सुरक्षित करने के तरीके और साधन सिखाती है, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है — हर समय ईश्वर का स्मरण और उसकी महिमा का गुणगान करना। यह पुस्तक इस स्मरण और महिमागान के सर्वोत्तम रूपों को भी विस्तारपूर्वक समझाती है।

सृष्टि का आरंभ और अंत (The Beginning and The End)

ब्रह्मांड की रचना, अस्तित्व और विकास से जुड़े प्रश्न युगों-युगों से समाजों में उठाए जाते रहे हैं। फिर भी इस्लाम ने अपने आरंभिक काल से ही इन प्रश्नों का अत्यंत सीधे और स्पष्ट ढंग से उत्तर दिया। यह पुस्तक बताती है कि सृष्टि का परम उद्देश्य यही है कि सभी प्राणी अपने आप को ईश्वर के सामने समर्पित करें और केवल उसी की आराधना करें। ब्रह्मांड में जीवन के सभी पहलू अनिवार्यतः मृत्यु पर समाप्त होते हैं और फिर पुनरुत्थान के दिन (क़यामत) सभी को दोबारा जीवित किया जाएगा, जहाँ उन्हें उनके कर्मों का उचित प्रतिफल मिलेगा।

हर धार्मिक नवाचार (Every Religious Innovation)

यह पुस्तक इस्लाम के मूल और उसकी वास्तविक शिक्षाओं से भटकाव के विभिन्न प्रकारों को परिभाषित करती और समझाती है। यह प्रकट करती है कि इस भटकाव के मुसलमानों और उनके जीवन पर क्या नकारात्मक परिणाम पड़ते हैं और यह भी कि यह भटकाव गैर-मुस्लिमों को इस्लाम की एक विकृत छवि दिखाने का कारण बनता है। अंत में, पुस्तक मुसलमानों की उस भूमिका का वर्णन करती है जिसके अंतर्गत उन्हें अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार हर प्रकार के भटकाव को दूर करना चाहिए।

مركز أصول
Osoul Center
www.osoulcenter.com

चैट करने के लिए यहाँ जाएँ:
www.chatanddecide.com

अधिक विवरण के लिए यहाँ जाएँ:
www.GuideToIslam.com

IslamHouse.com

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة

هاتف: ٩٦٦١١٤٤٥٤٩٠٠+ فاكس: ٩٦٦١١٤٩٧٠١٢٦+ ص ب: ٢٩٤٦٥ الرياض: ١١٤٥٧

P.O.BOX 29465 RIYADH 11457 TEL: +966 11 4454900 FAX: +966 11 4970126

OFFICERABWAH

इस्लाम को समझने की कुंजी

यह पुस्तक आरंभ से ही यह स्पष्ट कर देती है कि कुरआन विज्ञान की कोई पाठ्यपुस्तक नहीं है। तथापि, इस्लाम विज्ञान और वैज्ञानिकों का सम्मान करता है और इस्लामी समाज में उन्हें उच्च दर्जा देता है; साथ ही अपने अनुयायियों को यह निर्देश देता है कि वे वैज्ञानिकों को वह सम्मान प्रदान करें जिसके वे वास्तव में योग्य हैं। लेखक अपने पाठकों को यह स्पष्ट करत है कि उनका उद्देश्य कुरआन को आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से जोड़ना नहीं है। वह केवल उन कुरआनी आयतों का उल्लेख करता है जो उन खोजों की ओर संकेत करती हैं जिन तक विज्ञान हमारे वर्तमान समय में पहुँचा है।

पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो जीवन का एक संपूर्ण तरीका निर्धारित करता है। यह इस बात को रेखांकित करती है कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो एकमात्र सच्चे ईश्वर की उपासना का आह्वान करके मानव को वास्तविक स्वतंत्रता प्रदान करता है। यह आक्रामकता और अन्याय की निंदा करता है। यह ज्ञान की खोज और अर्जन को प्रोत्साहित करता है। यह पवित्रता, स्वच्छता, न्याय, श्रेष्ठता, सहनशीलता, करुणा, दया, परस्पर सहायता और समस्त मानवजाति के लिए पूर्ण न्याय का समर्थन करता है। यह पूरी मानवजाति के लिए है — यह मनुष्यों के बीच कोई भेदभाव नहीं करता। ईश्वर ने इस्लाम को समस्त संसार के प्रति अपनी दया के रूप में प्रदान किया है।

हमें आशा है कि पाठकगण इस पुस्तक को पढ़कर आनंद और लाभ प्राप्त करेंगे और यह पुस्तक — ओसूल ग्लोबल सेंटर के अन्य प्रकाशनों के साथ मिलकर — इस्लाम के बारे में उनकी जिज्ञासाओं को सरल, सुलभ और संपूर्ण रूप से संतुष्ट करेगी।

مركز أصول
OsoulCenter

यह किताब डाउनलोड करने हेतु
यहाँ जाएँ:

OSOUL STORE

9786039093633